नई सोच, नई पहल

पुष्पांजली टुडे

राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

वर्ष : 09 अंक : 09 | सितम्बर 2023 | मूल्य: ₹ 30 | पृष्ठ : 44

भारतीय वैज्ञानिकों ने किया कमाल

चंद्रमा पर भारतोदय

चंद्रमा पर भारतोदय **भारत** के चंद्रयान-3 ने चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंड किया। भारत के अंतरिक्ष मिशन के लिए यह एक अद्वितीय उपलब्धि है, खासकर ऐसे देश के लिए जिसका अंतरिक्ष एजेंसी इसरो टाइट बजट पर काम करती है। भारत ने नई तकनीक से इस अभियान को अंजाम दिया। जिसकी कामयाबी के बाद भारत दुनिया में अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में एक मजबूत अंतर्राष्ट्रीय साझेदार के रूप में उभरेगा। निस्संदेह, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान यानी इसरो के प्रमुख एस. सोमनाथ व उनकी टीम बधाई की पात्र है। उनके अथक प्रयासों ने देश को गर्व करने का एक विशिष्ट दिन दिया। विश्वास किया जाना चाहिए कि इस अभियान से चंद्रमा के बारे में ऐसी जानकारियां सामने आएंगी जिनसे अब तक दुनिया अनभिज्ञ थी। निस्संदेह, इस अभियान की सफलता में नासा, आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन के ग्राउंड स्टेशंस का भी सहयोग मिला। जो देश की अंतर्राष्ट्रीय स्वीकार्यता को दर्शाता है। इसी कड़ी में देश को सूर्य मिशन आदित्य एल-1 के सफल प्रक्षेपण का इंतजार है, जो धरती से पंद्रह लाख किलोमीटर की दूरी पर सूर्य के रहस्यों को खोजने का प्रयास करेगा। बहरहाल, ऐसी ऐतिहासिक घटनाएं राष्ट्र के जीवन में नई चेतना का संचार करने में सहायक होती हैं। किसी भी राष्ट्र के जीवन में ये पल अविस्मरणीय होते हैं। निस्संदेह, इसरो के वैज्ञानिकों की मेधा का शंखनाद नयी वैज्ञानिक उपलब्धियों व शोध का मार्ग भी प्रशस्त करेगा। बेशक, अब हम खुली आंख से चांद से आगे के सपने देखने का दावा कर सकते हैं। सफलता के इस मौके पर हमें देश के महान वैज्ञानिकों होमी भाभा और विक्रम साराभाई की दूरदर्शिता का स्मरण करना चाहिए, जिनकी कोशिशों से हम दुनिया में विज्ञान व शोध की नई इबारत लिख पा रहे हैं। निश्चित रूप से यह नीति-नियंताओं के प्रोत्साहन और वैज्ञानिकों की मेधा व अथक प्रयासों से संभव हो पाया है।

अब तक चांद पर अमेरिका, रूस और चीन ही पहुँचे थे। भारत चांद पर पंहुचने वाला चौथा देश और चांद के साउथ पोल पर उतरन वाला पहला देश बन गया। इस उपलब्धि से स्पेस मार्किट में भारत के लिए संभावनाएं पहले से अधिक बढ़ गई हैं। भारत ने स्पेस में अमेरिका सहित कई बड़े देशों का एकाधिकार तोड़ा है। पूरी दुनिया में सैटेलाइट के माध्यम से टेलीविज़न प्रसारण, मौसम की भविष्यवाणी और दूरसंचार का क्षेत्र बहुत तेज गति से बढ़ रहा है क्योंकि ये सभी सुविधाएं उपग्रहों के माध्यम से संचालित होती हैं, इसलिए संचार उपग्रहों को अंतरिक्ष में स्थापित करने की मांग में बढ़ोतरी हो रही है। इस क्षेत्र में चीन, रूस, जापान आदि देश प्रतिस्पर्धा में हैं, लेकिन यह बाजार इतनी तेजी से बढ़ रहा है कि यह मांग उनके सहारे पूरी नहीं की जा सकती। ऐसे में चंद्रयान-3 की कम बजट में सफल लैंडिंग के बाद व्यवसायिक तौर पर भारत के लिए संभावनाएं पहले से अधिक बढ़ गयी हैं। कम लागत और सफलता की गारंटी इसरो की सबसे बड़ी ताकत बन गयी है। भारत अब 200 अरब डालर के अंतरिक्ष बाजार में एक महत्वपूर्ण देश बनकर उभरा है। चांद और मंगल अभियान सहित अपने 100 से ज्यादा अंतरिक्ष अभियान पूरे करके इसरो पहले ही इतिहास रच चुका है। भविष्य में अंतरिक्ष में प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी क्योंकि यह अरबों डालर की मार्किट है। कुछ साल पहले तक दूसरे देशों की स्पेस कंपनी की मदद से भारत अपने उपग्रह छोड़ता था पर अब वह ग्राहक की बजाय साझीदार की भूमिका में पहुंच गया है। अब तो वह दूसरे देशों की सेटलाइट लांच कर रहा है। इसी तरह भारत अंतरिक्ष क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हमारे यान अंतरिक्ष यात्रियों को चांद, मंगल या अन्य ग्रहों की सैर करा सकेंगे। इसरो के मून मिशन, मंगल अभियान, स्वदेशी स्पेस शटल की कामयाबी और अब चंद्रयान-3 की सफलता के बाद इसरो के लिए संभावनाओं के नये दरवाजे खुल जाएंगे, जिससे भारत का निश्चित रूप से स्पेस में वर्चस्व पहले से अधिक बढ़ जाएगा।

भरत सिंह चौहान
संपादक

भारत ने नई तकनीक से इस अभियान को अंजाम दिया। जिसकी कामयाबी के बाद भारत दुनिया में अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में एक मजबूत अंतर्राष्ट्रीय साझेदार के रूप में उभरेगा। निस्संदेह, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान यानी इसरो के प्रमुख एस. सोमनाथ व उनकी टीम बधाई की पात्र है। उनके अथक प्रयासों ने देश को गर्व करने का एक विशिष्ट दिन दिया।

पुष्पांजली टुडे

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष 09, अंक 09 ,सितंबर 2023

मूल्य 30 रु, पृष्ठ 44

संरक्षक	बहादुर सिंह चौहान
संपादक	भरत सिंह चौहान
प्रबंध संपादक	शैलेश सिंह कुशवाह
उप प्रबंध संपादक	आर. एन. शर्मा
उपसंपादक	अर्पित गुप्ता, महेन्द्र शर्मा, पुष्पेन्द्र तोमर (मप्र) छोटे सिंह भदौरिया, रघुवरदयाल गोहिया प्रदीप नागेन्द्र सिकरवार
कानूनी सलाहकार	एड. आर. के. जोशी
एडिटिंग	इमरान गौरी
राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी	आर एस रजक

रश्मि चौहान, न्यूज ऐंकर
स्टेट हेड/ब्यूरो चीफ

पंकज त्रिपाठी	मध्यप्रदेश
अश्वनी अवस्थी	छत्तीसगढ़
मनोज कुमार	बिहार
विवेक कुमार तिवारी	रीवा संभाग
शिवम तिवारी	रीवा
राजेश कुमार तिवारी	सतना
गौरीशंकर कुशवाह	सागर संभाग
रीतेश कुमार अवस्थी	दमोह
केशव प्रसाद शर्मा	चम्बल संभाग
रूपसिंह	कानपुर मण्डल उप्र
नारायण लाल	बेंगलोर कर्नाटक
खंगारराम चौधरी	हैदराबाद तेलंगाना
नैनाराम सिरवी	पाली राजस्थान
मुन्ना खान	खरगोन
सोनू कुमार माथुर	एटा
हरिनिवास दुबे	मथुरा
मोहन मांझी (मोनू बाथम)	गोहद, भिण्ड
राजेश कुमार नरवरिया	शिवपुरी
नील कुमार	पाटन गुजरात

रिपोर्टर

संतोष सिंह भदौरिया	मध्यप्रदेश
सादिक मिर्ज़ा	ऑल इंडिया
पहलवान सिंह	मालनपुर
अमित शर्मा	ग्वालियर
हरिओम परिहार	शिवपुरी
प्रतीश अग्रवाल	गुना
अभिषेक कुशवाह	सिरोंज,विदिशा
सुनील सिंह तोमर	अम्बाह

कार्यालय

जी. एस. प्लाजा, गोले का मंदिर ग्वालियर मध्य प्रदेश

हेल्पलाईन: 0751-4050784, 8269307478

www.pushpanjalitoday.com, Email-pushpanjalitoday@gmail.com

इस अंक में

सितंबर 2023

03

नीरज ने किया कमाल.... 11

वादे घोषणाएं... 14

पहाड़ों पर बारिश का कहर.... 12

चुनावों से पहले.. 19

रामायण के... 25

शिक्षक दिवस.... 36

सिनेमा 39

स्वत्वाधिकारी एवं प्रकाशक भरत सिंह चौहान के लिये मुद्रक संदीप कुमार सिंह द्वारा नेहा ग्राफ़िक्स ,32, ललितपुर कॉलोनी, लश्कर, ग्वालियर से मुद्रित तथा जी एस प्लाजा, गोले का मंदिर, ग्वालियर म.प्र. से प्रकाशित। सम्पादक भरत सिंह चौहान। (समाचारों के चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार) दूरभाष 0751-4050784, 8269307478 (किसी भी विवाद के लिए न्यायालय क्षेत्र ग्वालियर मान्य होगा)

मोदी सरकार का मास्टर स्ट्रोक, कैसे बदलेगी देश की सियासत

देश में लोकसभा चुनाव की सरगर्मियों में बीच मोदी सरकार ने मास्टर स्ट्रोक चलते हुए 5 दिन के लिए संसद का विशेष सत्र बुलाया है। ऐसी संभावना जताई जा रही है कि इस दौरान केंद्र सरकार एक देश एक चुनाव के विचार पर आगे बढ़ सकती है, हालांकि सरकार के लिए इसे लागू करना बेहद कठिन हो सकता है। मौजूदा राजनीतिक व्यवस्था के मुताबिक, देश में हर साल ही चुनाव आयोग को किसी न किसी राज्य में विधानसभा चुनाव कराने पड़ते हैं और इसके अलावा हर पांच साल में आम चुनाव भी होते हैं, जिसमें देश का करोड़ों रुपए खर्च हो जाता है। ऐसे में मोदी सरकार वन नेशन वन इलेक्शन व्यवस्था के तहत देश में लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ कराने पर जोर दे रही है, ताकि चुनाव में होने वाली फिजूलखर्ची बचाई जा सकती हैं और समय की भी बचत हो।

देश में वन नेशन, वन इलेक्शन व्यस्था लागू करने की दिखा में केंद्र सरकार ने बड़ा कदम बढ़ा दिया है। सरकार ने पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में कमेटी का गठन कर दिया है। 18 से 22 सितंबर तक संसद का विशेष सत्र बुलाया गया है। इस दौरान वन नेशन, वन इलेक्शन बिल लाया जा सकता है। एक देश एक चुनाव को लागू करना मोदी सरकार के लिए आसान नहीं हैं, क्योंकि इसके लिए सरकार को कई अहम संविधान संशोधन कराने होगी। केंद्र सरकार को अनुच्छेद-83, अनुच्छेद-85, अनुच्छेद-172, अनुच्छेद-174 और अनुच्छेद 356 में संशोधन करना होगा। इस संशोधनों के बाद ही राज्यों की विधानसभाओं को भंग करके चुनाव कराया जा सकता है और एक निर्धारित अवधि के बाद राज्यों में चुनाव कराया जा सकता है। गौरतलब है कि अनुच्छेद 368 के तहत संविधान संशोधन विधेयक को लोकसभा और राज्यसभा से दो तिहाई बहुमत के साथ पारित कराना होता है और इसके बाद 50 प्रतिशत राज्यों की विधानसभा से भी पास कराना अनिवार्य होता है।

इन राज्यों में राह आसान, जानें कहां फंसेगा पेंच

देश में फिलहाल उत्तर प्रदेश, गुजरात, उत्तराखंड और मध्य प्रदेश सहित कुल 11 राज्यों में भाजपा की सरकार है, वहीं 4 राज्यों में भाजपा के साथ गठबंधन सरकार चल रही है, जिनमें महाराष्ट्र, नागालैंड, पुडुचेरी और सिक्किम शामिल हैं। इस दौरान 3 राज्यों की सरकारों पर संकट खड़ा होता है, जहां भाजपा ने समर्थन दिया है।

देश में बार-बार नहीं लागू होगी आदर्श आचार संहिता

नीतिगत फैसले लेने में राज्य व केंद्र सरकार को दिक्कत नहीं आएगी

देश में चुनावी खर्च में भारी कमी आएगी। सरकारी खजाने का बोझ कम होगा। चुनाव में काले धन व भ्रष्टाचार पर रोक लगेगी सरकारी कर्मचारियों और सुरक्षाबलों को बार-बार चुनावी ड्यूटी में नहीं लगाना पड़ेगा। इससे पहले 2018 में इस मुद्दे पर हलचल मची थी। तब कानून दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकसभा तथा विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराने की बात दोहराई थी। भाजपा अध्?यक्ष अमित शाह

एक देश एक चुनाव

एक देश-एक चुनाव के लिए 8 सदस्यीय समिति का गठन, अमित शाह, अधीर रंजन चौधरी सहित 8 सदस्य शामिल

एक देश, एक चुनाव के लिए केंद्र सरकार ने 8 सदस्यीय समिति का गठन किया है. 8 सदस्यीय समिति में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी और गुलाब नबी आजाद भी शामिल हैं. बता दें कि पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द को समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है. दरअसल, देश में अगले साल लोकसभा चुनाव होने हैं. लेकिन केंद्र सरकार एक देश, एक चुनाव को लेकर 8 सदस्यीय समिति का गठन किया है. इस समिति का चेयरमैन पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद को बनाया गया है. इसके अलावा इस समिति में सदस्य के तौर पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, कांग्रेस सांसद अधीर रंजन चौधरी और गुलाम नबी आजाद को शामिल किया गया है.

ने 13 अगस्त 2018 को विधि आयोग को एक पत्र लिखा था, जिसमें एक देश, एक मतदान की मांग की गई थी। शाह ने कहा था कि पूरे साल राज्यों में चुनावों के चलते, विकास कार्यों को प्रभावित किया जाता है। भूपेंद्र यादव के नेतृत्व में बीजेपी प्रतिनिधिमंडल ने एक राष्ट्र, एक मतदान मुद्दे पर चर्चा करने के लिए कानून आयोग से मुलाकात की थी। इस प्रतिनिधिमंडल में मुख्तार अब्बास नकवी, विनय सहस्त्रबुद्धे भी शामिल थे। तब एक देश एक चुनाव की अवधारणा को कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस, वामपंथी दल, आम आदमी पार्टी ने खारिज कर दिया था। इस बारे में नीति आयोग का मानना है कि 'एक देश, एक चुनाव' का विचार देश के फायदे में है।

दरअसल, एक साथ चुनाव कराने के लिए पहले कुछ विधानसभाओं के कार्यकाल में कटौती करनी होगी या कुछ के कार्यकाल में विस्तार करना होगा। नीति आयोग कह चुका था कि इसे लागू करने के लिए संविधान विशेषज्ञों, थिंक टैंक, सरकारी अधिकारियों और विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों का एक विशेष समूह गठित किया जाए। कई जानकार मानते हैं कि यह विचार अच्छा है, मगर हमारे संविधान निर्माताओं ने अलग-अलग तरह की पद्धति की सरकारों का विस्तार से और अच्छी तरह से अध्ययन किया था। फिर अपने देश के लिए कई तरह की पार्टियों की व्यवस्था को स्वीकार किया था। यह हमारे जैसे अलग-अलग धर्मों, मान्यताओं, भाषाओं वाले देश के लिए सही व्यवस्था है और एक देश एक चुनाव एक पार्टी शासन को ओर बढ़ाने का एक कदम है।

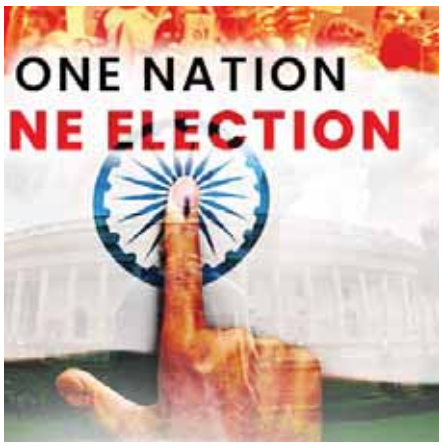

विकास पर असर और बढ़ता चुनावी खर्च

चुनाव की तारीखें घोषित होते ही आदर्श आचार संहिता लागू कर दी जाती है। इसकी वजह से सरकारें नए विकास कार्यक्रमों की दिशा में आगे नहीं बढ़ पाती हैं। इससे अस्थिरता बढ़ती है और देश का आर्थिक विकास भी प्रभावित होता है। कई स्तरों पर सरकार की मौजूदगी के कारण देश में लगभग प्रत्येक वर्ष चुनाव कराए जाते हैं। इसमें काफी मात्रा में धन और समय दोनों की बर्बादी होती है। बताते चलें कि साल वर्ष 2009 में लोकसभा चुनाव पर 1,100 करोड़ रुपए खर्च हुए और वर्ष 2014 में यह खर्च बढ़कर 4,000 करोड़ रुपए हो गया।

शिक्षा काम में व्यवधान

बार-बार चुनाव कराने से शिक्षा क्षेत्र के साथ-साथ अन्य सार्वजनिक क्षेत्रों के काम-काज प्रभावित होते हैं। क्योंकि चुनाव के काम में बड़ी संख्या में शिक्षकों सहित एक करोड़ से अधिक सरकारी कर्मचारियों को लगाया जाता है।लगातार जारी चुनावी रैलियों के कारण यातायात से संबंधित समस्याएं होती हैं। साथ ही साथ मानव संसाधन की उत्पादकता में भी कमी आती है। सांसदों और विधायकों का कार्यकाल एक ही होने के कारण उनके बीच समन्वय बढ़ेगा।

इसलिए हो रहा है एक साथ चुनाव कराने का विरोध

दरअसल, संविधान में कोई प्रावधान नहीं है जो यह कहता हो कि लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराए जा सकते हैं। हालांकि, भारत में वर्ष 1967-68 तक लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के चुनाव एक साथ होते थे क्योंकि लोकसभा तथा राज्य विधानसभाओं का एक ही समय पर विघटित होती थीं। चुनाव आयोग के मुताबिक एक साथ चुनाव करने के लिए संविधान संशोधन की भी आवश्यकता होगी। बार-बार होने वाले चुनाव सरकार के लिए एक नियंत्रण एवं संतुलन की व्यवस्था बनाते हैं। विधानसभा चुनाव स्थानीय मुद्दों पर लड़ा जाता है, जबकि लोकसभा चुनाव राष्ट्रीय मुद्दों पर। ऐसे में दोनों चुनाव एक साथ कराने पर जनता के मन में भ्रम हो सकता है। चुनावों के दौरान बड़ी संख्या में लोगों को वैकल्पिक रोजगार मिलता है, एक साथ चुनाव न कराए जाने से बेरोजगारी बढ़ेगी।

भारतीय वैज्ञानिकों ने किया कमाल

चाँद - सूरज

भारत की मुट्ठी में

चंद्र अभियान की ऐतिहासिक एवं अविस्मरणीय सफलता के बाद भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) एक नया इतिहास गढ़ने एवं एक और मैदान फतेह करने को तत्पर है चांद के दक्षिणी ध्रुव पर चंद्रयान-3 को सफलतापूर्वक उतारने के बाद भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने एक और इतिहास रच दिया। राष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसी ने आदित्य-एल1 मिशन की सफल लॉन्चिंग की। इस मिशन का उद्देश्य सूर्य का अध्ययन करना है। अंतरिक्ष यान को पृथ्वी से लगभग 15 लाख किलोमीटर दूर स्थित लैग्रेंजियन बिंदु 1 (एल1) पर भेजा गया है। 'आदित्य-एल 1' अंतरिक्ष यान को सौर कोरोना (सूर्य की सबसे बाहरी परतों) के दूरस्थ अवलोकन और एल-1 (सूर्य-पृथ्वी लैग्रेंजियन बिंदु) पर सौर हवा के यथास्थिति अवलोकन के लिए बनाया गया है, इस मिशन की मदद से स्पेस में मौसम की मोबिलिटी, सूरज के तापमान, सोलर स्टॉर्म, एमिशन और अल्ट्रावॉयलेट रेज के धरती और ओजोन लेयर पर पड़ने वाले प्रभावों की स्टडी की जा सकेगी, जिससे मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों को सकारात्मक मोड़ देने में सुविधा रहेगी। यह भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम में एक और मील का पत्थर होगा। इस प्रक्षेपण के बाद अमेरिका, जर्मनी और यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी के बाद भारत सूर्य के पास उपग्रह भेजने वाला चौथा देश बन जाएगा। आदित्य एल-1 को पृथ्वी-सूर्य प्रणाली की ऑर्बिट के पांच बिंदुओं में से एक लैग्रेंज-1 में स्थापित किया गया है। यहां सूर्य पर ग्रहण के दौरान भी नजर रखी जा सकती है। यह पॉइंट पृथ्वी से 15 लाख किमी. दूर है। निश्चित ही चंद्रयान-3 के 3.84 लाख किमी. के सफर के मुकाबले आदित्य एल-1 का सफर कहीं ज्यादा चुनौती एवं संघर्षपूर्ण होगा।

पूरे विश्व में चंद्रयान तीन की सफलता की गूँज

चंद्रयान तीन की सफलता की गूंज पूरे विश्व में सुनाई देर ही है। पूरे देश में दीवाली जैसा जश्न मनाया गया, किन्तु इस ऐतिहासिक सफलता के भी पीछे भारतीय अंतरीक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) का ऐतिहासिक संघर्ष छिपा हुआ है। क्या आप कल्पना कर सकते हैं जिसकी उपलिब्धयों का लोहा पूरी दुनिया मान रही है, उसके वैज्ञानिक कभी साइकिल और बैलगाड़ियों पर रॉकेट को लादकर प्रक्षेपण स्थल तक ले जाते थे। संघर्ष का ऐसा दौर इसरो के वैज्ञानिकों ने देखा जो आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देता रहेगा। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद से ही रूस और अमेरिका स्पेस का सिकंदर बनने के लिए

बेताब हो गए थे। दोनों देश एक दूसरे को पीछे छोड़ने के लिए पैसा पानी की तरह बहा रहे थे। सबसे पहले 1957 में रूस ने अंतरिक्ष में कदम रखा। इसके बाद अमेरिका भी रूस के पीछे-पीछे चांद पर पहंच गया। 1969 में अमेरिका ने अपोलो-11 मिशन पर 2 लाख करोड़ खर्च किए थे। जबकि मंगल तक जाने पर भारत को प्रति किलोमीटर 7 रुपए का खर्च आया था। आम तौर पर ऑटो का किराया इससे ज्यादा होता है, मंगलयान की लागत सिर्फ 400 करोड़ थी। चंद्रयान-3 की लागत मिशन इंपासिबल 7 की लागत का सिर्फ एक चौथाई यानि 25 फीसदी है।

भारत की अंतरीक्ष की दौड़ में आज जो सुनहरा वर्तमान देखने को मिल रहा है, उसकी संघर्ष की कहानी एक मिसाल है। अंतरीक्ष की इस दौड़ में भारत की विजय पताका लहरा रहे भारत के वैज्ञानिकों ने ऐसे दिन भी देखे हैं जब केरल के मछुआरों के गांव थुंबा की एक चर्च के आगे खाली जगह से रॉकेट लॉन्च किया गया था। चर्च के बिशप के घर को प्रयोगशाला बनाया गया था। इससे भी ज्यादा रोमांचकारी बात यह है कि भारत ने पहले रॉकेट के लिए नारियल के पेड़ों को लांचिंग पैड बनाया था। हमारे वैज्ञानिकों के पास अपना दफ्तर नहीं था, वे कैथोलिक चर्च सेंट मैरी मुख्य कार्यालय में बैठकर सारी प्लानिंग करते थे। अब पूरे भारत में इसरो के 13 सेंटर हैं। भारत की स्पेस की दुनिया में हिंदुस्तान का सफर केरल के तट थुंबा से हुआ था। भारत ने 21 नवंबर 1963 को अपने पहले साउंडिंग रॉकेट को लॉन्च किया था। उस वक्त दुनिया के किसी देश ने कल्पना भी नहीं की थी कि भारत एक दिन अंतरिक्ष में ऐसी उड़ान भरेगा जो सबके लिए मिसाल बन जाएगी। उस समय देश में ट्रांसपोर्टेशन के पर्याप्त साधन तक नहीं थे। जिसकी वजह से रॉकेट के हिस्से को साइकिल की मदद से लॉन्चिंग की जगह पर पहुंचाया गया था। पहले रॉकेट के कुछ हिस्सों

को साइकिल पर भी ले जाया गया था।

एक समय ऐसा भी था जब संसाधनों की कमी की वजह से रॉकेटों को बैलगाड़ी से भी ले जाया गया था। 1981 में इसरो को कम्युनिकेशन सैटेलाइट के लिए एक टेस्ट करना था और पेलोड ले जाने के लिए बैलगाड़ी की मदद लेनी पड़ी थी। इसके अलावा भारत के पहले रॉकेट के लांच के समय भारतीय वैज्ञानिक हर रोज तिरुअनंतपुरम से बसों में आते थे और रेलवे स्टेशन से दोपहर का खाना खाते थे। केरल के थुंबा से पहला रॉकेट लॉन्च होने के 6 साल बाद डॉ. विक्रम साराभाई ने 15 अगस्त 1969 को इसरो की स्थापना की थी। भारत में अंतरिक्ष अनुसंधान के लिए सर्वप्रथम 1962 में तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू और उनके करीबी सहयोगी और वैज्ञानिक विक्रम साराभाई के प्रयासों से भारतीय राष्ट्रीय समिति की स्थापना की गई थी, जिसके अध्यक्ष विक्रम साराभाई थे। बाद में सन् 1969

में डॉ. विक्रम साराभाई ने स्वतंत्रता दिवस के दिन भारतीय राष्ट्रीय समिति के स्थान पर भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन की स्थापना की थी। डॉ. विक्रम साराभाई को भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का जनक भी कहा जाता है। 1971 में श्रीहरिकोटा में स्पेस सेंटर बना था, जिसे आज सतीश धवन अंतरिक्ष सेंटर के नाम से जाना जाता है। अब यहीं से सभी सैटेलाइट्स को लॉन्च किया जाता है। 19 अप्रैल 1975 को इसरो ने अपना

पहला सैटेलाइट आर्यभट्ट लॉन्च किया। 1977 में सैटेलाइट टेलीकम्युनिकेशन एक्सपेरिमेंट प्रोजेक्ट शुरू हुआ, जो टीवी को गांव-गांव तक लेकर गया। इन्हीं मुश्किलों में हमारे वैज्ञानिकों ने पहला स्वदेशी उपग्रह एसएलवी-3 लांच किया था। यह 18 जुलाई 1980 को लांच किया गया था। दिलचस्प बात यह है कि इस प्रोजेक्ट के डायरेक्टर पूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर अब्दुल कलाम थे। इस लांचर के माध्यम से रोहिणी उपग्रह को कक्षा में स्थापित किया गया। 1981 में इसरो का पहला कम्युनिकेशन सैटेलाइट लॉन्च हुआ। जब कारगिल युद्ध में दुश्मन की लोकेशन का पता लगाने के लिए अमेरिका के जीपीएस की जरूरत पड़ी थी तब अमेरिका ने मदद से साफ इंकार कर दिया और तब हिंदुस्तान ने ठाना था कि वे अब अपना जीपीएस बनाकर रहेगा। आज भारत उन चुनिन्दा देशों में शामिल है, जिनके पास अपना खुद का नेविगेशन सिस्टम है। इसी तरह एक दौर ऐसा भी था जब भारत को रूस ने अमेरिका के दबाव में आकर क्रायोजेनिक रॉकेट टेक्नोलॉजी देने से मनाकर दिया था। लेकिन भारत के वैज्ञानिकों ने ना सिर्फ स्वदेशी तकनीकि विकसित की बल्कि आज इसकी मदद से एक साथ दर्जनों सैटेलाइट अंतरिक्ष में भेज रहा है। इस लॉन्चिंग के साथ भारत ग्लोबल कॉमर्शियल मार्केट में एक मजबूत प्लेयर बनकर उभरा है।

जहां उतरा चंद्रयान-3 उस जगह शिव शक्ति के नाम से जाना जाएगा

चंद्रयान 3 की सफलता की बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इसरो कमांड सेंटर के मीटिंग हॉल पहुंचे. यहां उन्होंने वैज्ञानिकों से मुलाकात की. पीएम ने इसरो प्रमुख को गले लगाकर पीठ थपथपाई. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने घोषणा की है कि जिस स्थान पर चंद्रयान-3 का मून लैंडर उतरा, उस स्थान को शिवशक्ति के नाम से जाना जाएगा. पीएम मोदी ने कहा- 23 अगस्त का वो दिन... वो एक एक सेकेंड बार बार घूम रहा है. टच डाउन कन्फर्म हुआ. जिस तरह इसरो सेंटर से लेकर देशभर में लोग उछल उठे, वो दृश्य कौन भूल सकता है. कुछ स्मृतियां अमर हो जाती है. वो पल अमर हो गया. वो पल इस सदी के लिए प्रेरणादायी हो गया है. एयरपोर्ट के बाहर पीएम मोदी ने लगभग 10 मिनट तक लोगों को संबोधित किया. इस दौरान उन्होंने कहा कि अपनी यात्रा के दौरान ही मैंने सोच लिया था कि देश पहुंचकर सबसे पहले वैज्ञानिकों से मुलाकात करूंगा. इस दौरान पीएम मोदी ने जय जवान, जय किसान का नारा लगाया और इसमें जय विज्ञान जय अनुसंधान का भी नारा जोड़ दिया.

चंद्रमा पर ऑक्सीजन और सल्फर

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने चंद्रयान-3 मिशन से जुड़ी नई जानकारी दी है. भारत के मून मिशन ने चंद्रमा पर ऑक्सीजन और सल्फर की खोज की है. अंतरिक्ष एजेंसी ने बताया कि रोवर 'प्रज्ञान' का चांद की सतह पर मिशन जारी है. इसरो ने ट्वीट करके बताया कि वहां लगातार वैज्ञानिक प्रयोग चल रहे हैं और इसी कड़ी में 'रोवर' प्रज्ञान ने बड़ी खोज की है. इसरो ने 'एक्स' पर पोस्ट किया, 'रोवर पर लगा उपकरण एलआईबीएस पहली बार इन-सीटू माप के माध्यम से, दक्षिणी ध्रुव के पास चंद्र सतह में सल्फर (एस) की उपस्थिति की स्पष्ट रूप से पुष्टि करता है. जैसा कि अपेक्षित था,और का भी पता चला है.'

सूरज के तूफानी राज खुलेंगे, संचार तकनीक की बाधा दूर करने में रामबाण साबित होगा आदित्य एल1

साढ़े छह सौ करोड़ रुपये की लागत पर तैयार हुए चंद्रयान 3 मिशन की सफलता के बाद अब आदित्य एल1 मिशन की बारी है। इसकी कामयाबी से दुनिया को सूरज के वे तूफानी राज मालूम चलेंगे, जिनसे अभी पर्दा उठना बाकी है। आदित्य एल1 मिशन विभिन्न क्षेत्रों में भारत के लिए नई राहें प्रशस्त करेगा। इस कामयाबी से अंतरिक्ष, तकनीकी क्षेत्र और सोलर एनर्जी के मामले में भारत कई नए आयाम स्थापित कर सकता है। अमेरिका के अनेक सौर मिशन लांच हुए हैं। उनसे बहुत सी जानकारियां दुनिया के सामने आई हैं। हालांकि बहुत से तथ्य अभी राज ही बने हुए हैं। सूरज पर तूफान आते हैं। इस वजह से हमारा संचार सिस्टम प्रभावित होता है। आदित्य एल1 मिशन हमें बताएगा कि वहां पर कितने समय में, कितनी तीव्रता से और कितने क्षेत्र में तूफान आता है। इसे हमें अपने संचार सिस्टम को दुरुस्त रखने और मौसम की सटीक भविष्यवाणी करने में मदद मिलेगी। तूफान की तीव्रता को देखते हुए अंतरिक्ष यान भेजने के समय में बदलाव किया जा सकता है। सोलर स्ट्रॉम से संचार तकनीक को कम से कम नुकसान हो, यह तैयारी पहले से की जा सकेगी।

बता दें कि पड़ोसी मुल्क चीन भी सोलर मिशन लॉन्च कर चुका है। चीन द्वारा भेजा गया मिशन धरती के ऑर्बिट में है, जबकि इसरो का आदित्य एल1 मिशन उससे बाहर होगा। आदित्य एल1 मिशन एक प्रतिशत दूरी तक ही जाएगा। मतलब, सूरज 15 करोड़ किलोमीटर दूर है तो यह मिशन 15 लाख किलोमीटर दूरी तक जाएगा। सूरज के तापमान से उपकरणों को नुकसान न पहुंचे, इसके लिए स्पेशल अलॉय इस्तेमाल किया गया है। सूरज पर कई तरह के कण और ऊर्जा रहती है। वह ऊर्जा कई तरह की तरंगों के रूप में निकलती है। पराबैंगनी किरणों को सूर्य से निकलने वाली ऊर्जा का ही एक प्रकार माना जाता है। सूरज के बाहरी हिस्से का तापमान ज्यादा होता है तो वहां कण वाष्पित होते रहते हैं।

सूरज पर इंटर प्लेनेटरी स्पेस कितना है?

मारा मिशन आयरन, गैस, हीलियम व निऑन आदि के बारे में जानकारी देगा।%आदित्य एल1 मिशन का

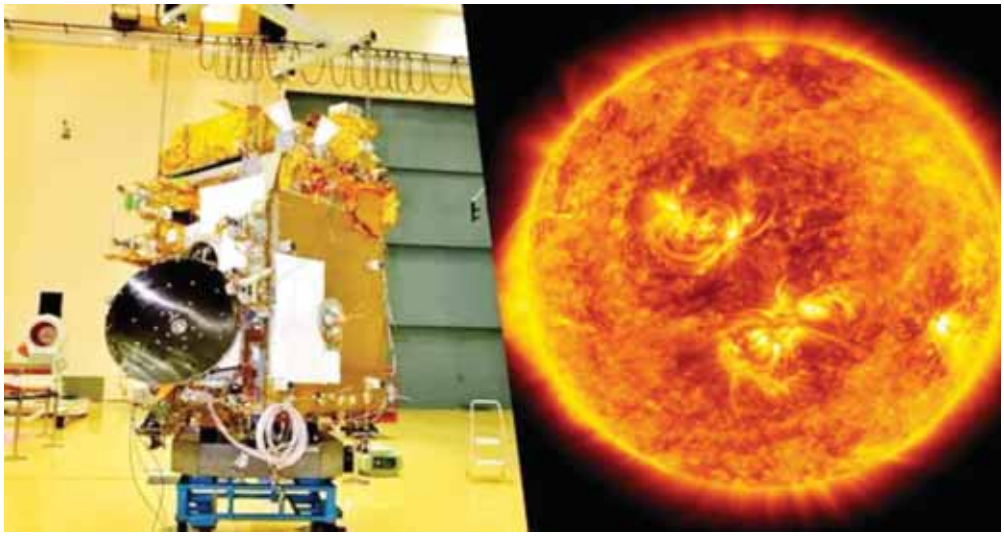

मकसद, कणों का अध्ययन करना है। इसके साथ ही एक्सरे की जानकारी जुटाई जाएगी। कम ऊर्जा और ज्यादा ऊर्जा के एक्सरे होते हैं। इनके मद्देनजर पैरा बैंगिनी तरंगों का अध्ययन किया जाएगा। फिल्टर से मालूम होगा कि सूरज से पैरा बैंगिनी तरंगें, कितनी मात्रा में आती हैं और किस क्षेत्र से आती हैं। सूरज पर इंटर प्लेनेटरी स्पेस कितना है। ग्रहों के बीच में जो चुंबकीय क्षेत्र है, वह कितना है और कहां कहां पर है। इसके लिए आदित्य एल1 मिशन में एक मैगनेटो मीटर लगाया गया है। सौर पवन के जो कण आते हैं, उनमें क्या कौन से तत्व शामिल होते हैं, ये पता लगाया जाएगा। आदित्य मिशन, सोलर कोरोनोग्राफ के जरिए सूर्य के सबसे भारी भाग का अध्ययन करेगा।

आदित्य एल1 मिशन से अंतरिक्ष के मौसम का पता चलेगा। जब कोई भी सेटेलाइट भेजा जाता है तो उस पर सूरज के चुंबकीय क्षेत्र का असर होता है। चूंकि पृथ्वी का अपना चुंबकीय क्षेत्र है और सूरज का अपना चुंबकीय क्षेत्र होता है। ऐसे में ये दोनों क्षेत्र मिल जाते हैं। इस वजह से सूरज के अध्ययन की स्पष्ट तस्वीर सामने नहीं आती। यही कारण है कि आदित्य एल1 मिशन को धरती के ऑर्बिट से बाहर भेजा जा रहा है। जब ऐसा होगा, तभी दोनों के चुंबकीय क्षेत्र का अध्ययन हो सकेगा। इस मिशन में इसरो के सहयोगी संगठन भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (पीआरएल) अहमदाबाद, विक्रम साराभाई स्पेस सेंटर, यूआर राव सैटेलाइट सेंटर (यूआरएससी), इंटर-यूनिवर्सिटी सेंटर फॉर एस्ट्रोनॉमी एंड एस्ट्रोफिजिक्स (आईयूसीएए) और भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान सहित कई दूसरे सेंटरों का योगदान है।

विपक्ष VS NDA

तमाम कशमकश और अनिश्चितताओं के बीच भी विपक्षी दलों की बैठक तय समय पर हुई, यही विपक्षी एकता की उम्मीद लगाए बैठे लोगों को कम से कम इस राउंड में आश्वस्त करने के लिए काफी है। गठबंधन को 'इंडिया' नाम दिया गया है। भाजपा के नेतृत्व में गठबंधन का नाम 'एनडीए' है ही। इसका मतलब हुआ कि अगला आम चुनाव एनडीए बनाम इंडिया का होगा। विपक्षी गठबंधन बहुत सोच समझकर गठबंधन का नाम इंडिया रखा होगा। बहरबाल 2024 के लोकसभा चुनावों के मद्देनजर विपक्षी दलों की एकता सुनिश्चित करने के मकसद से बुलाई गई यह दूसरी बैठक है। पहली बैठक पटना में हुई थी, जिसके बाद विपक्षी दलों को जोड़ने की कोशिश में अहम भूमिका निभा रहे दिग्गज नेता शरद पवार की पार्टी दो फाड़ हो गई। उस पार्टी के लगभग सभी बड़े नेता महाराष्ट्र के सत्तारूढ़ गठबंधन का हिस्सा बन गए। इनमें प्रफुल्ल पटेल जैसे नेता भी हैं, जो न केवल शरद पवार के सबसे करीबी लोगों में गिने जाते रहे हैं बल्कि विपक्षी दलों की पटना बैठक में भी शामिल हुए थे।

निश्चित रूप से यह घटना विपक्षी एकता की प्रक्रिया के लिए बहुत बड़ा झटका थी। उसके बाद यह चर्चा भी तेज हो गई कि अब बिहार में नीतीश कुमार या लालू प्रसाद की पार्टी में भी ऐसी ही फूट पड़ने वाली है। जाहिर है, विपक्षी दलों को सबसे पहले तो इस तरह की किसी भी संभावित फूट को रोकना था। फिर यह भी पक्का करना था कि विपक्षी एकता की प्रक्रिया इससे प्रभावित होती नजर न आए। विपक्षी खेमा इन दोनों मोर्चों पर अब तक सफल होता दिख रहा है। हालांकि, बेंगलुरु बैठक से ठीक पहले जिस तरह से अजित पवार की अगुआई में सारे बागी नेता शरद पवार से मिलने पहुंच गए, उससे यह कन्फ्यूजन और बढ़ गया कि कहीं अंदर से दोनों ग्रुप मिले हुए तो नहीं हैं। चूंकि महाराष्ट्र विधानमंडल की बैठक भी शुरू हो गई है, इसलिए शरद पवार को अपनी ऊर्जा राज्य में लगाने की जरूरत थी। स्वाभाविक ही उनका बेंगलुरु बैठक में शामिल होना और कठिन हो गया। अच्छी बात रही कि शरद पवार 18 तारीख को ही सही, लेकिन बैठक में आ रहे हैं। सोनिया गांधी की बेंगलुरु बैठक में मौजूदगी से भी विपक्षी एकता की प्रक्रिया को मजबूती मिलेगी। आखिरी पलों में कांग्रेस ने जिस तरह से दिल्ली में नौकरशाही पर कंट्रोल से जुड़े अध्यादेश के विरोध की स्पष्ट घोषणा कर दी और उसके बाद आम आदमी पार्टी बैठक में शामिल होने को तैयार हो गई, वह भी एक पॉजिटिव डिवेलपमेंट है। लेकिन हैं ये सारे संकेत ही। वाकई कुछ ठोस कदम उठाए जा सके या नहीं और विपक्षी एकता की गाड़ी सचमुच कुछ आगे बढ़ी या नहीं इसका पता बैठक समाप्त होने के बाद ही चलेगा। प्रस्तावित गठबंधन पर किस हद तक सहमति बन पाती है, कोई एक संयोजक तय हो पाता है या नहीं, न्यूनतम साझा कार्यक्रम के सवाल पर बात कुछ आगे बढ़ पाती है या नहीं- ये कुछ अहम सवाल हैं जिनके जवाबों से यह तय होगा कि विपक्षी एकता के सवाल पर इन दलों में, दरअसल कितनी गंभीरता है।

सीट बंटवारे का सवाल

विपक्षी दलों के इंडिया गठबंधन के नेताओं की मुंबई में हुई दो दिवसीय बैठक से निकले नतीजों पर गौर करें तो साफ दिखता है कि लोकसभा चुनाव समय से पहले होने की अटकलों को गठबंधन नेतृत्व ने गंभीरता से लिया है।

जो तीन प्रस्ताव इस बैठक में स्वीकार किए गए, उनमें भी इसकी छाप नजर आती है। पहले प्रस्ताव में ही यह साफ कर दिया गया है कि अगला लोकसभा चुनाव जहां तक संभव होगा, साथ लड़ेंगे। यह घोषणा एक तरह से इस आशंका या सवाल को समाप्त कर देती है कि पता नहीं ये दल एक साथ आ पाएंगे या नहीं। कहा जा सकता है कि वे साथ आ चुके हैं। हालांकि इन दलों के बीच हितों का जो सहज टकराव था, वह दूर नहीं हुआ है। इसीलिए सिर्फ लोकसभा चुनावों की बात की गई। इसमें विधानसभा चुनावों को शामिल नहीं किया गया है। यही नहीं, 'जहां तक संभव होगा' का प्रयोग बताता है कि सही अर्थों में सहमति बनाने के लिए अभी काफी मशक्कत करने की जरूरत पड़ेगी और ऐसी भी सीटें होंगी ही, जहां तमाम मशक्कतों के बावजूद सहमति नहीं बन पाएगी। ऐसे ही दूसरे प्रस्ताव में कहा गया है कि ढ्ढ.हृ.ष्ठ.द्ध. के सदस्य जल्द से जल्द सार्वजनिक रैली आयोजित करना शुरू कर देंगे। तीसरे प्रस्ताव में कम्युनिकेशन और मीडिया स्ट्रेटेजी का जिक्र करते हुए स्पष्ट किया गया कि यह 'जुड़ेगा भारत, जीतेगा इंडिया' पर आधारित होगा। जाहिर है, ये तीनों प्रस्ताव जल्द से जल्द चुनाव प्रचार के मोड में आने का ही ऐलान हैं। 13 सदस्यों की जो को-ऑर्डिनेशन कमिटी घोषित की गई है, वह भी काफी महत्वपूर्ण है। इसमें सभी प्रमुख दलों को जगह दी गई है और यह इस गठबंधन की सर्वोच्च निर्णायक इकाई के रूप में काम करेगी। इस घोषणा के जरिए यह भी सुनिश्चित करने की कोशिश हुई है कि सीटों के बंटवारे को लेकर जो भी मुद्दे उठने वाले हैं वे उठें तो जरूर, लेकिन सार्वजनिक तौर पर अनिश्चितता या असमंजस का कारण न बनें। इसकी संभावना कम इसलिए हो गई है क्योंकि को-ऑर्डिनेशन कमिटी के रूप में इन मुद्दों को निपटाने का एक मैकेनिज्म अस्तित्व में ला दिया गया है। हालांकि अलग-अलग विचारधारा, नीति, अजेंडा और हितों वाले दलों का साथ चलना कितना मुश्किल है, यह इससे भी पता चलता है कि पहले से घोषणा हो जाने के बावजूद संगठन का लोगो जारी नहीं किया जा सका। संयोजक को लेकर भी किसी नाम की घोषणा नहीं हो सकी। वैसे मानकर चलना चाहिए कि आगे ऐसी और भी असहमतियां सामने आएंगी। हो सकता है मतभेद मनमुटाव का भी रूप लेते दिखें। लेकिन ये दल मुंबई में की गई घोषणाओं पर कायम रहें तो इतना जरूर है कि सत्तारूढ़ पक्ष के लिए साझा चुनौती ये बन चुके हैं। भारतीय लोकतंत्र के मौजूदा मोड़ पर विपक्ष के स्पेस की राजनीति के लिए यह छोटी बात नहीं।

देर आए, दुरुस्त आए

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने आखिर अपनी नई कार्यसमिति गठित कर ली। इसके साथ ही जो यह शिकायत की जा रही थी कि पार्टी ने नया अध्यक्ष तो चुना, लेकिन उसे अपनी टीम नहीं दे पा रही, वह दूर हो गई। नई कार्यसमिति का यह गठन ऐसे समय किया गया है, जब आम चुनाव करीब आ चुके हैं। इससे पहले कई राज्यों के विधानसभा चुनाव भी होने हैं, जो राजनीतिक तौर पर अहम माने जा रहे हैं। इस

संदर्भ में नई कार्यसमिति पर गौर किया जाए तो साफ हो जाता है कि बतौर पार्टी अध्यक्ष खरगे ने तीन अहम संदेश इसके जरिए दिए हैं। पहली बात यह कि अध्यक्ष के निर्वाचन से पहले पार्टी में जो मतभेद और अस्थिरता का आलम था, वह दूर हो चुका है। पार्टी अब अपने नए अध्यक्ष की अगुआई में एकजुट है। यह स्पष्ट होता है इस तथ्य से कि कथित जी–23 यानी असंतुष्ट नेताओं में शामिल सभी प्रमुख नेता कार्यसमिति में शामिल कर लिए गए हैं। हालांकि यह जी–23 कभी औपचारिक रूप नहीं ले पाया था, लेकिन फिर भी इनमें से कई नेताओं ने नेतृत्व के सामने अपनी मांगें रखी थीं। पार्टी अध्यक्ष का चुनाव होने के बाद इन नेताओं ने स्पष्ट कर दिया था कि उनके उठाए मुद्दों को पार्टी ने सही ढंग से संबोधित किया और अब उन्हें कोई शिकायत नहीं है। फिर भी यह बात कई लोगों के मन में रही होगी कि चूंकि ये नेता खुलकर तत्कालीन पार्टी नेतृत्व के खिलाफ स्टैंड लेते दिखे थे, इसलिए हो सकता है उन्हें दरकिनार कर दिया जाए। खरगे ने इन नेताओं को कार्यसमिति में स्थान देते हुए ऐसी आशंकाओं को गलत करार दिया। दूसरी बात पार्टी में आंतरिक लोकतंत्र की भावना को प्रतिष्ठित करने की है।

युवाओं के रोल मॉडल नीरज

भारत के ओलिंपिक्स गोल्ड मेडलिस्ट नीरज चोपड़ा ने वर्ल्ड ऐथलेटिक्स चैंपियनशिप में भी गोल्ड जीतकर देश का सिर ऊंचा कर दिया है। अब तक कोई भी ऐथलीट देश को यह गौरव नहीं दिला पाया था। लेकिन बात सिर्फ इस एक गोल्ड की नहीं है। उनकी इस उपलब्धि के साथ ऐसी कई बातें जुड़ी हैं जो इसे खास बनाती हैं। पहली बात तो खुद नीरज चोपड़ा की अब तक की यात्रा है। चंद बरस पहले वह बढ़ते वजन से परेशान एक टीनेजर थे। 13 साल की उमर में उनका वजन 80 किलोग्राम हो गया था जिसकी वजह से उनकी उम्र के दूसरे बच्चे उन्हें चिढ़ाते थे। वहां से शुरू करके नीरज ने न सिर्फ अपने शरीर को साधा बल्कि अपने मन को अनुशासित कर इस तरह से केंद्रित किया कि लगातार आगे बढ़ते रहे। साल 2018 में एशियाई खेल और फिर कॉमनवेल्थ गेम्स में गोल्ड, 2020 में तोक्यो ओलिंपिक्स में गोल्ड, 2022 में वर्ल्ड चैंपियनशिप में सिल्वर, 2022 में ही डायमंड लीग में गोल्ड और 2023 में वर्ल्ड चैंपियनशिप में गोल्ड लाने का उनका करिश्मा तो बहुत कुछ कहता ही है, सबसे बड़ी बात यह है कि इस दौरान वह अपने प्रदर्शन में लगातार सुधार करते रहे। अब भी उनका कहना है कि आने वाले कॉम्पिटिशंस में वह और बेहतर परफॉर्म करने की उम्मीद बनाए हुए हैं। 90 मीटर के लक्ष्य तक पहुंचने का उनका संकल्प कायम है। इसी से जुड़ी दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि नीरज चोपड़ा अपने व्यक्तित्व और प्रदर्शन की बदौलत देश के दूसरे ऐथलीट्स के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बने हुए हैं। बुडापेस्ट में हो रहे वर्ल्ड चैंपियनशिप की ही बात करें तो मेडल भले सिर्फ नीरज चोपड़ा के खाते में आया हो, लेकिन किशोर जेना और डीपी मनु ने भी बढ़िया प्रदर्शन किया। जेना ने 84.77 मीटर के साथ अपना अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। दूसरी ओर मनु 84.14 मीटर के थ्रो के साथ छठे नंबर पर रहे। इस तरह पहली बार ऐसा हुआ कि टॉप आठ खिलाड़ियों में तीन भारतीय खिलाड़ी शामिल रहे। यह इस फील्ड में भारत की मजबूत उपस्थिति दर्शाता है। यही नहीं वर्ल्ड ऐथलेटिक चैंपियनशिप के फाइनल में पहुंच चुकी और नैशनल चैंपियनशिप की गोल्ड विनर अनु रानी और उनकी तरह के तमाम महिला-पुरुष एथलीट हैं, जिनके लिए नीरज चोपड़ा रोल मॉडल बने हुए हैं। इन सबका मिला-जुला प्रभाव है कि ऐथलेटिक्स के क्षेत्र में आने वाला दौर भारत के लिए उम्मीदों से भरा दिख रहा है। ऐसे समय जब चांद के दक्षिण ध्रुव के पास चंद्रयान उतार कर भारतीय वैज्ञानिक स्पेस एक्सप्लोरेशन के क्षेत्र में अपना झंडा बुलंद कर चुके हैं और शतरंज में प्रग्नानंदा जैसे यंग टैलंट नई उम्मीदें दिखा रहे हैं, नीरज चोपड़ा की यह उपलब्धि न केवल देशवासियों के मनोबल को और ऊंचा करती है बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी निरंतर बेहतर करने का विश्वास और प्रेरणा देती है।

पहाड़ों के विध्वंसक से सबक लें

उत्तर भारत के दो पहाड़ी राज्यों-हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में आ रही त्रासदी से कोई महत्वपूर्ण सबक लेना है, तो वह यह है कि इस आपदा को पर्यावरणीय चिंताओं और विकास के बीच एक समझौते के रूप में पेश नहीं किया जाए। यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि जो विकास पर्यावरण में आ रहे बदलावों से उपजी अनियमित मौसमी दशाओं और विभिन्न क्षेत्रों की इसे झेलने की क्षमता को ध्यान में नहीं रखता, वह विकास नहीं है और यह आपदा की वजह भी बन सकता है। हिमालय क्षेत्र में हो रही लगातार बारिश के चलते इस हफ्ते कम से कम 72 लोगों की मौतें हुईं। इससे भारी भूस्खलन हुआ। बाढ़ का आलम यह था कि सड़कें जलमग्न हो गईं और वाहन व इमारतें तक ढहकर बहने लगीं। कई लोग घायल हैं और कई लापता। सबसे ज्यादा प्रभावित हिमाचल प्रदेश में राहत और बचाव कार्य जारी है। भूस्खलन के बाद ऐसी आशंका जताई जा रही है कि कई लोग कीचड़ और इमारतों के मलबे के नीचे दबे हुए हैं। सैकड़ों सड़कें अवरुद्ध हैं। दुर्गम क्षेत्रों में स्वास्थ्य देखभाल की स्थिति के बारे में जानकारी बेहद कम है। राजधानी शिमला में स्कूलों को बंद करने के आदेश दिए गए हैं। अकेले हिमाचल में 7028.28 करोड़ रुपये के आर्थिक नुकसान की खबर है। इसके बावजूद हम कह सकते हैं कि ये मौतें, आपदा, विनाश और तबाही अप्रत्याशित नहीं हैं। पारिस्थितिकी के नजरिये से हिमालय क्षेत्र वैसे भी काफी नाजुक माना जाता है। कुछ खास बुनियादी ढांचे की परियोजनाएं जोखिम से भरी होती हैं। विशेषज्ञ कई वर्षों से इस बारे में आगाह करते रहे हैं। पर्यावरण में हो रहे बदलावों से जोखिम भी लगातार बढ़ रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, वैश्विक स्तर पर भूस्खलन से 48 लाख लोगों के प्रभावित होने का अनुमान है और इससे 1998-2017 के बीच 18 हजार से ज्यादा लोगों की मौतें हो चुकी हैं। पर्यावरण में बदलाव और बढ़ते तापमान के कारण खासकर पहाड़ी क्षेत्रों में ज्यादा भूस्खलन होने की आशंका होती है। हिमालय में अधिक ऊंचाई पर जमी हुई बर्फ जब पिघलती है, तब, खड़ी ढलानें ज्यादा अस्थिर हो सकती हैं, नतीजतन, भूस्खलन हो सकता है। प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाले केंद्र

सरकार के एक शीर्ष निकाय राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सितंबर, 2019 के रणनीति पत्र में कहा गया है, देश में कार्यान्वयन के लिए राष्ट्रीय, राज्य और स्थानीय स्तर पर कोई भूमि उपयोग नीति नहीं है। हिमालय पर शहरों का बोझ बढ़ रहा है। और, ये शहर कचरे व प्लास्टिक, अनुपचारित सीवेज, जल संकट, अनियोजित शहरी विकास और वाहनों के चलते स्थानीय वायु प्रदूषण के कारण बनकर रह गए हैं। खासकर, गर्मियों में आने वाले पर्यटकों की भीड़ को देखते हुए इन शहरों को थोड़ा नियोजित करने की जरूरत है। रणनीति पत्र यह भी रेखांकित करता है, ग्रामीण क्षेत्रों में बगैर पर्याप्त शोध और जल निकासी की सुचारु व्यवस्था के सड़क निर्माण में भारी निवेश और पहाड़ों में अनियोजित ढंग से की जा रही विकास गतिविधियां इन क्षेत्रों में जोखिम बढ़ा रही हैं। यह पत्र परियोजनाओं को हरी झंडी दिखाने से पहले इसमें शहरी योजनाकारों को भार वहन परीक्षणों, जोखिम क्षेत्र, ढलान और भूमि उपयोग का मानचित्र तैयार रखने की वकालत करता है। इसके अलावा, यह ग्रामीण समुदायों पर भूस्खलन के प्रभावों को भी रेखांकित करता है, जहां कृषि के एक बड़े क्षेत्र में नुकसान ने पहाड़ी क्षेत्रों में आजीविकाओं को नष्ट किया है। यह पहाड़ी इलाकों में खाद्य सुरक्षा पर सवालिया निशान खड़ा करता है। इसके अलावा, भूस्खलन में किसानों की खोई जमीन के मुआवजे देने पर भी ध्यान देने की जरूरत है। रणनीति पत्र यह भी कहता है, हाल ही में हुए भूस्खलन और बादल फटने व बाढ़ जैसे खतरों के दौरान बड़े पैमाने पर संपत्ति के नुकसान से पता चला है कि अधिकांश निर्माण योजनाएं गलत हैं और मानक मानदंडों का पालन नहीं करतीं।

ब्रिक्स समिट
में भारत की जय-जय

ब्रिक्स समिट दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में काफी सफल एवं निर्णायक रहा है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस समिट में महत्वपूर्ण मुद्रा में दिखाई दिये। उन्होंने एक बार फिर इसके विस्तार की बात की और सदस्य देशों से भी आग्रहपूर्ण ढंग से दबाव बनाया कि कि ब्रिक्स का विस्तार होना चाहिए। ब्रिक्स यानी बी से ब्राजील, आर से रूस, आई से इंडिया (भारत), सी से चीन और एस से दक्षिण अफ्रीका- ये दुनिया की पांच सबसे तेजी से उभरती अर्थव्यवस्था वाले देशों का एक समूह है जिसमें अब छह देशों की सदस्यता देने पर सहमति बनी है, जिसमें सउदी अरब, यूएई, मिस्र, इथोपिया, अर्जेंटीना और ईरान शामिल हैं। इन शक्ति सम्पन्न पांचों देशों का वैश्विक मामलों पर महत्वपूर्ण प्रभाव है और दुनिया की लगभग 40 फीसदी आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं। चीन इसे अपने हित के लिए इस्तेमाल करना चाहता है, जबकि भारत इसे सही मायनों में लोकतांत्रिक संगठन बनाना चाहता है। भारत चाहता है कि ब्रिक्स समूह मिलकर दुनिया में शांति, सह-जीवन, अहिंसा, लोकतांत्रिक मूल्य, समानता एवं सह-अस्तित्व पर बल देते हुए दुनिया को युद्ध, आतंक एवं हिंसामुक्त बनाया जाये।

फिलहाल दुनिया की 40 प्रतिशत आबादी ब्रिक्स देशों में रहती है। एक क्वार्टर दुनिया की जीडीपी ब्रिक्स में है। इन्हीं सब वजहों से दुनिया के देशों को यह आकर्षित करता है और अभी फिलहाल 22 देशों ने इसका सदस्य बनने के लिए आवेदन किया है। भारत का मानना था कि समान सोच वाले देशों को साथ लेकर चला जा सकता है। आने वाले समय में ब्रिक्स दुनिया की आधी

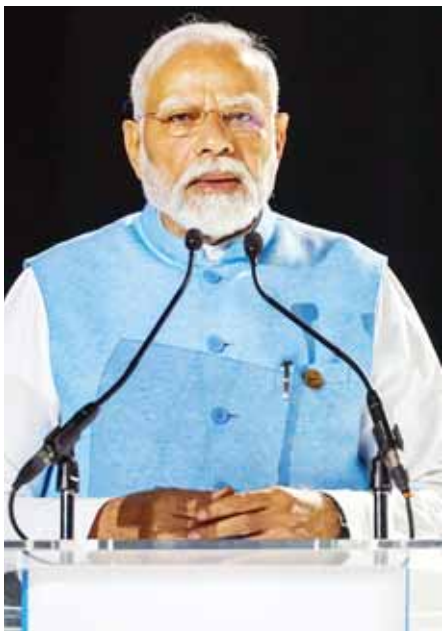

जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने लगेगा। रूस और चीन की यह मंशा कही जा रही थी कि अमेरिका या पश्चिम को यह संदेश दिया जा सके कि पश्चिमी दुनिया को ब्रिक्स चुनौती देगा। निश्चित ही ब्रिक्स की ताकत से एक संतुलन स्थापित हो रहा है और पश्चिमी देशों के अहंकार एवं दुनिया पर शासन करने की मंशा पर पानी फिरा है। हमारा भविष्य सितारों पर नहीं, जमीन पर निर्भर है, वह हमारा दिलों में छिपा हुआ है, दूसरे शब्दों में कहें तो हमारा कल्याण अन्तरिक्ष की उड़ानों, युद्ध, आतंक एवं शस्त्रों में नहीं, पृथ्वी पर आपसी सहयोग, शांति, सह-जीवन एवं सद्भावना में निहित है। 'वसुधैव कुटुम्बकम का मंत्र इसलिये सारी दुनिया को भा रहा है। इसलिये बदलती हुई दुनिया में, बदलते हुए राजनैतिक हालात में सारे देश एक साथ जुड़ना चाहते हैं।

अब ब्रिक्स देशों में छह नए देशों के शामिल हो जाने से ब्रिक्स देशों की वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में हिस्सेदारी 26 प्रतिशत हो जाएगी। ब्रिक्स के विस्तार का उद्देश्य पश्चिमी देशों के प्रभुत्व वाली वैश्विक व्यवस्था में एक काउंटरवेट के रूप में उभरना है। अंतरराष्ट्रीय कूटनीति की पेचीदगी कह लीजिए या खूबसूरती, इसमें कदम-कदम पर विडंबनाएं और विरोधाभास देखने को मिलते हैं। सोचिए, एक तरफ चीन से मुकाबले के लिए भारत और अमेरिका साथ आए हैं, तो दूसरी तरफ ब्रिक्स में चीन और भारत, उन पश्चिमी देशों के दबदबे के खिलाफ एकजुट हैं जिनका प्रतिनिधित्व अमेरिका करता है।

ब्रिक्स (ब्राजील, भारत, चीन, रूस व दक्षिण अफ्रीका) का संगठन ऐसा सपना है जिसे भारत रत्न स्व. प्रणव मुखर्जी ने भारत के विदेश मन्त्री के तौर पर 2006 में देखा था। सितम्बर 2006 में संयुक्त राष्ट्र महासंघ की साधारण सभा में भाग लेने गये प्रणव दा ने तब इस सम्मेलन के समानान्तर बैठक करके भारत, रूस, चीन व ब्राजील का एक महागठबन्धन तैयार किया था जिसे शुरू में 'ब्रिक' कहा गया था। प्रणव दा बदलते विश्व शक्ति क्रम में उदीयमान आर्थिक शक्तियों की समुचित व जायज सहभागिता के प्रबल समर्थक थे और पुराने पड़ते राष्ट्रसंघ के आधारभूत ढांचे में रचनात्मक बदलाव भी चाहते थे। इसके साथ ही वह बहुध्रुवीय विश्व के भी जबर्दस्त पक्षधर थे जिससे विश्व का सकल विकास न्यायसंगत एवं लोकतांत्रिक तरीके से हो सके। अब इसमें इन्हीं महाद्वीपों के छह नये देश शामिल किये गये हैं। अब नरेन्द्र मोदी ने इसमें सराहनीय भूमिका निभाई है। उनके दूरगामी एवं सूझबूझ भरे सुझावों का ब्रिक्स देशों ने लोहा माना है। ब्रिक्स ने अपने गठन से लेकर अब तक जो तरक्की की है उसकी उपलब्धि इसके क्षेत्रों की वह आपसी समझदारी रही है जिसके तहत उन्होंने आपसी हितों की सुरक्षा करते हुए विश्व को नया शक्ति सन्तुलन चक्र देने का प्रयास किया है।

चुनावी घड़ी में वादों, घोषणाओं, सौगातों, गारंटी, वचनों की झड़ी

मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव से पहले शिवराज सरकार ने जनता को दी कई सौगात, पूर्व सीएम कमलनाथ अपनी सभाओं में 5 गारंटी और 11 वचन की दिलाते हैं याद

मध्यप्रदेश में दो माह बाद यानी नवंबर में विधानसभा चुनाव प्रस्तावित हैं. इन चुनावों में फतह हासिल करने के लिए राजनीतिक दलों ने वादों, घोषणाओं और सौगातों की झड़ी लगा दी है. सत्तारूढ़ शिवराज सिंह चौहान की सरकार ने जहां हर वर्ग के लिए सरकारी खजाने का मुंह खोलते हुए घोषणाओं का अंबार लगा दिया है. वहीं राज्य की प्रमुख विपक्षी पार्टी कांग्रेस अपनी 5 गारंटी सहित 11 वचन लेकर चुनाव में जनता के सामने है. दोनों की दलों की घोषणाओं और वादों के पिटारे में खासतौर से प्रदेश की आधी आबादी यानी महिलाओं, युवा बेरोजगारों, किसानों और कर्मचारियों को साधने के लिए चुनावी गिफ्ट हैं.

आइए जानते हैं भाजपा और कांग्रेस की उन 11 बड़ी घोषणाओं, चुनावी दांव के बारे में, जो वोट को नतीजों की शक्ल में प्रभावित करने की ताकत रखते हैं. इन वादों, घोषणाओं, सौगातों के ऐलान की कमान सत्तारूढ़ दल की ओर से मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और कांग्रेस की ओर से प्रदेश अध्यक्ष, पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने संभाल रखी है.

मप्र में होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए सियासी बिसात बिछ चुकी है. राज्य के दो प्रमुख दल सत्तारूढ़ भाजपा हो या कांग्रेस, दोनों दल मैदानी स्तर पर चुनावी जंग की तैयारियों में जुटे हैं. दोनों दलों में प्रमुख नेताओं के ताबड़तोड़ दौरे तो शुरू हो ही चुके हैं. मतदाताओं को साधने और उन्हें वादों, घोषणाओं और सौगातें देने की झड़ी लगी हुई है. महिलाओं से लेकर नए वोटर बनने जा रहे छात्र-छात्राओं, बेरोजगार युवाओं किसानों को साधने के लिए ऐसी-ऐसी घोषणाएं की जा रही हैं, जो चुनाव में मास्टर स्ट्रोक साबित हो सकती हैं. देखना रोचक होगा कि आगामी विधानसभा चुनाव में जनता किस दल की घोषणाओं को ज्यादा तरजीह देती है.

शिवराज की काट से कांग्रेस ने लिया सबक, अब चुनाव से पहले ही खोलेगी पत्ते

भोपाल. मध्य प्रदेश में विधानसभा चुनाव में अब कम समय बचा है। भाजपा और कांग्रेस के बीच शह और मात का खेल चल रहा है। कांग्रेस ने पांच गारंटियां देकर मतदाताओं को आकर्षित करने की जो योजना बनाई थी, उस पर शिवराज सरकार ने आगे बढ़कर पानी फेर दिया है। इससे कांग्रेस ने भी सबक ले लिया है। अब वह चुनाव से पहले ही अपने पत्ते खोलेगी। दरअसल, पार्टी ने मतदाताओं को साधने के लिए वचन पत्र में कई प्रविधान किए हैं। इनमें कुछ वचन बड़े वर्ग को प्रभावित करने वाले भी हैं, लेकिन अब इन्हें आचार संहिता लागू होने के बाद ही सार्वजनिक किया जाएगा ताकि सरकार उनकी काट न ढूंढ सके और उन्हें निस्तेज करने के लिए कोई कदम न उठा सके।कांग्रेस ने जबलपुर से चुनाव अभियान की शुरुआत करते हुए सरकार बनने पर पांच सुविधाएं लागू करने की गारंटी दी थी। इसमें नारी सम्मान योजना के अंतर्गत महिलाओं को डेढ़ हजार रुपये प्रतिमाह, पांच सौ रुपये में रसोई गैस सिलेंडर, पुरानी पेंशन बहाली, 100 यूनिट बिजली निशुल्क-200 यूनिट आधी दर पर और किसानों की कर्जमाफी शामिल थी। इसके बाद किसानों को पांच हार्सपावर तक के सिंचाई पंप के लिए बिजली निशुल्क देने, पुराने बिल माफ करने सहित अन्य घोषणाएं की गईं।11 लाख 91 हजार किसानों को दो हजार करोड़ रुपये से अधिक की ब्याज माफी भी दे दी। इससे कांग्रेस सतर्क हो गई है और अब तय किया है कि अब आचार संहिता लागू होने तक अपने पत्ते नहीं खोलेगी। बड़े वर्ग से जुड़ी हुई योजनाओं की घोषणाएं वरिष्ठ नेताओं द्वारा अलग-अलग की जाएंगी। इसमें बेरोजगार युवा, अनुसूचित जाति-जनजाति के उद्यमी, छोटे व्यापारी, सार्वजनिक वितरण प्रणाली से जुड़े पांच करोड़ हितग्राही, स्वास्थ्य का अधिकार और कर्मचारियों की समस्याओं के निराकरण से संबंधित वचन प्रमुख हैं।

विधानसभा चुनाव

विधानसभा चुनाव से पहले रेवड़ियों की बौछार

कांग्रेस के वादों को बीजेपी ने लपका

मध्य प्रदेश में इस बार विधानसभा चुनाव में जनता को मुफ्त में दी जाने वाली स्कीम मुख्य मुद्दा बन गई हैं. काँग्रेस और बीजेपी के बीच होड़ लगी है कि कौन कितनी रेवड़ी बांट सकता है. बीजेपी इसे गरीब दलित और महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार बता रही है. कांग्रेस का आरोप है उसके वादों को बीजेपी

सरकार कॉपी पेस्ट कर रही है. कांग्रेस तो पहले ही वादों की झड़ी लगा चुकी है जिसे उसने गारंटी का नाम दिया है. कमलनाथ ने सरकार में आने पर नारी सम्मान योजना में गरीब महिलाओं को हर महीने 1500 रुपये देने का ऐलान किया तो शिवराज सरकार ने लाड़ली बहना योजना शुरू कर दी. उसमें सवा करोड़ महिलाओं को पहले 1000 रूपये अब 1250 रूपये दिये जा रहे हैं और भविष्य में ये रकम बढ़ाकर 3000 रूपये करने का वादा किया गया है. राजस्थान की तरह एमपी में काँग्रेस ने वादा किया कि वो 500 रूपये में रसोई गैस सिलेंडर देगी तो अब मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने सावन के महीने में गरीब महिलाओं को 450 रूपये का गैस सिलेंडर देने की शुरूआत कर दी. जल्दी ही स्थायी रूप से सस्ता गैस सिलेंडर देने का राज्य सरकार वादा कर रही है.

कांग्रेस के वादों की नकल

काँग्रेस ने एक और वादा किया कि अगर पार्टी की सरकार 2023 में बनी तो 100 यूनिट बिजली मुफ्त और 200 यूनिट तक की बिजली का बिल आधा किया जाएगा तो अब रविवार को भोपाल में हुये लाड़ली बहना सम्मेलन में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने ऐलान कर दिया कि गरीब महिलाओं से अब सिर्फ 100 रूपये महीने का बिजली बिल ही लिया जायेगा. मध्य प्रदेश में इस साल विधानसभा चुनाव होने हैं.

शिवराज कर रहे हैं कॉपी पेस्ट

पूर्व केन्द्रीय मंत्री कांग्रेस नेता अरूण यादव ने कहा ये माननीय मुख्यमंत्री शिवराज की सरकार को 18 साल एमपी में हो गये.वो एमपी की जनता के अगर आप सच्चे हितैषी थे तो ये चीज़े 18 साल में क्यों नहीं कीं. आपको किसने रोका था. जब चुनाव आता है तब आपको जनता की याद आती है. काँग्रेस ने जब 2018 में सरकार बनी तो जो कहा सो किया. 2023 में काँग्रेस ने जो वादे किये उनको कॉपी पेस्ट करने का काम मुख्यमंत्री कर रहे हैं.

विकास हमारा मुद्दा

बीजेपी चुनाव प्रबंध समिति के संयोजक नरेन्द्र सिंह तोमर का कहना है बीजेपी ये ज़रूरी समझती है कि गरीब दलित महिला के जीवन में सक्षमता आनी चाहिये. उनके जीवन स्तर में बदलाव लाने के लिये सरकार को सहायता करनी चाहिये. लेकिन सामान्य तौर पर बीजेपी विकास और जनकल्याण के मुद्दे पर ही चुनाव में जाती है. ये चुनाव भी विकास और जनकल्याण के मुद्दे पर स्थिर रहेगा.

मध्य प्रदेश पर 55,000 करोड़ रुपए का कर्ज!

मध्य प्रदेश में साल के अंत में होने वाले चुनाव से पहले 'मुफ्त योजनाओं को लेकर किए जाने वाले दावे' तेज हो गए है, शिवराज सिंह चौहान सरकार महिलाओं के लिए मासिक भुगतान बढ़ाने के साथ ही एलपीजी सिलेंडर पर सब्सिडी दे रही है. इस बीच, कांग्रेस के कमलनाथ ने मतदाताओं को लुभाने के लिए अपने अब तक के 'पांच वादों' को '11 वचन' तक बढ़ा दिया है. यह उस राज्य में हो रहा है, जिसका 2023-24 के लिए राजकोषीय घाटा 55,708 करोड़ रुपए का लक्ष्य है, जो सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) का लगभग 4त्न है. यह राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन अधिनियम, 2003 के अनुसार 3.5त्न की सीमा से अधिक है. राज्य सरकार ने जून में 'सीएम लाडली बहना योजना' शुरू की थी जिसके तहत राज्य की महिलाओं को मासिक 1,250 करोड़ रुपए का भुगतान किया जा रहा है. मुख्यमंत्री चौहान द्वारा मासिक भुगतान 1,000 रुपए से बढ़ाकर 1,250 रुपए करने के बाद इस महीने यह राशि बढ़ाकर 1,600 करोड़ रुपए कर दी गई है. यदि मुख्यमंत्री की घोषणा के अनुसार इस योजना को अंततः 3,000 रुपए प्रति माह तक बढ़ा दिया जाता है, तो योजना के तहत कुल भुगतान बढ़कर 3,800 करोड़ रुपए प्रति माह या 45,600 करोड़ रुपए प्रति वर्ष हो सकता है ङ्क जो राज्य के वार्षिक वित्तीय घाटे के करीब है. चौहान ने यह भी घोषणा की है कि सावन के महीने में महिलाओं को रसोई गैस सिलेंडर 450 रुपए के रियायती कीमत पर उपलब्ध कराया जाएगा और भविष्य में 'उचित व्यवस्था' की जाएगी. एक गैर-सब्सिडी वाले सिलेंडर की कीमत 1,100 रुपए है और राज्य बाकी लागत वहन करेगा. अगर इस साल के अंत में कमलनाथ सत्ता में आते हैं तो राज्य की वित्तीय स्थिति में बहुत सुधार होने की उम्मीद नहीं है, जिन्होंने जनता से पांच नहीं, बल्कि 11 वादे किए हैं. उनमें से मुख्य हैं महिलाओं को 1,500 रुपए का मासिक भुगतान, इसका मतलब राज्य के खजाने पर प्रति माह 1,875 करोड़ रुपए का बोझ बढ़ सकता है.

फ्री स्कीम की लड़ाई को झेल पाएगा राज्य ?

मध्य प्रदेश योजना

लाडली बहना योजनाः बहनों का शिवराज पर बढ़ा भरोसा

मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना में अक्टूबर से मिलेंगे 1250 रूपये : मुख्यमंत्री श्री चौहान

मध्यप्रदेश की एक सभा जिसमें एक लाख के करीब महिलायें और पंडाल से एक सुर में गूंज रही आवाज-मेरे भैया, यानी शिवराज भैया. लाड़ली बहनों के भैया. भांजियों के मामाजी. मेरे भैया की ये गूंज अगली बार फिर शिवराज सरकार की दस्तक देती दिखाई देती है. लाड़ली बहना योजना मध्यप्रदेश में फिर भाजपा सरकार की वापसी का रोडमैप तैयार करती दिख रही है. प्रदेश में लगभग 5 करोड़ 40 लाख मतदाता हैं. लाड़ली बहनों की पंजीकृत संख्या करीब एक करोड़ 25 लाख है और लगभग सभी मतदाता है. यानी कुल मतदाताओं का 25 फीसदी. ये 25 फीसदी शिवराज सरकार को अगले चुनाव में 150 से ज्यादा सीटें दिलवा सकती हैं. लाड़ली बहना के सामने कांग्रेस की नारी सम्मान योजना है. भाजपा के एक हजार रुपये (अब 1250) के मुकाबले कांग्रेस ने 1500 रुपये देने का ऐलान किया है. बावजूद इसके जनता के बीच लाड़ली बहना की चर्चा ज्यादा है. मध्यप्रदेश में शिवराज सिंह चौहान वो चेहरा बन चुके हैं जिन पर जनता खासकर आर्थिक कमजोर और महिला वर्ग को बेहद भरोसा है. वे उन्हें वादा निभाने वाले अपने बीच के आदमी लगते हैं, इस योजना को बारीकी से देखेंगे तो ये सिर्फ सवा करोड़ महिलाओं के वोट का मामला नहीं है. ये महिलाएं धीरे-धीरे करके मध्यप्रदेश भाजपा और 'अपने भैया शिवराज ' की प्रचारक बन गई हैं. वहीं पिछले दिनों मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने रक्षा-बंधन पर बहनों के खाते में सिंगल क्लिक से 312.64 करोड़ रुपए की राशि अंतरित कर उन्हें विशेष उपहार दिया। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना में बहनों को प्रतिमाह दी जा रही 1000 रूपए की राशि के स्थान पर अक्टूबर माह से 1250 रूपये की राशि दी जाएगी। राखी पर्व पर आज प्रत्येक बहन को उपहार के रूप में 250 रूपये दिए जा रहे हैं। बहनों के खाते में दस सितंबर को योजना के एक हजार रुपए डाले जाएंगे। इसके पश्चात अक्टूबर माह से 1250 रुपए की राशि दी जाएगी। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने आज यहाँ जंबूरी मैदान भोपाल में विशाल लाड़ली बहना सम्मेलन में महत्वपूर्ण घोषणाएँ कीं।

सितंबर तक बढ़े हुए बिजली बिल की वसूली नहीं होगी

जन आशीर्वाद यात्राः मिलेगा जनता का साथ

150 सीटें जीतकर बीजेपी में भाजपा बनाएगी सरकार, केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह का दावा

मप्र में चुनावों के लिए बीजेपी की जन आशीर्वाद यात्राएं शुरू हो गईं हैं। बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा ने यात्रा का शुभारंभ किया तो वहीं पिछले दिनों गृह मंत्री अमित शाह ने जन आशीर्वाद यात्रा का शुभारंभ करते हुए दावा किया कि प्रदेश में डेढ़ सौ सीटें जीतकर भारतीय जनता पार्टी फिर सरकार बनाएगी। उन्होंने कांग्रेस की सरकार में मुख्यमंत्री रहे कमल नाथ को निशाने पर लेते हुए कहा कि उन्होंने प्रदेश को बीमारू राज्य बना दिया था। उन्होंने दिग्विजय सिंह और उनकी सरकार को भी निशाने पर लिया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीडी शर्मा, केंद्रीय मंत्री फग्गन सिंह कुलस्ते और भूपेंद्र यादव उपस्थित रहे। यहां आयोजित जनसभा को संबोधित करते शाह ने दावा किया कि शिवराज सरकार ने हमेशा गरीबों के लिए काम किया। कांग्रेस के तुष्टीकरण और बीजेपी के जनकल्याण की मानसिकता के बीच प्रदेश के मतदाताओं को चुनाव करना है। मिस्टर बंटाधार दिग्विजय सिंह मध्य प्रदेश को बीमारू राज्य बनाकर चले गए थे। कमल नाथ ने इसे बीमारू राज्य बना दिया था। दिग्विजय सरकार को याद करिए, न बिजली थी और न ही पानी था, महिला सुरक्षा का तो नामोनिशान ही नहीं था। शिवराज ने इसे बेमिसाल प्रदेश बनाया। मध्य प्रदेश पहला राज्य है, जिसने आदिवासियों के लिए पेसा कानून बनाया। सारी घोषणाएं दो साल में पूरी की। आदिवासी कल्याण के लिए शिवराज सिंह सरकार ने पूरे देश को नया रास्ता दिया।

शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सबसे पहले कहा था कि मेरी सरकार आदिवासियों की है। आपको फैसला करना है कि देश के खजाने पर गरीब आदिवासियों का अधिकार होगा या अल्पसंख्यकों का?आदिवासियों के जल, जंगल और जमीन के साथ मोदी जी ने सुरक्षा, सम्मान और समावेशी विकास का नया रास्ता दिया। अल्पसंख्यक तुष्टीकरण में कांग्रेस हमेशा डूबी रही। मनमोहन सरकार आदिवासी कल्याण के लिए सिर्फ 24 हजार करोड़ का बजट देती थी, लेकिन मोदी जी ने इसे बढ़ाकर एक लाख 19 हजार करोड़ का बजट दिया। एकलव्य स्कूलों के लिए 287 करोड़ रुपये दिए गए। एक आदिवासी बहन द्रौपदी मुर्मु को राष्ट्रपति बनाकर आदिवासी को सम्मान दिया, लेकिन कांग्रेस ने वर्षों के शासन में ऐसा कभी नहीं किया।

शाह ने कहा कि भारत देश की सीमा और सेना से छेड़खानी नहीं करने देता। प्रधानमंत्री मोदी को सबसे ज्यादा नागरिक सम्मान मिल चुके हैं। यह देश की जनता का सम्मान है। जनता से सीधी जुड़ी 51 योजनाएं कांग्रेस ने बंद कर दी थीं। कांग्रेस ने करोड़ों के घोटाले किए। जनता से किए वादे नहीं निभाए। अब जनता को तय करना है कि आदिवासी, दलित और पिछड़ों की सरकार चाहिए या भ्रष्टाचार की सरकार चाहिए। मोदी के नेतृत्व में डबल इंजन की सरकार बनवाइए। शाह ने लोगों से हाथ उठवाकर फिर भाजपा की सरकार बनवाने का संकल्प भी दिलाया। संबोधन के बाद केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सभा स्थल से ही यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। गृह मंत्री ने बारिश के चलते ग्वालियर एयरपोर्ट से ही क्षमा मांगकर मोबाइल फोन से श्योपुर सभा को संबोधित किया। शाह ने कहा कि भारत में विकास का नया युग शुरू हुआ है। वर्ष 2003 से लेकर वर्ष 2023 तक मध्यप्रदेश ने बीमारू से बेमिसाल राज्य बनने की यात्रा की है। देश में अमृतकाल चल रहा है और इसमें मध्य प्रदेश की यात्रा भी जारी रहे, यह बहुत जरूरी है। अमित शाह ने कहा कि जन आशीर्वाद यात्रा को ऐसा आशीर्वाद दें कि मध्यप्रदेश में 150 से अधिक सीटें प्राप्त कर भाजपा की सरकार बने। अमित शाह ने लगभग तीन मिनट ही संबोधित किया। नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि यह प्रदेश सरकार या भाजपा की यात्रा नहीं है, बल्कि प्रदेश की साढ़े नौ करोड़ जनता की यात्रा है। वर्ष 2003 तक प्रदेश में सड़कें नहीं थीं और सिर्फ गड्ढे दिखाई देते थे। 44 हजार किमी की सड़कें अब पांच लाख किमी हो गई हैं, बिजली पांच हजार मेगावाट से बढ़कर 28 हजार मेगवाट हो गई है।सिंधिया ने कहा कि एक तरफ कांग्रेस की शून्य की सरकार है तो दूसरी ओर भाजपा की पुण्य की सरकार है। श्योपुर के कार्यक्रम में रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव, कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर मौजूद रहे और संबोधित किया।

मप्र में चुनाव से कुछ महीने पहले तीन मंत्रियों की शपथ

मध्यप्रदेश में विधानसभा चुनावों को समय काफी कम बचा है। बमुश्किल डेढ़ महीने बाद आचार संहिता लग जाएगी। मप्र मंत्रिमंडल का विस्तार हो गया। गौरीशंकर बिसेन, राजेंद्र शुक्ल और राहुल लोधी ने शपथ ली है। शपथ के बाद मीडिया से बातचीत में तीनों ने कम समय मिलने की बात का अपने हिसाब से जवाब दिया है। राहुल लोधी ने कहा है कि पार्टी का 150 सीटें जिताने का लक्ष्य है।

मध्य प्रदेश में बीजेपी सरकार के मंत्रिमंडल का विस्तार आखिरकार हो गया. विधानसभा चुनाव आचार संहिता लगने के करीब 45 दिन पहले हुए शिवराज कैबिनेट विस्तार से क्षेत्रीय संतुलन और जातिगत समीकरण को साधने की कोशिश की गई है. भाजपा ने विंध्य, महाकौशल और बुंदेलखंड क्षेत्र से तीन मंत्री बनाकर कुल 94 सीट में से 70 से ज्यादा सीट पर कब्जा करने की रणनीति बनाई है. यहां अभी भाजपा के पास केवल 54 सीट है. कांग्रेस ने पिछले चुनाव में बेहतर प्रदर्शन किया था और 39 सीट हथिया ली थी. कुल 35 मंत्री में से एक पद अभी खाली रखा गया है. नए विस्तार के समीकरण को अगर समझा जाए तो विंध्य से राजेंद्र शुक्ल, महाकौशल से गौरीशंकर बिसेन ओर बुंदेलखंड से राहुल सिंह लोधी को मंत्री बनाया गया है. पार्टी ने तीनों अंचल में 94 में से 70 से ज्यादा सीट जिताने का टारगेट दिया है. इसमें सामान्य और ओबीसी वर्ग को साधने की कवायद भी नजर आई है. शुक्ल सामान्य वर्ग से है, जबकि बिसेन और लोधी दोनों ओबीसी वर्ग से मंत्री बनाए गए हैं.

राहुल लोधी

लोधी समाज के प्रदेश में 9 फीसदी वोटर हैं. राहुल युवा चेहरा हैं. इस समाज का असर 40 से ज्यादा सीट पर है. पूर्व सीएम उमा भारती की नाराजगी भी दूर करने की कोशिश की गई है.

राजेंद्र शुक्ल

ब्राह्मण समाज के नेता हैं. विंध्य का बड़ा चेहरा हैं. विंध्य से कोई मंत्री नहीं होने से कार्यकर्ताओं में नाराजगी थी. भाजपा ने 30 सीट में से 24 जीती थी. इसके बावजूद कोई मंत्री नहीं बनाया गया था. शुक्ल के बहाने नाराज ब्राह्मणों को पार्टी के पाले में लाने की सारी कवायद है.

गौरीशंकर बिसेन

7 बार के विधायक हैं. ओबीसी वर्ग वाले पंवार समाज का बड़ा वोट बैंक है. बालाघाट, मंडला और डिंडोरी जैसे इलाकों में भाऊ की अच्छी पकड़ है. पूर्व सीएम कमलनाथ के गढ़ छिंदवाड़ा में भी सामाजिक वोटर्स है. यहीं वजह से उम्रदराज बिसेन एक बार फिर से मंत्री बनाए गए है.

एक साथ पांच झटके

चुनावी टिकट लिस्ट से पहले सिंधिया कैंप में खलबली, कई नेताओं का टूट रहा सब्र

मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव 2023 से पहले राज्य में दल बदल का सिलसिला जोरों पर हैं। इसी कड़ी में दिन मध्य प्रदेश कांग्रेस के लिए बेहद खास माना जा रहा है। क्योंकि, आज राजधानी भोपाल में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ की अध्यक्षता में प्रदेश के अलग अलग इलाकों में जोर रखने वाले पांच दिग्गज नेताओं ने भाजपा का दामन छोड़ कांग्रेस की सदस्यता ली है कांग्रेस में शामिल हुए नेताओं में उत्तर प्रदेश के नेताओं तक की एंट्री हुई है। इनमें यूपी के ललितपुर से पूर्व सांसद सुजान सिंह बुंदेला के बेटे और बसपा-सपा के टिकट पर विधानसभा चुनाव लड़ चुके गुड्डू राजा बुंदेला हैं। इसके अलावा भाजपा से कोलारस के पूर्व विधायक वीरेंद्र सिंह रघुवंशी, पूर्व विधायक स्व. देवेंद्र सिंह रघुवंशी की बेटी और गुना की कद्दावर नेता अंशु रघुवंशी, पूर्व विधायक भंवर सिंह शेखावत, पूर्व मंत्री उमा शंकर गुप्ता के भांजे, जनसंघ बीजेपी के संस्थापक स्व नारायण प्रसाद गुप्ता के नाती और बीजेपी आईटी सेल के प्रदेश सह संयोजक रह चुके भाजपा नेता डॉ आशीष अग्रवाल (गोलू) का नाम शामिल है।

मध्य प्रदेश की राजनीति में इन दिनों दल-बदल का तूफान आया है. कांग्रेस की स्क्रीनिंग कमेटी की बैठक से पहले कोलारस के भाजपा विधायक वीरेंद्र रघुवंशी ने पार्टी से इस्तीफा देकर संकेत दिए हैं कि सिंधिया कैंप में सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है. रघुवंशी ने अपने इस्तीफे में संगठन और सिंधिया पर कई आरोप लगाए. कांग्रेस सूत्रों पर भरोसा किया जाए तो कई और सिंधिया समर्थकों की घर वापसी हो सकती है. केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के प्रभाव वाले ग्वालियर चंबल संभाग में भाजपा को लगातार झटके लग रहे हैं. खास तौर से शिवपुरी जिला जहां सिंधिया परिवार का एकछत्र शासन चलता था, में टूट बढ़ी है. विधायक वीरेंद्र रघुवंशी ने पार्टी छोड़ने के साथ ही कई आरोप लगाए. इस्तीफे में रघुवंशी ने कहा कि 'बीते तीन सालों में जो दर्द उन्होंने महसूस किया वह मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और भाजपा वरिष्ठ नेताओं को बताया, लेकिन किसी ने ध्यान नहीं दिया.' उन्होंने कहा 'शिवपुरी और इसी जिले की कोलारस विधानसभा में भ्रष्ट अधिकारियों को नियुक्त कर मेरे क्षेत्र के विकास कार्यों में बाधा डाली गई.' याद रहे, ऐसे ही आरोप भाजपा के सीनियर लीडर रहे पूर्व मंत्री दीपक जोशी ने भी लगाए थे. किसानों के मुद्दे पर मौन रहने के आरोप विधायक रघुवंशी ने किसानों की सहकारी बैंकों में घोटालों के आरोप लगाए हैं, जिसमें शिवपुरी जिले में किसानों के खातों की जमा राशि में सेंध लगाने जैसे गंभीर आरोप हैं. उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि सिंधिया ने किसानों के मुद्दों पर ही कांग्रेस छोडी थी.

रघुवंशी दो सितंबर को कांग्रेस में शामिल हो सकते हैं, लेकिन इसकी औपचारिकता पर खुद कांग्रेस के वरिष्ठ नेता भी मौन हैं. हालांकि प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ ने कहा कि रघुवंशी के अलावा कई और विधायकों से भी बातचीत हुई है.

चार नेता छोड़ चुके सिंधिया का साथ

शिवपुरी जिले के ही वरिष्ठ नेता भाजपा के प्रदेश कार्यसमिति सदस्य रहे बैजनाथ सिंह यादव कांग्रेस में शामिल हो गए. उनकी पत्नी कमला यादव जिला पंचायत अध्यक्ष रही हैं. इससे पहले यादव कांग्रेस में शिवपुरी जिलाध्यक्ष रहे हैं. यादव खुद कोलारस से टिकट चाह रहे हैं. वीरेंद्र रघुवंशी कांग्रेस ज्वाइन करते हैं तो उन्हें शिवपुरी से भाजपा की कद्दावर नेता-मंत्री यशोधरा राजे के खिलाफ उतारा जा सकता है. रघुवंशी 2013 में भी यशोधरा के खिलाफ चुनाव लड़ चुके हैं. बीते महीनों में सिंधिया समर्थक नेताओं में शिवपुरी के ही राकेश गुप्ता, रघुराज धाकड़ पार्टी छोड़ चुके हैं. ये भी सिंधिया समर्थक हैं. वहीं सिंधिया विरोधी खेमे के जितेंद्र जैन गोटू ने भी भाजपा छोड़ कांग्रेस ज्वाइन कर ली. जितेंद्र के भाई देवेंद्र जैन शिवपुरी और कोलारस से विधायक रहे हैं. मालवा अंचल में भी सिंधिया खेमे में नाराजगी बनी हुई है. बीते दिनों नीमच के कद्दावर नेता समंदर पटेल ने कांग्रेस का 'हाथ' थाम लिया.

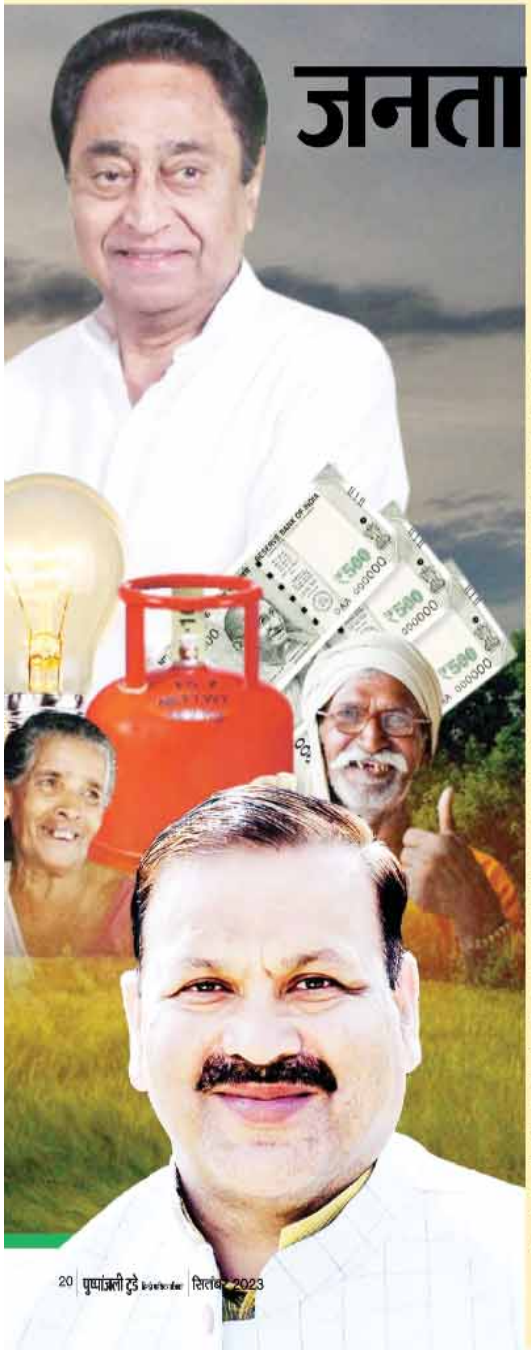

जनता के सच्चे जनसेवक सतीश सिकरवार

सतीश राजनीति के नायक नहीं महानायक

● पुष्पांजली टुडे, ग्वालियर

लश्कर पूर्व के कांग्रेस विधायक डा. सतीश सिंह सिकरवार नायक नहीं हैं, आज ग्वालियर में उनके जन्मदिवस पर उमड़ी लाखों समर्थकों की भीड़ ने साबित कर दिया वह नायक नहीं महानायक हैं। जिनके पास समर्थकों का फौज फांटा है और समर्थक उन्हें बेहद स्नेह देते हैं। आज सुबह ललितपुर कालोनी में 8 बजे से शुरू हुआ बधाई देने का क्रम देर अर्धरात्रि तक जारी रहा, जो भी आया वह मिठाई व भोजन लेकर ही गया। विधायक डा. सतीश सिंह सिकरवार भी सभी से एक-एक कर मिले और वरिष्ठों के पैर छूकर आर्शीवाद भी लिया। इस दौरान छोटे बच्चों से लेकर किशोर, युवा, महिला, पुरूष, छात्र-छात्रायें का दिनभर हुजुम उमड़ा, लोग अपने नेता को बधाई देने के लिये आतुर दिखे।

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं 16 ग्वालियर पूर्व से विधायक डॉ. सतीश सिकरवार का जन्मदिन हजारों लोगों ने पुष्पहार पहनाकर, केक काटकर एवं आतिशबाजी चलाकर आत्मीय स्वागत कर मनाया। ग्वालियर शहर और अंचल के कांग्रेस नेताओं समेत अन्य राजनीतिक दलों के नागरिकों ने ललितपुर कॉलोनी लश्कर निवास पर पहुँच कर जन्मदिन की शुभकामनाएं दीं। कार्यकर्ता ढोल-धमाकें के साथ जत्थों के रूप में आतिशबाजी चलाते हुये पहुँचे और सेल्फी के साथ केक काटे। इससे पहले विधायक डॉ. सतीश सिकरवार अपनी माताजी श्रेद्धय स्व. श्रीमती रामकुमारी सिकरवार की जे.बी.आई.टी.एम कॉलेज परिसर में बन रही छत्री पर पहुँचे और पूजा-अर्चना कर आर्शीवाद लिया। साथ ही भगवान अचलेश्वर महादेव मंदिर पर पूजा-अर्चना की। इसके साथ ही गरीबों में फल एवं मिष्ठान का वितरण किया। ललितपुर कॉलोनी निवास पर डॉ. सिकरवार को जन्मदिन की बधाई देने वालों का सुबह से देर रात तक लोगों के आने-जाने का सिलसिला जारी रहा। शाम को हजारों लोगों की मौजूदगी में विधायक डॉ. सिकरवार ने केक काटा। बुर्जुग, महिला, पुरूष, बच्चों, युवाओं की बड़ी संख्या के अलावा तमाम सामाजिक, राजनीतिक एवं खेल संगठनों के लोगों ने जन-जन के लाड़ले विधायक डॉ. सिकरवार के निज निवास पर पहुँचकर जोरदार स्वागत किया। दिन भर सतीश भैया जिंदाबाद के नारे गूंजते रहे। स्वागत करने व बधाई देने के लिए ग्वालियर चंबल संभाग के कई जिलों से लोग आए। इसके साथ ही कई समाज के पदाधिकारियों, सामाजिक संस्था एवं धर्म गुरूओं ने शॉल एवं श्रीफल भेंट कर विधायक डॉ. सिकरवार को सम्मानित किया। सामाजिक संगठनों एवं कार्यकर्ताओं ने जगह-जगह गरीबों के बीच मनाया जन्मदिन सामाजिक संगठनों द्वारा जगह-जगह मंदिरों पर पूजा-अर्चना कर सुन्दरकाण्ड, अखण्ड रामायण पाठ एवं भण्डारा का आयोजन कर गरीबों के बीच विधायक डॉ. सिकरवार का जन्मदिन मनाया गया। इसके साथ ही कार्यकर्ताओं द्वारा जे.एच. अस्पताल परिसर में भोजन कराया गया। डॉ. सिकरवार के जन्मदिन पर श्री काशीराम साहब कॉलोनी, शिन्दे की छावनी आचार्य सत्यदेव उपाध्याय के निवास एवं यशोदा टावर के निवासियों ने विधायक की मौजूदगी में कार्यक्रम आयोजित कर जन्मदिन मनाया। विधायक डॉ. सिकरवार को जन्मदिन की बधाई देने पहुंचे स्नेहीजनों में से दो हजार से अधिक लोग केक लेकर पहुंचे और सेल्फी फोटो के साथ केक काटे। शहर भर से कांग्रेस कार्यकर्ता एवं समर्थक गाजे-बाजे के साथ नाचते हुए सतीश सिकरवार जिंदाबाद के नारे लगा रहे थे। विधायक डॉ. सिकरवार के जन्मदिन पर प्रातः 8 बजे से स्नेह भोज का आयोजन शुरू हुआ, जो देर रात तक चलता रहा। सहभोज में हजारों की संख्या में स्नेहीजन शामिल हुये। विधायक डॉ. सिकरवार ने कहा कि मेरे जन्मदिन के अवसर पर आप सभी के प्यार और स्नेह के लिये मैं आप सभी का हृदय की गहराईओं से आभार व्यक्त करता हूँ और अपेक्षा करता हूँ कि मुझ पर आप सभी का इसी तरह आर्शीवाद बना रहे।

भाजपा ने विधानसभा चुनाव के मद्देनजर मध्य प्रदेश के 39 और छत्तीसगढ़ के 21 उम्मीदवारों का एलान कर दिया है। दोनों राज्यों में इस साल ही चुनाव होने हैं। विधानसभा चुनाव के एलान से पहले ही पहली सूची की घोषणा कर भाजपा ने अपनी आक्रामक रणनीति साफ कर दी है। इससे पहले भाजपा की केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक बुधवार को नई दिल्ली के पार्टी मुख्यालय में आयोजित हुई थी। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री रमन सिंह ने बैठक के दौरान विचार-विमर्श में भाग लिया था। पूर्व मंत्री लाल सिंह आर्य, ओम प्रकाश धुर्वे, ललिता यादव, निर्मला भूरिया, ऐंदल सिंह कंसाना, अंचल सोनकर और नाना भाऊ मोहोड़ को विधानसभा टिकट मिली है. भोपाल से कांग्रेस के गढ़ भोपाल उत्तर से पूर्व मेयर आलोक शर्मा को मौक़ा मिला है, वो एक बार यहाँ से चुनाव हार चुके हैं. भोपाल मध्य से पूर्व विधायक धुवनारायण सिंह पर दांव लगाया गया है.

भाजपा की पहली लिस्ट में सिंधिया खेमे को झटका

मप्र में हारी हुई सीटों पर प्रत्याशियों का ऐलान

मप्र विधानसभा चुनाव में पार्टी ने 23 विधानसभा क्षेत्रों में नए चेहरे उतारे हैं।2018 में हारे 23 प्रत्याशियों को नहीं दी टिकट।उपचुनाव 2020 में सिंधिया के साथ आए रणवीर जाटव को भी गोहद से नहीं दी टिकट। कर्नाटक की हार से सबक लेते हुए भारतीय जनता पार्टी अब मध्य प्रदेश में पराजय झेलने को तैयार नहीं है। पार्टी ने पहली बार मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव से तीन महीने पहले केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक की और सभी दलों को चौंकाते हुए मप्र की 39 सीटों पर प्रत्याशियों की घोषणा कर दी।

लाल सिंह आर्य, गोहद

ऐदल सिंह,सुमावली

प्रीतम लोधी, पिछोर

सरला रावत, सबलगढ़

प्रियंका मीणा, चांचोड़ा

जगन्नाथ रघुवंशी, चंदेरी

बीजेपी ने 39 सीटों पर उम्मीदवार घोषित किए

सीट पर ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ भाजपा में आए रणवीर जाटव को टिकट नहीं दिया है। वहीं, पूर्व मंत्री लालसिंह आर्य पर भरोसा जताया है। ललिता यादव (छतरपुर), लाल सिंह आर्य (गोहद), ओमप्रकाश धुर्वे (शाहपुरा), अदल सिंह कंसाना (सुमावली) और नानाभाऊ मोहोड़ (सौंसर) समेत छह पूर्व मंत्रियों को उम्मीदवार बनाया है। इसी तरह पूर्व विधायकों ध्रुव नारायण सिंह (भोपाल मध्य), राजकुमार मेव (महेश्वर), चंद्रशेखर देशमुख (मुल्ताई), सतीश मालवीय (घाटिया), और महेंद्र सिंह चौहान (भैंसदेही) को भी तो 2020 में उपचुनाव में कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़े कुशवाह ने उन्हें हरा दिया था। हार का अंतर दस हजार से कम वोट का था।

भिंड में गोहद (अजा) में सिंधिया खेमे को झटका लगा है। सिंधिया के साथ भाजपा में आए रणवीर जाटव 2020 के उपचुनाव में अपनी सीट कायम नहीं रख सके थे। अब भाजपा ने भाजपा अजा मोर्चा के बड़े नेता और पूर्व मंत्री लालसिंह आर्य पर फिर भरोसा जताया है। आर्य इस सीट पर 2013 में विधायक रहे हैं और राज्यमंत्री भी रहे थे। शिवपुरी की पिछोर सीट पर भाजपा ने प्रीतम लोधी को

इनमें से 13 अनुसूचित जनजाति(एसटी), आठ अनुसूचित जाति (एससी) और 18 सामान्य सीटें हैं। ये सभी हारी हुई सीटें हैं, जिन पर कांग्रेस या अन्य दल के विधायक काबिज हैं। मप्र विधानसभा चुनाव में पार्टी ने 23 विधानसभा क्षेत्रों में नए चेहरे उतारे हैं। वहीं, कमल नाथ सरकार गिराने के लिए कांग्रेस छोड़कर भाजपा में आए रणवीर जाटव को टिकट नहीं मिला है। जाटव ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ भाजपा में आए थे और वर्ष 2020 में उपचुनाव में हार गए थे। उपचुनाव हारने वाले एंदल सिंह कंसाना पर भाजपा ने दोबारा भरोसा जताया है। भाजपा ने न तो चुनावों की घोषणा का इंतजार किया और न ही कांग्रेस की सूची आने का। 39 सीटों पर अपने उम्मीदवारों के नाम घोषित कर दिए। वह भी चुनावों से तकरीबन चार महीने पहले। इसमें भिंड जिले की गोहद चुनाव मैदान में उतारा है। वहीं, छह नए चेहरों को भी मौका दिया गया है। जो टिकट घोषित हुए हैं, उनमें आठ अजजा और सात अजा वर्गों के लिए आरक्षित सीटें शामिल हैं। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने दावा किया कि प्रत्याशी में अब कोई परिवर्तन नहीं होगा। मुरैना जिले की सबलगढ़ सीट पर भाजपा ने सरला विजेंद्र रावत को टिकट दिया है। 2018 में कांग्रेस के बैजनाथ कुशवाह ने यह सीट जीती थी। तब रावत तीसरे स्थान पर रही थीं। फिर भी जीत का अंतर 10 हजार वोट से कम रहा था। मुरैना जिले की ही सुमावली सीट पर कांग्रेस से भाजपा में आए पूर्व मंत्री अदल सिंह कंसाना को टिकट दिया है। यहां की लड़ाई बेहद दिलचस्प है। कंसाना 2018 में कांग्रेस के टिकट पर जीते। उन्होंने भाजपा के अजब सिंह कुशवाह को हराया था। सिंधिया के साथ कंसाना भाजपा में आए टिकट दिया है। दिलचस्प बात यह है कि ब्राह्मणों और कथावाचकों पर टिप्पणी करने को लेकर प्रीतम लोधी को पार्टी से निकाल दिया गया था। उमा भारती के करीबी लोधी की वापसी कुछ ही महीने पहले भाजपा में हुई है। 2018 में लोधी इसी सीट पर भाजपा के टिकट से चुनाव लड़े थे और सिर्फ 2675 वोट से हारे थे। 2003 में यशोधरा राजे सिंधिया यहां से जीती थी और उसके बाद यह सीट आरक्षित हो गई और तब से कांग्रेस जीत रही है। गुना जिले की चाचौड़ा विधानसभा सीट पर भाजपा ने प्रियंका मीणा को उम्मीदवार बनाया है। भाजपा की ममता मीणा ने 2013 में जीत हासिल की थी। 2018 में उन्हें कांग्रेस के लक्ष्मण सिंह ने 9797 वोट से हराया था। प्रियंका छह महीने पहले ही भाजपा में आई हैं। उनके पति भारतीय राजस्व सेवा के अधिकारी हैं।

सिंधिया ने जनता से पूछा- शिव-ज्योति की जोड़ी पसंद है

● पुष्पांजली टुडे, शिवपुरी

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने शिवपुरी जिले के पिछोर को जिला बनाने की घोषणा की है। इसके लिए उन्होंने शर्त रखी है। उन्होंने पिछोर की जनता से कहा कि एक वादा तुम करो और एक वादा मैं करता हूं। प्रीतम लोधी को विधायक तुम बनाओ, पिछोर को जिला बनाकर मैं दूंगा। सीएम शिवराज सिंह चौहान सोमवार को पिछोर में आयोजित जनदर्शन और लाड़ली बहना सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने कहा कि हम जो कहते हैं वो करते हैं। मैं विश्वास दिलाता हूं कि आपके सपनों को टूटने नहीं दूंगा। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। उन्होंने दिग्विजय सिंह और कमलनाथ पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि छोटे भाई और बड़े भाई की जोड़ी ने किसानों को डिफॉल्टर बना दिया। बेरोजगारों को रोजगार नहीं दिया। इसी के चलते कांग्रेस सरकार को गिराना पड़ा। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि कांग्रेस ने किसान कर्ज माफी के झूठे प्रमाण पत्र बांटे। हमारे किसानों को डिफाल्टर बना दिया। बेरोजगारों को रोजगार भत्ता देने का वादा किया। दिया नहीं। सीएम शिवराज सिंह ने ढाई हजार करोड़ रुपए सहकारिता बैंक को दिए हैं। साथ ही बेरोजगार नौजवानों के लिए सीखो कमाओ योजना लागू की है। सिंधिया ने मंच से कहा कि आप कौन सी जोड़ी को चाहते हैं। छोटे भाई और बड़े

भाई की जोड़ी या फिर शिव-ज्योति की जोड़ी। फैसला आपके हाथ में है। सीएम बोले- शिव-ज्योति की जोड़ी बहाएगी विकास की गंगा जनसभा को संबोधित करते हुए सीएम शिवराज ने कहा कि शिव-ज्योति की जोड़ी पिछोर में विकास की गंगा बहाएगी। सीएम ने मंच से लाड़ली बहना योजना की राशि बढ़ाने की भी बात कही है। सीएम शिवराज ने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आज भारत चांद पर झंडा फहराने वाला है। सीएम ने कहा कि मासूमों के साथ दुराचार करने वालों को फांसी पर लटकाया जाएगा। इसके साथ ही बुलडोजर की कार्रवाई भी जारी रहेगी। पिछोर विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी बनाए गए प्रीतम लोधी ने कहा कि वह कभी क्षेत्र की जनता को पीठ नहीं दिखाएंगे। वह उनके कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रहेंगे। बता दें कि पिछोर विधानसभा में पिछले 30 सालों से कांग्रेस का कब्जा है।

ऊर्जा मंत्री तोमर ने कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक एवं निगमायुक्त के साथ उपनगर ग्वालियर में कराये जा रहे विभिन्न विकास कार्यों का किया निरीक्षण

● पुष्पांजली टुडे, ग्वालियर

ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने उपनगर ग्वालियर के राठौर चौक गदाईपुरा, जलालपुर चौराहा, सागरताल रोड एवं चौराहा, बहोडापुर चौराहा, एबी रोड बहोडापुर से रामाजी का पुरा तक विभिन्न विकास कार्यों को लेकर कलेक्टर श्री अक्षय कुमार सिंह, पुलिस अधीक्षक श्री राजेश चंदेल, नगर निगम आयुक्त श्री हर्ष सिंह सहित पीडब्ल्यूडी, विद्युत सहित अन्य विभाग के अधिकारियों के निरीक्षण किया। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने उपनगर ग्वालियर के विभिन्न क्षेत्रों में क्रियान्वित विकास कार्य, सड़क, सीवर, पेयजल एवं स्वच्छता सहित आदि व्यवस्थाओ का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर श्री सिंह से कहा कि सभी विभागों की एक संयुक्त टीम बनायें जो विकास कार्यों का प्रतिदिन निरीक्षण करें। जिससे विकास कार्यों में रफ्तार आये। इसके साथ ही जहां आवश्यकता है वहां

दिन रात कार्य करायें और जो भी कार्य किए जा रहे हैं उनकी गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा जाए। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर सबसे पहले राठौर चौक पहुंचें जहां उन्होंने राठौर चौक पर बनाये गए पुलिस सहायता केन्द्र को लेकर पुलिस अधीक्षक श्री चंदेल से कहा कि पुलिस सहायता केन्द्र पिछले कुछ माह से बंद है, इस सहायता केन्द्र पर प्रोपर पुलिस के जवान रहे तथा रात्रि गस्त भी बडाई जाए।

मुरैना एसपी के शक्त निर्देश पुलिस की कार्य के प्रति लापरबाही बिल्कुल बर्दास्त नही की जावेगी : शैलेन्द्र सिह चौहान

● केशव प्रसाद शर्मा, ब्यूरो पुष्पांजली टुडे, मुरैना

मुरैना पुलिस अधीक्षक शैलेन्द्र सिह चौहान ने मुरैना पुलिस को कड़े रूप में अपने संदेश में कहा है कि अवैध शराब और अवैध उत्खनन किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं होगा इसमे सौहरत कतई बर्दास्त नही होगी आमजन को भरोसा दिलाते हुए कहा कि अब अपराधियों से भयभीत होने की जरूरत नहीं है अब आम जनता की समस्याओं का समय सीमा में निराकरण होकर उन्हें न्याय मिल सके, इस तरह की कार्यप्रणाली पुलिस में विकसित कर दी जायेगी।

उन्होंने स्पष्ट किया कि किसी भी अपराधिक घटना में पुलिस की संलिप्तता का संदेश नहीं आयेगा मुरैना पुलिस को शक्त हिदायत देकर कई माध्यमो से सचेत कर दिया है अपना काम जिम्मैदारी से करे और पैसे के लैन देन की सूचना किसी भी प्रभारी की मिली तो कारबाही तो निश्चित है लम्बी बिभागी जॉच भी होगी रेत इन्ट्री की मुझे सूचना मिल रही है सचेत होजाये ट्रक व टैक्टरो से पुलिस व प्राइबेट आदमी बसूली करते पाया गया तो यह गाज सीधे थाना प्रभारी पर गिरैगी और लम्बी जॉच भी होगी इस लिये कार्य के प्रति पूरी निष्ठा भाव के साथ पुलिस यूनिफॉर्म में कार्य पूरी ईमानदारी से करे सब कार्य जनहित में हो फालतू कार्यो से कोई समझौता नहीं होगा वहीं उन्होंने कहा भूमि संबंधी अपराधों में किसी भी प्रकार की कोई

लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी भूमि संबंधी विवादों का निराकरण भी मेरी पहली प्राथमिकता होगी शिकायत मिलते ही संबन्धित राजस्ब पटबारी को लेकर मौका मुआयना कर समझायस देकर निबटारा कराये उन्है हम पुरूस्कृति भी करेगे कानून व्यवस्था के साथ खिलवाड़ कतई बर्दाश्त नहीं की जाबेगी पुलिस अधीक्षक ने सभी थाना प्रभारी चौकी प्रभारियों को सेट पर क्लास लगाते हुए कानून व्यवस्था के साथ खिलवाड़ करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने को कहा। उन्होंने कहा कि अपराध पर अंकुश लगाने और अपराधियों की धरपकड़ को लेकर सभी पुलिस अधिकारी किसी भी कोताही से बचें।लंबित विवेचनाओं का जल्द हो निस्तारण उन्होंने बताया कि लंबित विवेचनाओं का निस्तारण जल्द से जल्द किया जाए। साथ ही चौकी पर आने वाले फरियादियों की पूरी सुनवाई की जाए। किसी भी पुलिस अधिकारी के खिलाफ शिकायत मिलने पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने वाहनों की चेकिंग को अभियान चलाकर नियमित किए जाने का भी निर्देश दिया और कहा कि ट्रैफिक रूल तोड़ने वालों के खिलाफ विधि मुताबिक कार्रवाई प्रतिदिन की जाए। थाने और चौकियां रात्रि गश्त पर भी विशेष ध्यान दें।पुलिस का व्यवहार आम जनता के साथ (पुलिस व्यवहार)?आम लोगो के सहयोग के बिना पुलिस के पने मकसद की प्राप्ति नहीं हो सकती. अपराधो की रोकथाम, समाज में शांति व्यवस्था बनाये रखना पुलिस की प्रमुख जवाबदेही है. अकेले अपने दम पर इन कार्यो में पुलिस सफल नहीं हो सकती. इसके लिए उन्हें हर हालत में जन सहयोग चाहिए. जन सहयोग प्राप्त करने के लिए जरुरी है की जनता के साथ पुलिस का अच्छा और आदरपूर्वक व्यवहार हो. आज आम आदमी के मन में पुलिस के प्रति बहुत बुरी भावना रहती है. लोग पुलिस को गली गलौज करने वाला, बेमतलब लोगो से मारपीट करने वाला और परेशन करनेवाला, चरित्रहीन, नशाखोर आदि समझते है. वे जानते हुवे भी पुलिस को कोई सहयोग और जानकारी नहीं देते है . इन सबके पीछे कारन पुलिस का जनता के प्रति खराब व्यवहार है. जब तक पुलिस अपने व्यवहारों में सुधर नहीं लाती है तब तक उनकी छवि में सुधार नहीं हो सकता है

रामायण के सबसे प्रमुख पात्रों में से एक हैं जामवंत

प्रस्तुतकर्ता : दिलीप मिश्रा
(साहित्य साधक,लेखक)
ग्वालियर, म. प्र.

त्रेता से द्वापर यानि भगवान श्री राम के युग से योगेश्वर श्रीकृष्ण के युग तक रहे जाम्बवन्त जी कौन थे ? जामवंत रामायण के सबसे प्रमुख पात्रों में से एक हैं। हालाँकि उनकी गिनती सप्त-चिरंजीवियों में नहीं की जाती, किन्तु वे भी एक चिरंजीवी ही थे जिन्होंने द्वापरयुग में निर्वाण लिया। उनकी आयु अन्य सातों चिरंजीवियों से भी अधिक मानी जाती है। उनके जन्म के विषय में भी अलग-अलग कथाएं प्रचलित हैं।

एक कथा के अनुसार एक बार जब ब्रह्मा जी तप में लीन थे, उन्हें जम्हाई आ गयी और उससे ही प्रथम ऋक्ष (रीछ) का जन्म हुआ। उनकी जम्हाई से जन्म लेने के कारण उनका नाम जामवंत पड़ा। विष्णु पुराण के अनुसार जब ब्रह्मा जी से मधु और कैटभ नामक दैत्यों ने जन्म लिया तो उस समय ब्रह्मा जी के पसीने से जामवंत का जन्म हुआ। ऐसा भी वर्णित है कि जब श्रीहरि का युद्ध मधु और कैटभ से हो रहा था तो जामवंत प्रसन्नतापूर्वक ताली बजा रहे थे। अंत में जब श्रीहरि ने दोनों राक्षसों का वध किया तो जामवंत अत्यंत प्रसन्न हुए।

अग्नि पुराण के अनुसार जामवंत का जन्म अग्नि से हुआ और उनकी माता एक गन्धर्व स्त्री थी। उनकी पत्नी का नाम जयवंती बताया गया है। रामायण में कई स्थानों पर इन्हे वानर ही कहा गया है। जामवंत की आयु बहुत लम्बी थी। ऐसा माना जाता है कि श्रीराम अवतार के. समय जामवंत की आयु छह मन्वन्तर से भी अधिक थी। उन्होंने मत्स्य अवतार को छोड़ कर कूर्म अवतार से लेकर श्रीकृष्ण अवतार तक सभी के दर्शन किये। अर्थात श्रीहरि के सात अवतारों के समय वे उपस्थित थे। उन्होंने प्रथम देवासुर संग्राम में भी भाग लिया था। उन्हें अत्यंत विद्वान, बुद्धिमान, वेदपाठी और सदा अध्ययन करने वाला बताया गया है। उन्हें सभी वेद, पुराण, शास्त्र कंठस्थ थे। श्रीराम की सेना में वे सबसे वयोवृद्ध और बुद्धिमान थे और इसी कारण श्रीराम भी उनका बड़ा सम्मान करते थे और उनसे सलाह लिया करते थे। उनका आकार बहुत विशाल बताया गया है। आकार में वे कुम्भकर्ण से तनिक ही छोटे थे। जब लक्ष्मण को शक्ति लगी तो उन्होंने ही हनुमान को चार दुर्लभ बूटियों के बारे में बताया था जिनमे से एक संजीवनी थी। जब सुग्रीव ने वानर सेना को माता सीता की खोज में चारों दिशाओं में भेजा तो अंगद के नेतृत्व में जामवंत, हनुमान इत्यादि दक्षिण दिशा में गए। सुग्रीव ने विशेष रूप से जामवंत को अंगद के साथ भेजा ताकि वे अपने अनुभव से दल का सुरक्षित नेतृत्व कर सकें। जब सागर तट पर पहुंच कर सभी उस विशाल समुद्र को देख कर हताश हो जाते हैं तो जामवंत ही हनुमान को उनकी शक्तियों का भान करवाते हैं जिसके बाद हनुमान समुद्र को लांघते हैं। लंका कांड में जामवंत के विषय में अधिक वर्णन दिया गया है। उन्होंने बड़ी चतुराई से सेना का सञ्चालन किया और एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाई। रामचरितमानस के अनुसार उन्होंने युद्ध में यज्ञकूप नामक राक्षस का वध किया था। उन्होंने रावण से भी युद्ध किया और उसपर पाद-प्रहार किया जिससे रावण मूर्छित हो गया। मेघनाद

से भी उनके युद्ध का वर्णन है जब मेघनाद की फेंकी शक्ति को उन्होंने हवा में ही पकड़ कर उसपर ही छोड़ दिया। उसी युद्ध में जामवंत के प्रहारों से मेघनाद भी मूर्छित हो गया था। भागवत पुराण और विष्णु पुराण में जामवंत की शक्ति के विषय में बताया गया है। उनकी शक्ति 10000000 (एक करोड़) सिंहों की शक्ति के बराबर कही गयी है। रामचरितमानस के अनुसार जब वानर दल समुद्र पार करने परामर्श कर रहा था तब सभी अपनी-अपनी क्षमता द्वारा उस समुद्र को पार करने की बात कर रहे थे। उस समय सबने जामवंत से ये प्रार्थना की कि सबसे बड़े होने के कारण वही उस समुद्र को पार करने का कोई उपाय बताएं। तब जामवंत ने सबको अपने बल के बारे में बताया। जामवंत ने कहा कि इस समय मैं अत्यंत बूढ़ा हो गया हूँ फिर भी मैं एक बार में 90 योजन तक जा सकता हूँ। जब मैं युवा था तो मैंने समुद्र मंथन देखा था। उस समय मुझमें इतना बल था कि देवों और दैत्यों के थक जाने पर मैंने अकेले ही पूरे मंदराचल पर्वत को घुमा दिया था। उसे देख कर स्वयं मेरे पिता ब्रह्मा ने मेरी प्रशंसा की थी। जब श्रीहरि ने वामन अवतार लिया और दैत्यराज बलि के पास आये तब मैं वहीँ था। जब उन्होंने बलि द्वारा दी गयी तीन पग भूमि को नापने के लिए अपना विराट स्वरुप लिया तब उस समय मैंने केवल सात क्षणों में भगवान वामन सहित पृथ्वी की सात परिक्रमा कर डाली। जब मैं परिक्रमा कर वापस लौटा तब तक भगवान वामन दैत्यराज बलि को पूरी तरह बांध भी नहीं पाए थे। कहीं कहीं उनके द्वारा पृथ्वी की 21 परिक्रमा करने के बारे में लिखा गया हैये सुनकर सबने पूछा कि आप इतने शक्तिशाली थे तो आपका बल क्षीण कैसे हो गया? इस पर जामवंत बताते हैं कि भगवान वामन के पृथ्वी को नापते समय जब मैं अत्यंत तीव्र वेग से उनकी परिक्रमा कर रहा था तो अंतिम परिक्रमा के समय मेरे पैर के अंगूठे का नाखून महामेरु पर्वत से छू गया जिससे उसका शिखर खंडित हो गया। इसे मेरु ने अपना अपमान माना और मुझे मेरे बल के क्षीण हो जाने का श्राप दे दिया। जब लंका युद्ध समाप्त हुआ तो श्रीराम सबके बल की प्रशंसा कर रहे थे। उस समय जामवंत बड़े निराश होकर श्रीराम के पास आये और उनसे कहा कि प्रभु! मैंने तो सोचा था कि युगों बाद मुझे इस युद्ध में आनंद आएगा किन्तु पूरा युद्ध समाप्त हो गया और मेरे शरीर से पसीने की एक बून्द भी नहीं गिरी। लगता है मुझे वास्तविक युद्ध के लिए अभी और प्रतीक्षा करनी होगी। उन्हें ऐसा कहते देख श्रीराम समझ गए कि जामवंत के मन में अहंकार आ गया है। तब उन्होंने जामवंत से कहा कि प्रतीक्षा करो, द्वापर में स्वयं तुम्हारी युद्धाभिलाषा पूर्ण करूँगा। जब द्वापर में श्रीकृष्ण ने अवतार लिया तो सत्राजित ने उनपर समयान्तक मणि के चोरी का आरोप लगा दिया। वास्तव में वो मणि सत्राजित का ही भाई ले गया था जिसे एक शेर ने मार दिया। फिर जामवंत ने उस सिंह को मार कर वो मणि अपनी बेटी को दे दी।जब श्रीकृष्ण उस मणि को ढूढ़ने निकले तो वे जामवंत की गुफा में पहुंचे। वहाँ जब उन्होंने मणि देखी तो उसे लेना चाहा। इसपर श्रीकृष्ण और जामवंत में घोर युद्ध हुआ। भागवत पुराण के अनुसार वो युद्ध 28 दिनों तक लगातार चलता रहा। वही विष्णु पुराण के अनुसार ये युद्ध 21 दिनों तक चला था। अंत में जामवंत पसीने से लथपथ हो गए और थक गए। जब वे परास्त होने लगे तब उन्होंने श्रीराम का स्मरण किया। ऐसा करते हीं श्रीकृष्ण ने ही उन्हें श्रीराम के रूप में दर्शन दिए। जामवंत समझ गए कि अपने दिए वचन के कारण स्वयं श्रीराम श्रीकृष्ण के रूप में अवतरित हुए हैं। उनका अभिमान भंग हो गया और उन्होंने श्रीकृष्ण के स्वरुप को पहचान कर उनसे क्षमा याचना की। बाद में उन्होंने अपनी पुत्री जाम्बवंती का विवाह श्रीकृष्ण से कर दिया और स्वयं निर्वाण ले लिया। ऐसा माना जाता है कि जामवंत ने ही जामथुन नगर बसाया था जो आज मध्यप्रदेश के रतलाम जिले में है। यहाँ पर एक गुफा है जिसे जामवंत गुफा के नाम से जाना जाता है। इसके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश के बरेली में भी जामवंत तपोगुफा नामक एक गुफा है। माना जाता है कि जामवंत यही त्रेता से द्वापर तक प्रतीक्षा की थी। गुजरात के राणावाव में भी एक प्राचीन गुफा है जिसे जामवंत की गुफा ही माना जाता है।

(साभार- विष्णु पुराण)

मध्य भारतीय हिन्दी साहित्य सभा की इंगित काव्य गोष्ठी हुई संपन्न

महेन्द्र शर्मा उपसंपादक पुष्पांजली टुडे

मध्य भारतीय हिन्दी साहित्य सभा ग्वालियर की सुप्रसिद्ध और गरिमापूर्ण काव्य गोष्ठी इंगित सांध्य की मौदमयी वेला में सभा भवन में सम्पन्न हुई। गोष्ठी के मुख्यातिथि डबरा ग्वालियर से पधारे सुप्रसिद्ध गीतकार श्री राजवीर खुराना, विशेष अतिथि डा.कादम्बरी आर्य,सारस्वत अतिथि सभा के पूर्व अध्यक्ष राजकिशोर वाजपेई अभय रहे तथा गोष्ठी की अध्यक्षता सभा के पूर्व उपाध्यक्ष दिलीप मिश्रा ने की एवं संचालन गीतकार कमलाशंकर मिश्र ने किया संयोजन राम चरण रुचिर ने किया। गोष्ठी का प्रारम्भ अतिथियों द्वारा मां वीणापाणी के पूजन से हुआ और सरस्वती वंदना रेखा दीक्षित ने प्रस्तुत की । इस गोष्ठी में आमंत्रित अतिथियों राजवीर खुराना,डा.कादम्बरी आर्य, राजकिशोर वाजपेई अभय दिलीप मिश्रा के अलावा नगर के कवि रामलखन शर्मा अंकित, रेखा दीक्षित,अनिल राही, उदयभान रजक, उमा उपाध्याय,आरती अक्षत,किरण शाह,चेतराम सिंह भदौरिया, अमरसिंह यादव, जगमोहन श्रीवास्तव,दिनेश

विकल, जगदीश लोकवानी, रमेश निर्झर , रमेश कटारिया पारस, डॉ.रमेश त्रिपाठी मछंड, रामलाल साहू बेकस ,डॉ .कमलाशंकर मिश्र, डॉ.सुधीर चतुर्वेदी,एवं श्यामलाल माहौर आदि कवियों ने काव्यपाठ किया।

इसके साथ ही उमा उपाध्याय, कादंबरी आर्य,अमर सिंह यादव , जगमोहन श्रीवास्तव ,दिनेश विकल आदि ने सुंदर कविताओं की प्रस्तुति दी इस अवसर पर सभा के सह मंत्री उपेंद्र कस्तूरे, राकेश पांडे दीपक कॉल सहित अनेक गणमानजन सभा में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में इंगित काव्य गोष्ठी सफलतापूर्वक सम्पन्न होने पर सभा की ओर से राजकिशोर वाजपेई अभय ने सभी का आभार व्यक्त किया।

मुंशी प्रेमचंद की कहानियां मूल्यपरक संदेश प्रसारित करतीं हैं

● महेन्द्र शर्मा उपसंपादक पुष्पांजली टुडे

ग्वालियर। मध्य भारतीय हिंदी साहित्य सभा ग्वालियर के तत्वावधान में सभा भवन में मुंशी प्रेमचंद के जन्म दिवस पर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता शिक्षाविद एवं वरिष्ठ साहित्यकारजगदीश तोमर ,पूर्व निदेशक, प्रेमचंद सृजनपीठ उज्जैन के द्वारा की गई।

मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ कथाकार सीमा जैन ग्वालियर रहीं। वक्ता के रूप में डॉ साधना जैन ,प्राध्यापक एवं साहित्यकार, ग्वालियर एवं वरिष्ठ साहित्यकार अनंगपाल सिंह भदौरिया 'अनंग' सहित साहित्य सभा के प्रतिनिधि के रूप में डॉ कुमार संजीव सभाध्यक्ष मंचासीन रहे। प्रारम्भ में अतिथियों द्वारा मां सरस्वती की प्रतिमा पर दीप प्रज्ज्वलित कर माल्यार्पण किया। सरस्वती वंदना सुभाष वर्मा व्याप्ति उमड़ेकर द्वारा प्रस्तुत की गई। अतिथियों का स्वागत सभा अध्यक्ष डॉ.कुमार संजीव ,दिलीप मिश्रा एवं डॉ मंदाकिनी शर्मा द्वारा किया गया। सभा का संचालन जाह्नवी नाईक ने किया। प्रारम्भ में बाल कथाकार प्रियांशु ने ठाकुर का कुंआ नामक एक कहानी प्रस्तुत की। अगले क्रम में वक्ता के रूप में अनंग पाल सिंह भदौरिया अनंग ने कहां कि मुंशी प्रेमचंद ने अपने साहित्य में सामाजिक मूल्यों का सूक्ष्म निरीक्षण किया एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उनकी कहानियां बहुत ही प्रभावी और प्रासंगिक हैं । शरद चंद्र चट्टोपाध्याय ने उन्हें उपन्यास सम्राट का नाम दिया।अगले क्रम में साधना जैन ने कहा कि मुंशी प्रेमचंद जी ऐसे रचनाकार रहे जो विश्व पटल पर अपनी अमिट छाप छोड़

गए और भी आज भी प्रासंगिक हैं। उन्होंने कलात्मकता के साथ द्वंद्व -अंतर्विरोध व संघर्षों के बीच अपना लेखन जीवित रखा। उनका लेखन 1906 से 1936 तक रहा। राष्ट्रवादी चिंतन उनका प्रमुख रूप से रहा÷ दो बैलों ÷ की कहानी के माध्यम से समाज को दर्पण दिखाया। उन्होंने कहा ,हमें अपनी जड़ों की ओर लौटना होगा। अगले क्रम में वरिष्ठ कथाकार सीमा जैन ने कहा, कि ÷मुंशी प्रेमचंद ने समाज की विसंगतियों पर उत्कृष्ट लेखन किया प्रेमचंद ने अपने जीवन में जो देखा है वही लिखा है, उनका लेखन जीवंत एवं प्रेरक रहा है। ÷उन्होंने कहा, जो आत्मा के लिए किया जाता है ,वह अमर हो जाता है ,जब हम स्वयं के लिए लिखते हैं, वह अस्थाई एवं मृतप्राय हो जाता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ कथाकार एवं प्रेमचंद्र सृजन पीठ उज्जैन के पूर्व निदेशक ,जगदीश तोमर ने कहा, कि प्रेमचंद्र का समग्र साहित्य दृष्टिपरक है। उनके द्वारा लिखित ÷बूढ़ी काकी÷ जैसी कहानियों की अति आवश्यकता है। हमारे समाज में, हमारे जीवन में ,घरों के बाहर रहकर जीवन यापन करने पर घरों की उपेक्षा हो रही है । प्रेमचंद की हर कहानी मूल्यवान संदेश प्रसारित करती है। प्रेमचंद कभी नहीं मरेंगे हमें उन्हें कभी नहीं मरने देना चाहिए। उनका लेखन अमर है। इस अवसर पर सभा के उपाध्यक्ष दिनेश पाठक, सुनीता पाठक , प्रकाश मिश्रा, दिलीप मिश्रा,डॉ वंदना सेन, रामचरण ÷रुचिर÷ सभा के प्रचार-प्रसार मंत्री, उपेंद्र कस्तूरे सह मंत्री, धीरज शर्मा, सभा मंत्री, डॉक्टर किंकर पाल सिंह जादौन, अनिल राही जगमोहन श्रीवास्तव, रमेश कटारिया पारस एवं सुरेश हिंदुस्तानी सहित अनेक गणमान्य एवं भारी संख्या में साहित्यकार उपस्थित रहे।

शहीद स्वर्गीय श्री सुधाकर शर्मा जी की मूर्ति का हुआ अनावरण

● सोनू कुमार माथुर, पुष्पांजली टुडे ब्यूरो, एटा

उत्तर प्रदेश मिनिस्ट्रीयल कलेक्ट्रेट कर्मचारी संघ क्लब एटा के तत्वाधान में शहीद स्व0श्री सुधाकर शर्मा जी पूर्व प्रान्तीय महामंत्री की प्रतिमा का हुआ अनावरण व वृक्षारोपण । इस सुअवसर पर जिलाधिकारी एटा श्री अंकित अग्रवाल जी,अपर जिलाधिकारी प्रशासन श्री आलोक कुमार जी प्रान्तीय महामंत्री श्री अरविंद कुमार वर्मा जी,प्रान्तीय संयुक्त मन्त्री श्री अजीत उपाध्याय जी ,प्रान्तीय संगठन मंत्री/जिलाध्यक्ष मेरठ श्री मुकेश कुमार जी ,प्रान्तीय प्रवक्ता श्रीमती नीरू सिंह जी,जोनल अध्यक्ष श्री राजेश कुमार जी,जिलामंत्री मेरठ श्री दीपक कौशिक जी,वरिष्ठ उपाध्यक्ष मेरठ श्री शकील अहमद जी,सदस्य प्रान्तीय कार्यकारिणी/ जिलाध्यक्ष एटा श्री राजकुमार जी, मंडल मन्त्री श्री राम प्रकाश जी,जिलामंत्री एटा श्री ललित कुमार जी,ऑफिसियल क्लब एटा के अध्यक्ष श्री

हरिनन्दन सिंह जी ,मन्त्री श्री एश्वर्य प्रताप सिंह जी एवम कोषाध्यक्ष देव देवेश मौर्य आदि व कलेक्ट्रेट के सभी कर्मचारी साथियों के साथ उपस्थित रहे । हमारे आदर्श कर्मचारी नेता स्व0 सुधाकर शर्मा जी के सुपुत्र श्री वैभव शर्मा जी,श्री वरुण शर्मा जी भतीजे श्री सौरभ शर्मा की उपस्थिति कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रहा । सुधाकर शर्मा अमर रहे । जबतक सूरज चांद रहेगा सुधाकर शर्मा तेरा नाम रहेगा के उदघोष से वातावरण गुंजायमान हो गया ।स्व0 सुधाकर शर्मा जी को कोटि कोटि नमन।

लायंस क्लब प्राइस द्वारा तीज उत्सव का किया आयोजन

● सोनू कुमार माथुर, पुष्पांजली टुडे ब्यूरो, एटा

होटल ग्रैंड स्पाइस में लायंस क्लब प्राइड द्वारा तीज उत्सव का भव्य आयोजन किया गया श्रीमती प्रेमलता डेविड धर्मपत्नी सदर विधायक एसडीएम श्रीमती भावना विमल , रेणुका कुशवाह धर्मपत्नी एएसपी, एटा श्रीमती रचना धर्मपत्नी सीओ सिटी एटा, श्रीमती अनामिका धर्मपत्नी जेल सुपरिंटेंडेंट एटा लायंस क्लब की एग्जीक्यूटिव हेड लता सिंह ,अध्यक्ष राजकुमारी सीमा वार्ष्णेय, कोषाध्यक्ष बबीता कुलश्रेष्ठ ,सचिव प्रतिभा यादव ने दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम का आगाज किया प्रोग्राम में आए हुए अतिथियों का स्वागत क्लब की अध्यक्षा श्रीमती राजकुमारी सीमा वार्ष्णेय व क्लब के सभी मेंबरों द्वारा किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत लॉयन्स क्लब के द्वारा नि शुल्क सिलाई केंद्र की जो बच्चियां एक कोर्स पूरे हो गए हैं उनको हमारी स्छरू भावना बिमल जी के द्वारा सर्टिफ़िकेट और मेडल द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की गई इस प्रोग्राम का मुख्य आकर्षण मिसेज तीज कांटेक्ट वह मिस तीज रहाद्य जिसमें 30 प्रतियोगियों ने भाग लिया द्यमिसेज तीज में विनर रही श्रद्धा जैन फर्स्ट रनर अर, बबली चौहान सेकंड रनर अप , निधि गुप्ता और मिस तीज में विनर नहीं अंशिका जौहरी, फर्स्ट रनर अप ,साक्षी जैन रही इसी प्रोग्राम में एक विशेष पुरस्कार भी दिया गया जो हमारी भारतीय संस्कृति को भी प्रस्तुत किया उस विशेष पुरस्कार मिला हमारी मिसेज़ तीज

की श्रीमती नेहा गुप्ता जी ।जज की अहम भूमिका श्रीमती डॉली वार्ष्णेय, दीक्षा खवानी श्रीमती साधना चौहान.ने निभाई द्यकार्यक्रम का सफल संचालन मिस आरोही सक्सेना ने किया कार्यक्रम में जय हो बच्चों द्वारा नृत्य और अलंकार ग्रुप के बच्चों के द्वाराएक सुंदर गायन की प्रस्तुति दी गई इसमें गीतू वार्ष्णेय वह बबीता कुलश्रेष्ठ ने दर्शकों से कुछ खेल भी कराएंद्यकार्यक्रम में सभी लायंस क्लब के मेंबर अनीता पांडे, रितु शर्मा ,अलका गुप्ता ,प्रीति सिंह ,प्रीति राघव ,नीलम गुप्ता ,बीना दीक्षित, ममता जौहरी अंजलि गहलोत, हेमा मिश्रा आयशा सिंह, शिवली सभी लोग उपस्थित थे विशेष अतिथियों में पालिका अध्यक्ष श्रीमती सुधा गुप्ता श्रीमती निशा चौहान जीश्रीमती डॉली सक्सेना गौ रक्षा प्रदेश मंत्री , श्रीमती भावना वार्ष्णेय वेलफ़ेयर समिति ज़िला अध्यक्ष , अखिल भारतीय वैश्य महा सम्मेलन अध्यक्ष श्रीमती गीता वार्ष्णेय ,सविता हिरानी मोना हिरानी गीता वार्ष्णेय ,शिप्रा वार्ष्णेय अंजना गुप्ता दिपाली गुप्ता सीमा देव अमिता सिंह ज्योति गुप्ता रिंकी जैन सपना रमन तमाम प्रतिष्ठित महिलाएँ उपस्थित रही । कार्यक्रम के अंत में क्लब के जोन चेयर पर्सन अनुज जी ने क्लब मेंबर के लिए एक लकी ड्रॉ का कार्यक्रम रखा जिसकी विनर रही ममता जोहरी जी रही ।और समापन एक सुंदर गीतएक दिन बिक जाएगा माटी के मोल जग में रह जाएँगे प्यारे तेरे बोल

नाजायज धन्धे किसी भी सूरत में फलने फूलने नही दिये जायेगे : टीआई वीरेश सिंह कुशवाह

● केशब प्रसाद शर्मा, पुष्पांजली टुडे , अम्बाह

किसी भी सूरत में थाना इलाको में जुआ, शराब, अबैध शस्त्रो, की क्रय विक्रय शरीखे नाजायज धन्धे किसी भी सूरत मे अम्बाह पुलिस फलने फूलने नही देगी ऐसे अवैध कृत्यो को अन्जाम देने वाले मुजरिमो के खिलाफ नियमानुसार कठोर कारबाही की जायेगी यह बात अम्बाह नवागत थाना प्रभारी बीरेश कुशवाह ने पत्रकार बार्ता के दौरान कही उन्होने कहा जितने पुराने अपराधियो के अपराध व गुम इंसान महिला संबधी अपराधो के रोजनामाचाओ को टटोलते हुये उन्होने बताया अब मुखबिर तन्त्र को और मजबूत करने का काम प्रारम्भ कर दिया ताकि अपराधों और अपराधियो के

बारे में सटीक सूचनाये पुलिस को मिलती रहे अम्बाह प्रभारी ने माना कि गोपनीयता भंग होने के डर से लोग पुलिस को अपराध व अपराधियो के बारे मे सूचना देने से कतराते है उन्होने कहा कि एक बार पुलिस जनता को यकीन दिलाने में सक्षम होजाये तो उसे मुखबिरो से कारगर आम सूचना मिलना प्रारम्भ हो जायेगी उन्होने बताया हाल ही मे कुछ दिनो मे पुलिस को मुखबिरो द्वारा कामयाबी मिली जिसमें मोबाइल चोरी की व चोरी की गई मोटर साइकिल बरामद कर अपराधी जेल भेजे है कई नामी ग्रामी इनामी फरार अपराधियो को है पकड़ा है जुआ शराब व सट्टा खाईबालो के घरो पर दविश दी है आगे हमे और अच्छे कार्यों की आशा है।

स्कूल शिक्षा विभाग में उच्च पद प्रभार की प्रक्रिया बिना काउंसिलिंग किये व अनिवार्य न की जावे: भदौरिया

म प्र राज्य कर्मचारी संघ ने माननिय मुख्यमंत्री जी,स्कूल शिक्षा मंत्री जी एवं प्रमुख सचिव स्कूल शिक्षा को पत्र लिख कर मांग की है कि स्कूल शिक्षा विभाग में वर्तमान में प्रचलित उच्च पद प्रभार की प्रक्रिया किसी भी सम्बर्ग में,बिना काउंसिलिंग व अनिवार्य न की जावे। प्रेस विज्ञप्ति में म प्र राज्य कर्मचारी संघ के प्रांताध्यक्ष सुरेन्द्र सिंह भदौरिया ने बताया कि संघ के संज्ञान में आया है कि स्कूल शिक्षा विभाग सहायक शिक्षक, शिक्षक, व्याख्याताओ, प्राचार्यो में से कुछ संबर्ग को बिना काउंसिलिंग के अनिवार्यता उच्च पदभार देने की तैयारी कर रहा है ये कतई न्याय संगत नही होगा एक तो विभाग वर्तमान में शिक्षकों को मिल रहे वेतनमान के अनुसार उच्च पद प्रभार नही दे रहा है जैसे कि तीन क्रमोन्नति पाए सहायक शिक्षक को जो हाई स्कूल प्राचार्य के ग्रेड में आता है उसे कम से कम वरिष्ठ व्याख्याता का उच्च पद प्रभार तो देना ही चाहिए किंतु उसे केवल शिक्षक का उच्च पद प्रभार दिया जा रहा है ऐसा ही अन्य सम्बर्ग के साथ हो रहा है साथ ही बिना काउंसिलिंग के प्रक्रिया पूर्ण की बात सामने आ रही है जो विधिसम्मत नही है एक और बात निकल कर आ रही कि अनिवार्यता उच्च पद प्रभार दिया जाये ये समझ से परे है व न्यायसंगत नहीं है। म प्र राज्य कर्मचारी संघ शिक्षा विभाग एवं मीडिया के माध्यम से मांग करता है कि उच्चपद प्रभार सभी संवर्ग को काउंसिलिंग के माध्यम से ही दिया जावे एवं इसे अनिवार्य बिल्कुल न किया जावे।

अब 5 रुपये में मिलेगा भरपेट भोजनः प्रद्युम्न

प्र देश सरकार के ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने हजीरा स्थित इंटक मैदान में सब्जी मंडी के समीप बनाई गई नवीन दीनदयाल रसोई का शुभारंभ फीती काटकर किया। ऊर्जा मंत्री ने कहा कि अब गरीब मजदूर कुर्सी टेबल पर बैठकर 5 रुपये में भरपेट भोजन कर सकेंगे। दीनदयाल रसोई सुबह 10 बजे से दोपहर 3 बजे तक आमजन को भोजन कराएगी। दीनदयाल रसोई के शुभारंभ के अवसर पर क्षेत्रीय पार्षद श्रीमती मीरा मानसिंह राजपूत, महेंद्र आर्य सहित मायाराम तोमर, शीतल अग्रवाल, हरिबाबू शिवहरे सहित बडी संख्या में क्षेत्रीय नागरिक उपस्थित रहे। ऊर्जा मंत्री तोमर ने कहा कि आज भोपाल में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा आज राज्यस्तरीय कार्यक्रम में 66 नए दीनदयाल रसोई केंद्रों का शुभारंभ कर 10 रुपए के बजाय अब 5 रुपए में भोजन की थाली की शुरुआत की है इस योजना से हमारे मज़दूर, गरीब व आमजन को 5 रुपए में भरपेट भोजन मिल सकेगा। इस दौरान ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने इंटक मैदान में नवनिर्मित दीनदयाल रसोई केंद्र का शुभारंभ कर लोगो के साथ भोजन गृहण किया। ऊर्जा मंत्री प्रधुम्न सिंह तोमर ने शनिवार को इंटक सब्जी मंडी का निरीक्षण कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान उन्होंने सब्जी मंडी में जल भराव ना हो इसकी पर्याप्त व्यवस्था की जाए। साथ ही मंडी में शाम के समय अंधेरा ना रहे। इसलिए जो खराब एलइडी लाइटें हैं उनको तत्काल सुधारा जाए।

मोबाइल फोन का प्रयोग हो रहा खतरनाक साबित

आजकल मोबाइल फोन का प्रयोग कई लोगों के लिए वरदान तो कई लोगों के लिए अभिशाप साबित हो रहा है तथा बच्चों पर भी इसका गलत प्रभाव देखने को मिल रहा है।पहले जब मोबाइल का इतना उपयोग नहीं होता था तब की अपेक्षा आजकल बहुत बुरा असर देखने को मिल रहा है।आजकल शादी के बाद भी मायके वाले अपनी लड़की के लगातार संपर्क में रहते हैं। दिन भर में कई बार बातचीत करते रहते हैं। हर छोटी बड़ी बातों में मां का हस्तक्षेप होने से शादी होकर नए घर में आई लड़की अपने पति ससुराल पक्ष के साथ रिश्ता नहीं बना पातीं है। मायके वाले दखल के कारण पहले दिन से ही वह ससुराल को अलग तरीके से देखती है। शादी के कई महीनों बाद भी वह अपनी माँ के साथ दिन भर जुड़ी रहतीं हैं।माँ के दिशा निर्देशन में काम करती है जिसके कारण सैकड़ो घर हस्तक्षेप के कारण रिश्तों को टूटते हुए देखा जा रहा है। हर छोटी बड़ी बातों में मायके के लोग हस्तक्षेप करते हैं। मोबाइल फोन रिश्तो को बनने के पहले ही बिगाड़ रहा है। शादी होकर लड़की ससुराल पहुँचती है सबसे ज्यादा बात वह अपने मायके वालों खासकर मां से करती है पति और सास व ससुराल की हर बात को मायके से शेयर करती है। मायके वाले उसको ज्यादा से ज्यादा अधिकार संपन्न बनाने और हर किसी को अपनी उंगलियों पर नचाने के तरीके देते रहते हैं।जिसके कारण नव दंपत्ति के बीच रिश्ता नही बन पाता है रिश्तों को तार तार करने में मोबाइल फोन की अत्यधिक भूमिका देखने को मिल रही है। क्योंकि प्रत्येक लड़की अपनी माँ की लाडली होती है और हर माँ ये चाहती है कि हमारी बेटी हमेशा मायके की तरह ही रहे और उसको कोई भी काम भी ना करना पड़े।जिस प्रकार से वह अपने मायके में रहती है लेकिन अपनी बहू अगर वही काम करे तो बुरा लगता है।वहीं बच्चे अगर इसका सही प्रयोग करते हैं तो उनके लिए यह बेहद जरूरी भी है परंतु कभी कभी यह बच्चों के लिए काफी खतरनाक साबित हो जाता है।इसके अधिक उपयोग से आँखों पर भी बुरा असर दिखाई देता है।

उमाकान्त शर्मा पुष्पांजली टुडे
चंबल संभाग संवाददाता

बच्चों की सेहत और सोच पर भी गलत प्रभाव, तेजी से टूट रहे हैं पति पत्नी के रिश्ते मोबाइल फोन से घर-घर में कलह

ग्वालियर जिले के बरई में शूट हुई जितांक की 'बासन' फिल्म ने कांस वर्ल्ड फिल्म फेस्टिवल में रचा इतिहास

अर्पित गुप्ता उपसम्पादक पुष्पांजली टुडे

ग्वालियर के लिए आज गर्व का दिन है।क्यों कि शहर के युवा शहर का नाम रोशन कर एक अलग ही पहचान बनाने की होड़ में है।ग्वालियर जिले के युवा डायरेक्टर जितांक गुर्जर ने कांस वर्ल्ड फिल्म फेस्टिवल में अवार्ड जीतकर इतिहास रच दिया है और ग्वालियर शहर का नाम रोशन किया। जितांक की बनाई गई फिल्म बासन ने कांस वर्ल्ड फिल्म फेस्टिवल में बेस्ट इंडिपेंडेंट फीचर फिल्म का अवार्ड अपने नाम किया है।यह फिल्म ग्वालियर के नवोदित कलाकारों को लेकर बनाई गई थी,जिसकी स्टोरी पूरी तरह से ग्वालियर बेस्ड थी।जितांक ने बताया कि उन्होंने इसे विश्व स्तरीय फिल्म फेस्टिवल में ÷बासन÷ को ऑनलाइन माध्यम से भेजा था,जिसके बाद फिल्म ने अवार्ड अपने नाम कर इतिहास रच दिया।मूल रूप से थियेटर से जुड़े जितांक मध्यप्रदेश के ग्वालियर जिले की डबरा तहसील के चिटौली गांव के रहने वाले हैं।वह ग्वालियर में रहकर थियेटर करते हैं।उन्होंने दफीना(गढ़े हुए खजाने)की खोज में रहने वाले लोगों की मनस्थिति पर एक रोचक कहानी लिखी और इसका स्क्रीनप्ले भी लिखा।जिसके बाद उन्होंने इस पर फिल्म बनाने का सोचा लेकिन इसके लिए बजट जुटाना कठिन था।बजट की कमी के चलते उन्होंने इस फिल्म के लिए स्थानीय कलाकारों को तैयार किया और डायरेक्शन,कैमरा और एडिटिंग की कमान को भी खुद ही संभाला।जिसके बाद उन्होंने ग्वालियर से लगे बरई इलाके के गांव पावटा में शूटिंग की योजना बनाई और दोस्तों की मदद से एक लाख जुटाकर यह फिल्म बनाई।इसके बाद उन्होंने दोस्तों की मदद से ही ग्वालियर के एक हॉल में फिल्म की स्क्रीनिंग करवाई ग्वालियर में फिल्म को देखकर सबने सराहना की और फिल्म को अच्छा रिव्यू मिला।जिसके बाद उन्होंने फिल्म को तमिलनाडु में आयोजित होने वाले अथविकवरुडी फिल्म फेस्टिवल में ले जाने का निर्णय लिया जहां बासन ने दो अवार्ड जीतकर जितांक हौसला बढ़ाया।इस बीच कांस वर्ल्ड फिल्म फेस्टिवल के लिए वेबसाइट के जरिए फिल्म की एंट्री मांगी गई तो जितांक ने वहां भी अपनी फिल्म की एंट्री भेज दी।जिसके बाद बासन ने कांस वर्ल्ड फिल्म फेस्टिवल में इंडिपेंडेंट बेस्ट फीचर फिल्म केटेगरी में अवार्ड जीत लिया।कांस वर्ल्ड फिल्म फेस्टिबल ऑर्गनाइजेशन द्वारा अचानक सूचना मिलने पर जितांक की खुशी का ठिकाना न रहा।जितांक की फिल्म बासन को विश्व स्तरीय

बेस्ट इंडी फीचर फिल्म का मिला अवार्ड

फिल्म प्रतियोगिता इंडो फ्रेंच इंटरनेशनल फिल्म फेस्टीवल में भी पांच अवार्ड हासिल हुए हो चुके हैं।इन अवार्ड्स में बेस्ट इंडियन फीचर फिल्म,बेस्ट डायरेक्टर,बेस्ट स्क्रीन प्ले, बेस्ट डेब्यू डायरेक्टर और बेस्ट ट्रेलर के अवार्ड शामिल हैं।जितांक ने बताया कि उन्हें कांस से सर्टिफिकेट मेल के द्वारा मिल गए हैं और उन्हें दिसंबर में होने वाले फिल्म फेस्टिबल के समारोह में बुलाया जाएगा।जिसमें उनकी फिल्म की स्क्रीनिंग भी की जाएगी। जितांक ने बताया कि फ्रांस में इंडो फ्रेंच इंटरनेशनल फ़िल्म फेस्टिवल 5 अवॉर्ड्स फ़िल्म में अपने नाम किये है।जिसमे बेस्ट इंडी फीचर फिल्म,बेस्ट डायरेक्टर,बेस्ट स्क्रीनप्ले, बेस्ट डेब्यू डायरेक्टर,बेस्ट ट्रेलर अवार्ड मिले।वहीं अथविकवरुणी फ़िल्म फेस्टिवल(तमिलनाडु)में 2 अवॉर्डस जीत चुकी है।जिसमे बेस्ट डायरेक्टर व बेस्ट इंडियन फीचर फिल्म शामिल है।सऊदी अरेबिया इंटरनेल्शनल फिल्म फेस्टिवल में बेस्ट डायरेक्टर,बेस्ट इंटरनेशनल फीचर फिल्म,बेस्ट एक्टर,बेस्ट ओरिजनल म्यूजिक अवॉर्ड शामिल हैं।जितांक ने बताया कि फ़िल्म ने रोम प्रिस्मा फिल्म अवार्ड में फाइनलिस्ट में टॉप 6 में जगह बनाई।यूनाइटेड किंगडम में लिफ्ट ऑफ फिल्म सेशन में सिलेक्शन हुआ।बाकी अभी फिल्म काफी फिल्म फेस्टिवल में सफर कर रही है।

महिला खिलाड़ियों को अत्याधुनिक खेल सुविधायें उपलब्ध कराने के लिये सरकार कटिबद्धः यादव

● पुष्पांजली टुडे ब्यूरो, ग्वालियर

भारतीय संस्कृति में खेलों को सदैव महत्व दिया गया है। साथ ही नारियों का सम्मान व उनके कौशल प्रोत्साहन हमारी संस्कृति की विशिष्टता है। इसी भाव के साथ प्रदेश सरकार कन्या महाविद्यालयों में भी अत्याधुनिक खेल सुविधाओं का विस्तार कर रही है। सरकार महिला खिलाड़ियों को अत्याधुनिक खेल सुविधायें उपलब्ध कराने के लिये कटिबद्ध है। इस आशय के विचार उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. मोहन यादव ने व्यक्त किए। डॉ. यादव ने सोमवार को यहाँ विजयाराजे शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय में लगभग 6 करोड़ 7 लाख रूपए की लागत से बनकर तैयार हुए स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का लोकार्पण किया। इस स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का निर्माण मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा की गई घोषणा के पालन में किया गया है। स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स के लोकार्पण कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सरकार महिलाओं के सम्मान व कल्याण के लिये कटिबद्ध है। प्रदेश सरकार द्वारा इसी सोच के साथ महिलाओं के कल्याण के लिये मुख्यमंत्री लाड़ली लक्ष्मी और लाड़ली बहना जैसी योजनायें संचालित की जा रही हैं। इससे महिला सशक्तिकरण को बल मिला है। उन्होंने कहा सरकार महिला खिलाड़ियों के लिये अत्याधुनिक अधोसंरचना

जुटा रही है। इसी के तहत विजयाराजे सिंधिया महाविद्यालय में सरकार ने अत्याधुनिक खेल सुविधाओं से सुसज्जित स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का निर्माण कराया है। इस अवसर पर उन्होंने महाभारतकाल में अर्जुन द्वारा मछली की आंख में निशाना लगाने जैसे उदाहरण देते हुए कहा कि हमारा देश खेलों के क्षेत्र में अनादिकाल से अग्रणी रहा है। खेल सुविधायें बढ़ें, इसके लिये केन्द्र व राज्य सरकार प्रतिबद्धता के साथ काम कर रही है। शासकीय विजयाराजे कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय में बनकर तैयार हुए स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में एथलेटिक्स ट्रैक के साथ-साथ बास्केटबॉल, बॉलीबॉल, हैंडबॉल, फुटबॉल, नेटबॉल, सॉफ्टबॉल, हॉकी, खो-खो, कबड्डी, बॉक्सिंग इत्यादि के कोर्ट व अन्य खेल सुविधायें जुटाई गई हैं। साथ ही पेवेलियन और दर्शक दीर्घा का भी निर्माण किया गया है। आरंभ में उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. यादव ने फीता काटकर व पट्टिका का अनावरण कर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का लोकार्पण किया। साथ ही स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का जायजा भी लिया। कार्यक्रम में बीज एवं फॉर्म विकास निगम के पूर्व अध्यक्ष महेन्द्र सिंह यादव तथा शिवेन्द्र सिंह राठौड, विनोद शर्मा व नरेश शर्मा सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण, अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा डॉ. कुमार रत्नम, महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. सुशीला माहौर व खेल अधिकारी डॉ. दीपा वर्मा सहित महाविद्यालय के अन्य आचार्यगण व छात्राएँ मौजूद थीं।

चिकित्सा क्षेत्र में स्वर्णिम विकास कियाः भदौरिया

● पुष्पांजली टुडे ब्यूरो, भिण्ड

प्रदेश सरकार में सहकारिता मंत्री डॉ. अरविंद सिंह भदौरिया ने सोमवार को अटेर क्षेत्र के ग्राम कुरथरा, सकराया, रानी विरगवां,बड़ेपुरा, सपाड़, रमा में 11 करोड़ 56 लाख से अधिक लागत के विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन किया। इस अवसर पर भाजपा पदाधिकारी और प्रशासनिक अधिकारी मौजूद रहेमंत्री डॉ. भदौरिया ने लोकार्पण एवं भूमिपूजन के दौरान कहा कि मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व वाली सरकार लगातार प्रगति के नए सोपान स्थापित कर रही है। प्रदेश में विकास की नई उपलब्धि प्राप्त की जा रही है। आमजन को स्वास्थ्य, शिक्षा, बिजली, पेयजल व रोजगार इत्यादि सुविधा आसानी से लोगों को उपलब्ध हो रही हैं। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ ही वर्षों में राज्य सरकार ने चिकित्सा के क्षेत्र में स्वर्णिम विकास किया है। उन्होंने कहा कि

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में आज प्रदेश विकास के क्षेत्र में एक अलग पहचान बन रही है। मंत्री ने किया लोकार्पण एवं भूमिपूजन मंत्री डॉ. अरविंद सिंह भदौरिया ने ग्राम कुरथरा में 49.14 लाख की लागत से उप स्वास्थ्य केंद्र भवन एवं स्टाफ आवास, ग्राम सकराया में 644.27 लाख की लागत से सकराया से रानी विरगवां पहुंच मार्ग, ग्राम बड़ेपुरा में 326.94 लाख की लागत से बडेपुरा से सिद्ध बाबा मंदिर पहुंच मार्ग, ग्राम सपाड़ में 49.14 लाख की लागत से उप स्वास्थ्य केंद्र भवन एवं स्टाफ आवास, ग्राम रमा में 87.15 लाख की लागत से रमा से दक्षिणी माता मंदिर पहुंच मार्ग का लोकार्पण एवं भूमिपूजन किया।

500 साल पुराने इस मंदिर में पूरी होती है नौकरी की मन्नतें, भक्तों का लगा रहता है तांता

हैदराबाद स्थित चिल्कुर बालाजी मंदिर

● पुष्पांजलि टुडे रिपोर्टर खंगारराम मुलेवा

अच्छी नौकरी और विदेश जाना हर व्यक्ति जाना चाहता है। लेकिन ये तमन्ना हर इंसान की पूरी नहीं होती। कुछ लोगों की अधूरी रह जाती है। पर शायद आपको यह नहीं पता की आपकी यह तमन्ना मंदिर में पूरी की जाती है। जी हां, हैदराबाद से करीब 40 किमी दूर एक मंदिर ऐसा अनोखा मंदिर है जहां बेरोजगार अपनी नौकरी की तमन्ना लेकर आते हैं। इसके अलावा में लोग वीजा दिलाने की प्रार्थना के लिए भी आते हैं। मान्यताओं के अनुसार यहां आने वाला कोई भी भक्त खाली हाथ नहीं लौटता। जिस अनोखे मंदिर की हम बात कर रहे हैं वह मंदिर हैदराबाद की सीमा से लगभग 40 किमी दूर स्थित चिल्कुर बालाजी मंदिर आस्था का प्रमुख केंद्र है। इस मंदिर में लोग चढ़ावे के रुप में हवाई जहाज चढ़ाते हैं। लोगों का कहना है की यहां हवाई जहाज़ चढ़ाने से वीजा मिलना आसान हो जाता है। दर्शानार्थी बताते हैं की वीज़ा के लिए दूतावास के चक्कर लगाने से अच्छा है चिल्कुर बालाजी मंदिर में आ

जाएं। जल्द ही आपके वीजा बनने में आ रही सारी रुकावटें हट जाएगी। अगर आप को भी कई महीनों से वीजा नहीं मिल रहा है तो आन्ध्र प्रदेश स्थित चिल्कुर बालाजी के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त कर लिजिए।

नौकरी भी दिलाते हैं चिल्कुर बालाजी

चिल्कुर बालाजी को वीजा वाले बालाजी के नाम से भी जाना जाता है। यह प्राचीन मंदिर लगभग 500 साल पुराना है। इस मंदिर में लोग नौकरी की मन्?नतें लेकर भी आते है और उनकी मनोकामना जल्दी पूरी भी हो जाती है। लोक कथाओं के अनुसार वेंकटेश बालाजी के एक भक्त हर रोज़ कई किलोमीटर चलकर तिरुपति बालाजी के दर्शन के लिए जाते थे। एक दिन अचानक उनकी तबियत खराब हो गयी और वे मंदिर नहीं जा पाए। इस दौरान बालाजी ने खुद भक्त को सपने में आकर दर्शन् दिए और बोले कि इतनी दूर जाने की कोई आवश्यकता नहीं है, मैं यहीं तुम्हारे पास इस जंगल में रहता है। अगले दिन जंगल में उसी जगह पर मूर्ति की स्थापना की गई। वह मंदिर आज चिल्कुर बालाजी के नाम से जाना जाता है। स्थान- चंदा नगर गांव, करने के लिए काम आशीर्वाद लें, 108 फेरे परंपरा में भाग लें, ध्यान में संलग्न हों **समय:** प्रतिदिन सुबह 6 बजे से दोपहर 1 बजे तक और शाम 4 बजे से शाम 6 बजे तक

दिव्य धाम आश्रम (दिल्ली) के मासिक आध्यात्मिक कार्यक्रम में आत्मिक उन्नति हेतु ब्रह्मज्ञान आधारित ध्यान-साधना का महत्व बताया गया

● पुष्पांजलि टुडे ब्यूरो

गुरुदेव श्री आशुतोष महाराज जी (संस्थापक एवं संचालक, डीजेजेएस) के ओजस्वी एवं आलौकिक मार्गदर्शन में दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान द्वारा मासिक सत्संग की श्रृंखला के तहत दिल्ली के दिव्य धाम आश्रम में मासिक आध्यात्मिक समागम का विशाल कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम यथार्थ में भक्तों के लिए एक दैवी पारितोषिक के समान सिद्ध हुआ जिसने वातावरण को भी दिव्य और आनंदमयी तरंगों से सराबोर कर दिया। कार्यक्रम में प्रचारक-शिष्यों द्वारा प्रस्तुत भाव-विभोर करने वाली प्रस्तुतियों को अंतर्ग्रहण करने के उदेश्य से बड़ी संख्या में अनुयायी एकत्रित हुए। आत्मा को आनंदित करने वाले भक्ति गीतों एवं ईश्वर की प्रशंसा हेतु दिव्य स्तोत्र वातावरण में गूंज उठे और उपस्थित श्रद्धालुओं के दिलों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

डीजेजेएस प्रतिनिधियों ने विशिष्ट रूप से समझाया कि हमारी ज्ञान युक्त चेतना में अस्थिर मन की तरंगों को नियंत्रित और सयंमित करने की शक्ति होती है। यदि कोई सच्चे ज्ञान की कीमत पर सांसारिक-वस्तुओं के पीछे भागता है तो यह अधिक से अधिक अहंकार और लोभ में बदल जाता है और व्यक्ति पतन के मार्ग पर बढ़ जाता है। जीवन और मृत्यु के मिथ्याबोध

से स्वयं को मुक्त करने के लिए सर्वोच्च आंतरिक विज्ञान का ज्ञान ही एकमात्र उपचार है। अनादिकाल से ब्रह्मज्ञान ही सत्य की उपासना का बोध व अनुभव करने का परम दिव्य रहस्य व निश्चित पथ है। यह एक भक्त की आत्मा को आनंद रुपी दिव्य सागर में गोते दिलाता है और यही बात हमें गुरुदेव श्री आशुतोष महाराज जी ने अनुभव भी करवाई है।कार्यक्रम के अंत में, जनसमूह ने ध्यान की स्थिति में सामूहिक रूप से मानव कल्याण और विश्व शांति के लिए प्रार्थना की और आत्म-साक्षात्कार के मार्ग का अनुसरण करके आत्म-परिवर्तन करने की भी प्रतिज्ञा दोहराई।

निर्वाचनः संभागीय आयुक्त एवं एडीजीपी ने कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक की संयुक्त बैठक

विधानसभा निर्वाचन-2023 स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न हो। इसके लिये निर्वाचन आयोग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का ग्वालियर-चंबल संभाग के सभी जिलों में सख्ती से पालन हो, यह सुनिश्चित किया जाए। संभागीय आयुक्त श्री दीपक सिंह और एडीपीजी श्री डी श्रीनिवास वर्मा ने ग्वालियर एवं चंबल संभाग के जिला कलेक्टर एवं पुलिस अधिकारियों की बैठक में यह बात कही। संभागीय आयुक्त कार्यालय के सभाकक्ष में विधानसभा निर्वाचन-2023 की तैयारियों की समीक्षा के लिये आयोजित इस बैठक में आईजी चंबल श्री सुशांत सक्सेना, डीआईजी ग्वालियर सुश्री कृष्णावेणी देशवस्तु सहित ग्वालियर-चंबल संभाग के जिला कलेक्टर एवं पुलिस अधिकारी उपस्थित थे। संभागीय आयुक्त श्री दीपक सिंह एवं एडीजीपी श्री डी श्रीनिवास वर्मा ने निर्वाचन की तैयारियों के संबंध में विस्तार से समीक्षा की। उन्होंने कहा कि ग्वालियर-चंबल संभाग के सभी जिले अपने अंतर्राज्यीय सीमाओं से लगे हुए जिलों के प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित करें। इसके साथ ही बॉर्डर पर नाकों की स्थापना भी की जाए। इन नाकों पर सीसीटीव्ही कैमरे के माध्यम से भी निगरानी रखी जाए। जिलों का कम्युनिकेशन प्लान भी समय रहते तैयार कर लिया जाए। बैठक में यह भी निर्देशित किया गया कि मध्यप्रदेश की सीमा से लगे हुए राज्यों में स्थायी वारंटियों की सूची भी शेयर की जाए। प्रतिबंधात्मक कार्रवाई भी समय रहते पूर्ण कर ली जाए। निर्वाचन के दौरान किसी प्रकार की परेशानी न हो, इसके लिये अवैध हथियार, अवैध शराब की धर-पकड़ का अभियान भी तेजी के साथ चलाया जाए। संभागीय आयुक्त श्री दीपक सिंह ने कहा है कि ग्वालियर-चंबल संभाग के सभी जिलों में 100 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके वोटरों का सत्यापन भी जिला कलेक्टर कराएँ। इसके साथ ही आयोग के निर्देशानुसार 80 वर्ष की आयु से अधिक के वोटरों की जानकारी भी जिला स्तर पर संग्रहित कर ली जाए। एडीजीपी श्री वर्मा एवं चंबल आईजी श्री सक्सेना ने सभी पुलिस अधीक्षकों से कहा है कि स्थायी वारंटियों की धर-पकड़ का अभियान प्रभावी रूप से चलाया जाए। इसके साथ ही अवैध हथियार एवं अवैध शराब को पकड़ने के लिये भी विशेष अभियान चलाकर कार्रवाई करें। अपने-अपने जिले के स्थायी वारंटियों की सूची अन्य राज्य की सीमाओं से लगे जिलों के पुलिस अधिकारियों को भी उपलब्ध कराई जाए। बैठक में ग्वालियर-चंबल संभाग के सभी जिला कलेक्टरों एवं पुलिस अधीक्षकों ने अपने-अपने जिले में निर्वाचन के लिये की गई तैयारियों की विस्तार से जानकारी दी।

पुलिस ने दो माह में खोये 22 लाख 18 हजार के मोबाइल बापिस दिलाए

ग्वालियर। पुलिस अधीक्षक राजेश सिंह चंदेल के निर्देश पर सायवर सेल टीम ने दो माह में 22 लाख 18 हजार रूपये कीमत के 111 मोबाइल बरामद किये है। पुलिस अधीक्षक राजेश सिंह चंदेल को प्रतिदिन मोबाइल गुम होने संबंधी आवेदन प्राप्त हो रहे है। पुलिस अधीक्षक द्वारा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ऋषिकेष मीणा को मोबाइल को सायवर सेल ग्वालियर की टीम से ट्रैस कराकर उनकी शीघ्र वरामदी करने के निर्देश दिये गये। सीएसपी सिराज केएम एवं एएसपी ग्रामीण सुश्री अतिमा समाधिया के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी अमर सिंह सिकरवार एवं सायवर सेल के उप निरीक्षक रजनी सिंह द्वारा मोबाइल गुम होने संबंधी कार्यवाही करने सायवर सेल की टीम को लगाया गया। सायवर सेल टीम ने जुलाई और अगस्त में लगभग 22 लाख 18 हजार रूपये कीमत के 111 मोबाइल वरामद कर उनके असली मालिकों वापस दिलाए।

दंदरौआ धाम में डॉ. हनुमानजी के दर्शन मात्र से असाध्य रोग भी मिट जाते हैं

धाम के महंत श्री श्री 1008 रामदास जी महाराज करते हैं सेवा

भिण्ड जिले के मेहगांव तहसील के दंदरौआ गांव वाले जब कभी बीमार पड़ते है तो किसी नामी डॉक्टर या अस्पताल के पास जाने के अलावा ये लोग भगवान हनुमान डॉक्टर के पास जाते हैं।और उनका ये मंदिर ही इनके लिए अस्पताल से कम नहीं हैं। सिर्फ भभूति लगाने मात्र से ये लोग ठीक हो जाते हैं। चाहे बड़ी बीमारी ही क्यूं ना हो।मान्यता है कि इस मंदिर के हनुमान स्वयं अपने एक भक्त का इलाज करने डॉक्टर बनकर पहुंचे थे।

उमाकान्त शर्मा
पुष्पांजली टुडे, भिण्ड

इस मंदिर से लाखों लोगों की आस्था जुड़ी हुई है। श्रद्धालुओं का मानना है कि, डॉ. हनुमान के पास सभी प्रकार के रोगों का कारगर इलाज है। आइए जानते है भगवान डॉक्टर हनुमान मंदिर के बारे में भिण्ड मुख्यालय से करीब 40 किलोमीटर की दूरी पर मेहगांव तहसील में स्थित दंदरौआ सरकार पूरे देश में विख्यात हैं। यहां हनुमान जी को डॉ. हनुमान के नाम से जाना जाता है। यहां देश-विदेश के हजारों श्रद्धालु रोज भगवान के दर्शन के लिए आते हैं और डॉ. हनुमान उनके सभी असाध्य रोगों का सटीक इलाज करते हैं।

यहां भक्त दूर-दूर से आते हैं और हनुमान जी की भभूती से रोगों से मुक्ति पाते हैं। डॉ. हनुमान सभी प्रकार की

बीमारियों के डॉक्टर हैं, लेकिन फोड़े, मुहांस और त्वचा संबंधी रोगों के लिए हनुमान जी की भभूती कारगर इलाज है। एक साधु शिवकुमार दास को कैंसर था। उसे हनुमान जी ने मंदिर में डॉक्टर के वेश में दर्शन दिए थे। वे गर्दन में आला डाले थे, जिसके बाद साधु पूरी तरह स्वस्थ हो गया। दंदरौआ सरकार की यहां हनुमान जी की जो मूर्ति है वो नृत्य की मुद्रा में है। यह देश की अकेली ऐसी मूर्ति है, जिसमें हनुमान जी को नृत्य करते हुए दिखाया गया है। यह मूर्ति करीब 300 साल पुरानी है और यह दिव्य मूर्ति एक तालाब में मिली थी। दर्द हरौआ शब्द से पड़ा नाम दंदरौआ धाम के महंत रामदास जी महाराज बताते हैं कि प्रभु की मूर्ति लगभग 300 साल पूर्व यहां के एक तालाब से निकली थी।जिसे बाद में मिते बाबा नाम के एक संत ने यहां मंदिर में स्थापित करवाया। तब से मूर्ति की पूजा-अर्चना शुरू की गई। श्रद्धालुओं के विशेष रूप में मुंहासें, अल्सर और कैंसर जैसी बीमारियां भी मंदिर की पांच परिक्रमा करने पर ठीक हो जाती हैं। श्रद्धालुओं का दर्द दूर करने वाले हनुमान जी को पहले दर्द हरौआ कहा जाने लगा।जो कि अपभ्रंश होकर दंदरौआ हो गया।

रीवा में है 450 वर्ष पुरानी मां कालिका की अलौकिक प्रतिमा

रानी तालाब मंदिर का अद्भुत इतिहास

रानी तालाब रीवा के सबसे पुराने पानी के कुओं में से है। रानी तालाब शहर के दक्षिणी भाग में स्थित है और इसे पवित्र माना जाता है। कुएं के पानी का उपयोग कई उद्देश्यों जैसे कि खेती, सिंचाई और मत्स्य पालन के लिए किया जाता है। झील के पश्चिम में देवी काली का एक मंदिर भी स्थित हैं। रानी तालाब में माता कालिका का दरबार है। जहां गत वर्षो की तरह इस वर्ष भी चैत्र नवरात्रि के अवसर पर आस्था, विश्वास, आराधना और भक्ति का सैलाब उमड़ेगा है। 2 अप्रैल से शुरू हो रहे नवरात्रि के चलते अल सुबह से देर शाम तक भक्तों के पहुचने का सिलसिला जारी रहेगा और भक्त 9 दिनों तक मां की विशेष पूजा-अर्चना करेंगे। आज हम आपको माँ कालिका के चमत्कारों और रानी तालाब वाली माँ के महत्व के बारे में बताएंगे। रानी तालाब स्थित मां कालिका देवी के मंदिर में एक फिर बार चैत्र नवरात्रि के अवसर पर आस्था, विश्वास, आराधना और भक्ति का सैलाब उमड़ा है। इस 450 वर्ष पुराने माता कलिका देवी मंदिर में नौ दिनों तक सिद्धि के लिए आराधना होगी। मान्यता है कि ज्योतिष गणना पर आधारित इस सिद्धिपीठ में नवरात्र की आराधना से लोगों को सिद्धि प्राप्त होती है।रानी तालाब के मेढ़ पर स्थित मां कालका के मंदिर की सुंदरता देखते ही बनती है। मंदिर में गुलाबी पत्थरों और गोल्डन एवं चांदी रंग के प्लेट पर की गई नक्कासी जहां उसकी सुन्दरता और भव्यता अपनी ओर खीचती है तो वही रानी तालाब का हवा के बीच लहराता पानी पहुचने वाले भक्तों को काफी सुकून देता है।

विवेक कुमार तिवारी
ब्यूरो रीवा संभाग

नही उठाई जा सकी थी मूर्ति

मां कालिका की स्थापना को लेकर बताया जाता है कि तकरीबन 450 वर्ष पूर्व यहां से गुजर रहे व्यापारियों के पास यह देवी मूर्ति थी। घने जंगल और रात्रि विश्राम के समय व्यापारियों ने मां की प्रतिमा को एक इमली के पेड़ पर टीकाकर रात्रि विश्राम किया।

दूसरे दिन इसे उठाना चाहा तो मूर्ति नहीं उठी। कई कोशिशो के बाद मूर्ति नहीं उठी तो व्यापारियों ने इस मूर्ति को यही छोड़ आगे बढ़ गए तब से यह मूर्ति यही हैं।

रीवा राज्य ने की थी स्थापना

बताते है कि बघेल साम्राज्य के शासन काल में रीवा रियासत के राजा व्याघ्रदेव सिंह की जानकारी में यह बात सामने आई तो उन्होंने इस स्थान पर एक चबूतरा बनवाकर इस भव्य मूर्ति की स्थापना की और नियमित रूप से यहां पूजा पाठ की शुरूआत हुई। जो सैकड़ो वर्षो से यहां आस्था और भक्ति जारी है।

आभूषण नही ले जा सके थें चोर

माता कालिका का नवरात्रि में दो दिनों तक आभूषणों से श्रृंगार किया जाता है। एक घटना यह भी बताई जाती है कि लगभग 70 से 80 वर्ष पूर्व मंदिर में मां के पहने आभूषण को चोर ले जाने का प्रयास किए थें, जैसे ही मंदिर के बाहर जाने लगे उनकी आँखों में पर्दा आ गया और उन्हे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। जिसके चलते वे मंदिर से बाहर नहीं जा सकें, सुबह पुजारी के आने पर आभूषणों से वापस श्रृंगार किया गया और चोरो ने माफी मांगी। जिसके बाद ही वे मंदिर से बाहर जा सकें। नवरात्रि और नवदुर्गा पूजा के समय सुरक्षा गार्डो की देख-रेख में माँ की स्वर्ण आभूषणों से साज-सज्जा होती है।

तालाब का हुआ था निर्माण

बताते है कि तालाब की खुदाई का काम लवाने समुदाए के लोगो ने किया था। जिससे लोगो को पानी की समस्या न हो और वे इस तालाब के पानी का उपयोग कर सकें। उक्त तालाब निर्माण की भव्यता को देखकर रीवा की महारानी कुंदन कुंवरि जो जोधपुर घराने से थी, रीवा राज्य में ब्याही थी। लवाने समुदाय के लोगो को इसके बदले में राखी बांधी थी। यही वजह है कि इस तालाब का नाम रानी तालाब रखा गया था।

सिद्धिपीठ है माँ का दरबार

रानी तालाब के बीच में भव्य शिवजी का मंदिर है। कहा जाता है जहां देवी की जाग्रत देवी मूर्ति होगी वहां जलाशय और वट वृक्ष नीम और पीपल के वृक्ष जरूर होंगे। वहीं ज्योतिष गणना के अनुसार यहां उत्तर में हनुमान जी और शंकर जी, उत्तर पूर्व के कोने में शिवलिंग, दक्षिण में गणेश जी, पूर्व में काल भैरव हैं। इसलिए इस स्थान को सिद्धिपीठ का दर्जा मिला है। वहीं मंदिर परिसर में एक ओर जहां गर्भग्रह में मां कालका की मूर्ति के साथ भगवान सूर्य सहित शीतला माता, अन्नपूर्णा माता, भैरवी, गणेश जी व हनुमान जी विराजे है, वही मंदिर परिसर में मां की रक्षा के लिए आई दो देवियों में से एक दांए में खोरवा माई और बांए में घेंघा माई विराजी हैं जो वास्तु और ज्योतिष के आधार पर है इसीलिए भी यह सिद्धिपीठ कहलाया जाता है।

श्रीकृष्ण भगवान का जीवन दर्शन और अलौकिक लीलाएं

जन्माष्टमी का त्यौहार प्रतिवर्ष भाद्रपक्ष कृष्णाष्टमी को भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव के रूप में धूमधाम से मनाया जाता है। इस पर्व का भारतीय संस्कृति में इतना महत्व इसीलिए माना गया है क्योंकि श्रीकृष्ण को भारतीय संस्कृति का विलक्षण महानायक माना गया है। उनके व्यक्तित्व को जानने के लिए उनके जीवन दर्शन और अलौकिक लीलाओं को समझना जरूरी है। द्वापर युग के अंत में मथुरा में अग्रसेन नामक राजा का शासन था। उनका पुत्र था कंस, जिसने बलपूर्वक अपने पिता से सिंहासन छीन लिया और स्वयं मथुरा का राजा बन गया। कंस की बहन देवकी का विवाह यदुवंशी वसुदेव के साथ हुआ। एक दिन जब कंस देवकी को उसकी ससुराल छोड़ने जा रहा था, तभी आकाशवाणी हुई, हे कंस! जिस देवकी को तू इतने प्रेम से उसकी ससुराल छोड़ने जा रहा है, उसी का आठवां बालक तेरा संहारक होगा। आकाशवाणी सुन कंस घबरा गया। उसने देवकी की ससुराल पहुंचकर जीजा वसुदेव की हत्या करने के लिए तलवार खींच ली। तब देवकी ने अपने भाई कंस से निवेदन किया कि हे भाई! मेरे गर्भ से जो भी संतान होगी, उसे मैं तुम्हें सौंप दिया करूंगी, उसके साथ तुम जैसा चाहे व्यवहार करना पर मेरे सुहाग को मुझसे मत छीनो।

कंस ने देवकी की विनती स्वीकार कर ली और मथुरा लौट आया तथा वसुदेव एवं देवकी को कारागार में

डाल दिया। कारागार में देवकी ने अपने गर्भ से पहली संतान को जन्म दिया, जिसे कंस के सामने लाया गया। देवकी के गिड़गिड़ाने पर कंस ने आकाशवाणी के अनुसार देवकी की आठवीं संतान की बात पर विचार करके उसे छोड़ दिया पर तभी देवर्षि नारद वहां आ पहुंचे और उन्होंने कंस को समझाया कि क्या पता, यही देवकी का आठवां गर्भ हो, इसलिए शत्रु के बीज को ही नष्ट कर देना चाहिए। नारद जी की बात सुनकर कंस ने बालक को मार डाला। इस प्रकार कंस ने देवकी के गर्भ से जन्मे एक-एक कर 7 बालकों की हत्या कर दी। जब कंस को देवकी के 8वें गर्भ की सूचना मिली तो उसने बहन और जीजा पर पहरा और कड़ा कर दिया। भाद्रपक्ष की कृष्णाष्टमी को रोहिणी नक्षत्र में देवकी के गर्भ से श्रीकृष्ण ने जन्म लिया। उस समय घोर अंधकार छाया हुआ था तथा मूसलाधार वर्षा हो रही थी। तभी वसुदेव जी की कोठरी में अलौकिक प्रकाश हुआ। उन्होंने देखा कि शंख, चक्र, गदा और पद्मधारी चतुर्भुज भगवान उनके सामने खड़े हैं। भगवान के इस दिव्य रूप के दर्शन पाकर वसुदेव और देवकी उनके चरणों में गिर पड़े। तब उन्होंने वसुदेव से कहा, ''अब मैं बालक का रूप धारण करता हूं। तुम मुझे तत्काल गोकुल में नंद के घर पहुंचा दो, जहां अभी एक कन्या ने जन्म लिया है। मेरे स्थान पर उस कन्या को कंस को सौंप दो। मेरी ही माया से कंस की जेल के सारे पहरेदार सो रहे हैं और कारागार के सारे ताले भी अपने आप खुल गए हैं। यमुना भी तुम्हें जाने का मार्ग अपने आप देगी।''

वसुदेव ने भगवान की आज्ञा पाकर शिशु को छाज में रखकर अपने सिर पर उठा लिया। यमुना में प्रवेश करने पर यमुना का जल भगवान श्रीकृष्ण के चरण स्पर्श करने के लिए हिलोरें लेने लगा और जलचर भी श्रीकृष्ण के चरण स्पर्श के लिए उमड़ पड़े। गोकुल पहुंचकर वसुदेव सीधे नंद बाबा के घर पहुंचे। घर के सभी लोग उस समय गहरी नींद में सोये हुए थे पर सभी दरवाजे खुले पड़े थे। वसुदेव ने नंद की पत्नी यशोदा की बगल में सोई कन्या को उठा लिया और उसकी जगह श्रीकृष्ण को लिटा दिया। उसके बाद वसुदेव मथुरा पहुंचकर अपनी कोठरी में पहुंच गए। कोठरी में पहुंचते ही कारागार के द्वार अपने आप बंद हो गए और पहरेदारों की नींद खुल गई। कंस को कन्या के जन्म का समाचार मिला तो वह तुरन्त कारागार पहुंचा और कन्या को बालों से पकड़कर शिला पर पटककर मारने के लिए ऊपर उठाया लेकिन कन्या अचानक कंस के हाथ से छूटकर आकाश में पहुंच गई। आकाश में पहुंचकर उसने कहा, ''मुझे मारने से तुझे कुछ लाभ नहीं होगा। तेरा संहारक गोकुल में सुरक्षित है।'' यह सुनकर कृष्ण के मामा कंस के होश उड़ गए। वह कृष्ण को ढूंढ़कर मारने के लिए तरह-तरह के उपाय करने लगा। कंस ने उन्हें मारने के लिए अनेक प्रयास किए। उसने श्रीकृष्ण का वध करने के लिए अनेक भयानक राक्षस भेजे परन्तु श्रीकृष्ण ने उन सभी का संहार कर दिया। कंस का वध करने के बाद श्रीकृष्ण ने उसके पिता उग्रसेन को राजगद्दी पर बिठाया और अपने माता-पिता वसुदेव तथा देवकी को कारागार से मुक्त कराया। तभी से भगवान श्रीकृष्ण के जनमोत्सव की स्मृति में जन्माष्टमी का पर्व धूमधाम से मनाया जाने लगा। वास्तव में श्रीकृष्ण की लीलाओं को समझना पहुंचे हुए ऋषि-मुनियों और बड़े-बड़े विद्वानों के बूते से भी बाहर है। जन्माष्टमी का पर्व हमें प्रेरणा देता है कि हम अपनी बुद्धि और मन को निर्मल रखने का संकल्प लेते हुए अहंकार, ईर्ष्या और द्वेष रूपी मन के विकारों को दूर करें।

डॉ. राधाकृष्णन ने भारतीय शिक्षा जगत को नयी दिशा दी

भारतीय शिक्षा जगत को नई दिशा देने वाले डॉ. राधाकृष्णन का जन्म तत्कालीन दक्षिण मद्रास से लगभग 60 किमी की दूरी पर स्थित तिरुत्तनी नामक छोटे से कस्बे में 5 सितम्बर सन 1888 ई. को सर्वपल्ली वीरास्वामी के घर पर हुआ था। उनके पिता वीरास्वामी जमींदार की कोर्ट में एक अधीनस्थ राजस्व अधिकारी थे। डॉ. राधाकृष्णन बचपन से ही कर्मनिष्ठ थे। उनकी प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा तिरुत्तनी हाईस्कूल बोर्ड व तिरुपति के हर्मेस वर्ग इवैंजेलिकल लूथरन मिशन स्कूल में हुई। उन्होंने मैट्रिक उत्तीर्ण करने के बाद वेल्लोर के बोरी कालेज में प्रवेश लिया और यहां पर उन्हें छात्रवृत्ति भी मिली। सन 1904 में विशेष योग्यता के साथ प्रथम कला परीक्षा उत्तीर्ण की तथा तत्कालीन मद्रास के क्रिश्चियन कॉलेज में 1905 में बीए की परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए उन्हें छात्रवृत्ति दी गयी। उच्च अध्ययन के लिए उन्होंने दर्शन शास्त्र को अपना विषय बनाया। इस विषय के अध्ययन से उन्हें वैश्विक ख्याति मिली। एमए की उपाधि प्राप्त करने के बाद 1909 में एक कालेज में

अध्यापक नियुक्त हुए और शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर प्रगति के पथ पर बढ़ते चले गये। उन्होंने मैसूर तथा कलकत्ता विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र के आचार्य के रूप में कार्य किया। उनका अध्ययन जिज्ञासा पर था। उन्होंने कहा कि वे बेचारे ग्रामीण व गरीब अशिक्षित जो अपनी पारिवारिक परम्पराओं तथा धार्मिक क्रियाकलापों से बंधे हैं जीवन को वे ज्यादा अच्छे से समझते हैं। उन्होंने द एथिक्स ऑफ वेदांत विषय पर शोध ग्रंथ लिखने का निर्णय किया। जिसमें उन्होंने दार्शनिक विषयों को सरल ढंग से व्यक्त करने का प्रयास किया। उनका कहना था कि, हिदू वेदों वर्तमान शताब्दी के लिए उपयुक्त दर्शन उपलब्ध कराने की क्षमता रखता है। जिससे जीवन सार्थक व सुखमय बन सकता है। उन्होंने मनोविज्ञान के अनिवार्य तत्व पर भी एक पुस्तक लिखी जो कि 1912 में प्रकाशित हुई। वह विश्व को दिखाना चाहते थे कि मानवता के समक्ष सार्वभौम एकता प्राप्त करने का सर्वोत्तम साधन भारतीय धर्म दर्शन है। उन्होंने कहा कि मेरी अभिलाषा मस्तिष्कीय गति की व्याख्या करने की है। उन्हो ने 1936 में आक्सफोर्ड विवि में तीन वर्ष तक पढ़ाया। यहां पर उन्होंने युद्ध पर व्याख्यान दिया जो विचारात्मक था। 1939 में उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों पर व्याख्यान दिया। इसी समय द्वितीय विश्व युद्ध प्रारम्भ हो गया और वे स्वदेश लौट आए तथा उन्हें बनारस विवि का उपकुलपति नियुक्त किया गया। भारत को स्वाधीनता मिलने पर उन्हें विश्वविद्यालय आयोग का अध्यक्ष नियुक्त किया गया था 1949 में वे सोवियत संघ में भारत के राजदूत बने। इस दौरान उन्होंने लेखन भी जारी रखा। सन 1952 में डा. राधाकृष्णन भारत के उपराष्ट्रपति बने। 1954 में उन्हें भारत रत्न की उपाधि से सम्मानित किया गया। डा. राधाकृष्णन 1962 में राष्ट्रपति बने तथा इन्ही के कार्यकाल में चीन तथा पाकिस्तान से युद्ध भी हुआ। 1965 में उनको साहित्य अकादमी की फेलोशिप से विभूषित किया गया तथा 1975 में धर्म दर्शन की प्रगति में योगदान के कारण टेम्पलटन पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया। उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखी जो उनके ज्ञान तथा विचारशीलता को प्रमाणित करती हैं। उनकी इण्डियन फिलासफी, द हिंदू व्यू ऑफ लाइफ, रिलीफ एंड सोसाइटी, द भगवद्गीता, द प्रिंसिपल ऑफ द उपनिषद, द ब्रह्मसूत्र, फिलॉसफी ऑफ रवींद्रनाथ टैगोर आदि पुस्तकें सम्पूर्ण विश्व को भारत की गौरव गाथा के बारे में ज्ञान कराती हैं।

चंद्रशेखर आजाद के बलिदान को देश रखेगा याद

23 जुलाई को चंद्रशेखर आजाद की जयंती है, वह भारत माता के ऐसे वीर सपूत हैं, जिन्होंने गुलामी के दौर में 'आजादी' का मंत्र फूंकने का काम किया, तो आइए हम भारत माता के सच्चे सपूत के बारे में कुछ जानकारी देते हैं। चन्द्रशेखर आजाद का जन्म भाबरा गाँव में एक ब्राह्मण परिवार में 23 जुलाई सन् 1906 को हुआ था। उनके पूर्वज ग्राम बदरका वर्तमान उन्नाव जिला से थे। आजाद के पिता पण्डित सीताराम तिवारी अकाल के समय अपने पैतृक निवास बदरका को छोड़कर पहले कुछ दिनों मध्य प्रदेश अलीराजपुर रियासत में नौकरी करते रहे फिर जाकर भाबरा गाँव में बस गये। यहीं बालक चन्द्रशेखर का बचपन बीता। उनकी माँ का नाम जगरानी देवी था। आजाद का प्रारम्भिक जीवन आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में स्थित भाबरा गांव में बीता अतएव बचपन में आजाद ने भील बालकों के साथ खूब धनुष-बाण चलाये। इस प्रकार उन्होंने निशानेबाजी बचपन में ही सीख ली थी। बालक चन्द्रशेखर आज़ाद का मन अब देश को आज़ाद कराने के अहिंसात्मक उपायों से हटकर सशस्त्र क्रान्ति की ओर मुड़ गया। उस समय बनारस

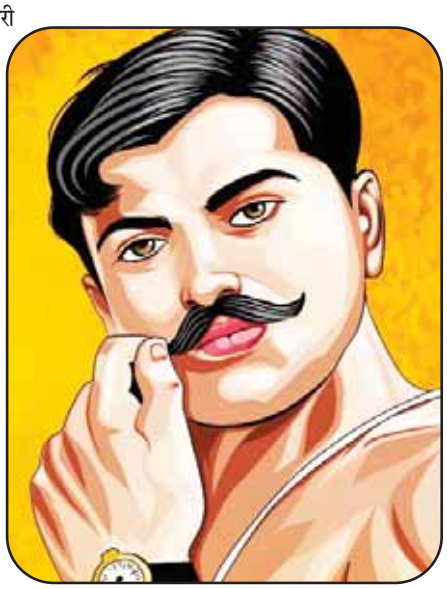

क्रान्तिकारियों का गढ़ था। वह मन्मथनाथ गुप्त और प्रणवेश चटर्जी के सम्पर्क में आये और क्रान्तिकारी दल के सदस्य बन गये। क्रान्तिकारियों का वह दल ÷हिन्दुस्तान प्रजातन्त्र संघ÷ के नाम से जाना जाता था।

आजाद प्रखर देशभक्त थे। काकोरी काण्ड में फरार होने के बाद से ही उन्होंने छिपने के लिए साधु का वेश बनाना बखूबी सीख लिया था और इसका उपयोग उन्होंने कई बार किया। एक बार वे दल के लिये धन जुटाने हेतु गाज़ीपुर के एक मरणासन्न साधु के पास चेला बनकर भी रहे ताकि उसके मरने के बाद मठ की सम्पत्ति उनके हाथ लग जाये। परन्तु वहाँ जाकर जब उन्हें पता चला कि साधु उनके पहुँचने के पश्चात् मरणासन्न नहीं रहा अपितु और अधिक हट्टा-कट्टा होने लगा तो वे वापस आ गये। प्रायः सभी क्रान्तिकारी उन दिनों रूस की क्रान्तिकारी कहानियों से अत्यधिक प्रभावित थे आजाद भी थे लेकिन वे खुद पढ़ने के बजाय दूसरों से सुनने में ज्यादा आनन्दित होते थे। चन्द्रशेखर आज़ाद ने वीरता की नई परिभाषा लिखी थी। उनके बलिदान के बाद उनके द्वारा प्रारम्भ किया गया आन्दोलन और तेज हो गया, उनसे प्रेरणा लेकर हजारों युवक स?वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े। आजाद की शहादत के सोलह वर्षों बाद 15 अगस्त सन् 1947 को हिन्दुस्तान की आजादी का उनका सपना पूरा तो हुआ किन्तु वे उसे जीते जी देख न सके। सभी उन्हें पण्डितजी ही कहकर सम्बोधित किया करते थे काकोरी ट्रेन डकैती और सॉन्डर्स की हत्या में शामिल निर्भय क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद का वास्तविक नाम ÷चंद्रशेखर सीताराम तिवारी÷ था। चंद्रशेखर आजाद का प्रारंभिक जीवन आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र भावरा गांव में व्यतीत हुआ था। भील बालकों के साथ रहते हुए चंद्रशेखर आजाद ने बचपन में ही धनुष बाण चलाना सीख लिया था। चंद्रशेखर आजाद की मां जगरानी देवी उन्हें संस्कृत का विद्वान बनाना चाहती थीं। इसीलिए उन्हें संस्कृत सीखने लिए काशी विद्यापीठ भेजा गया। दिसंबर 1921 में जब गांधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन की शुरुआत की गई उस समय मात्र चौदह वर्ष की उम्र में चंद्रशेखर आजाद ने इस आंदोलन में भाग लिया।

पैरामेडिकल फील्ड में कॅरियर की हैं अपार संभावनाएं

आजकल के छात्र अपने कॅरियर को लेकर काफी परेशान रहते हैं। किस क्षेत्र में उन्हें अपना कॅरियर बनाना है, या कौन सा कोर्स उनके लिए सही है। ऐसी कई समस्याएं छात्रों के सामने रहती हैं। हालांकि 10वीं कक्षा के बाद छात्रों के पास कई बेहतरीन कॅरियर ऑप्शन होते हैं। जरूरत होती है तो इन कोर्सेज के बारे में अच्छे से व सही जानकारी हासिल करने की। आज हम आपको इस आर्टिकल के माध्यम से 10वीं के बाद एक ऐसे कोर्स के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनमें कॅरियर की बेहतरीन संभावनाएं होती हैं। यहां पर हम किसी अन्य कोर्स नहीं बल्कि पैरामेडिकल कोर्स की बात कर रहे हैं। हालांकि ऐसा कहा जाता है कि 12वीं कक्षा के बाद इस कोर्स में प्रवेश लिया जा सकता है। लेकिन शायद आपको यह जानकारी नहीं होती कि 10वीं के बाद भी आप इस कोर्स को कर सकते हैं। बता दें कि पैरामेडिकल को हेल्थ सेक्टर की रीढ़ की हड्डी माना जाता है। इस कोर्स को कर आप भी हेल्थ केयर में अपना कॅरियर बना सकते हैं। ऐसे में अगर आप भी 10वीं की परीक्षा पास कर चुके हैं तो इस

कोर्स को कर अपने कॅरियर को उड़ान दे सकते हैं। पैरामेडिकल भी स्किल डेवलपमेंट कोर्सेज में से एक है। इस कोर्स की अवधि 1 या 2 साल की हो सकती है। वहीं इसमें कुछ कोर्स ऐसे भी हैं, जिनकी अवधि 3 साल की होती है। इसके अलावा आप चाहे तो सर्टिफिकेट कोर्स भी कर सकते हैं। बता दें कि इस कोर्स को करने के साथ ही आप अपनी आगे की शिक्षा को भी जारी रख सकते हैं।

Homeopathy Doctor बन दें करियर को नई उड़ान

अंग्रेजी दवाओं के अलावा कई लोग होम्योपैथिक दवाओं पर भी भरोसा जताते हैं। किसी भी बीमारी व समस्या को ठीक करने के लिए होम्योपैथिक डॉक्टर प्राकृतिक जड़ी बूटियों का इस्तेमाल करते हैं। बता दें कि भारत समेत दुनिया भर में होम्योपैथिक डॉक्टरों की भी मांग बढ़ती जा रही है। वहीं छात्रों में भी होम्योपैथिक डॉक्टर बनने का इंट्रेस्ट बढ़ रहा है। खासतौर पर कोरोना महामारी के दौरान पूरी दुनिया ने डॉक्टरों की सेवाभाव को देखा है। ऐसे में जो छात्र होम्योपैथिक डॉक्टर बनने का सपना देख रहे हैं। यह आर्टिकल उन्हीं के लिए है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको होम्योपैथिक डॉक्टर बनने की सारी पात्रताओं के बारे में जानकारी देने के अलावा यह भी बताने जा रहे हैं कि इस कोर्स को करने के बाद आप इस क्षेत्र में किस तरह अपना करियर बना सकते हैं। होम्योपैथी कोर्स में प्रवेश पाने की चाहत रखने वाले छात्रों को साइंस साइड से 12वीं पास होना अनिवार्य है। 12वीं कक्षा में छात्रों के कम से कम अंक 50 फीसदी होने चाहिए। वहीं आरक्षित श्रेणियों के कैंडिडेट के 45त्न अंक होना जरूरी है। छात्र की कम से कम उम्र 17 साल होनी चाहिए। छात्र का नीट क्वालिफाई होना जरूरी है। बता दें कि होम्योपैथी पाठ्यक्रमों में एडमिशन के लिए तमाम संस्थान

परीक्षाओं का आयोजन करते हैं। वहीं कई संस्थान NEET को भी स्वीकार करते हैं।

सर्टिफिकेट कोर्स

बता दें कि होम्योपैथिक कोर्स करने के लिए तमाम तरह के सर्टिफिकेट कोर्स करवाए जाते हैं। इस सर्टिफिकेट कोर्सेज की अवधि 3 से 6 महीने की होती है।

डिप्लोमा कोर्स

होम्योपैथी में कई प्रकार के अंडर ग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा कोर्स भी कराए जाते हैं। इन कोर्स में आप डिप्लोमा इन इलेक्ट्रो होम्योपैथी मेडिसिन और डिप्लोमा इन होम्योपैथी एंड मेडिसिन आदि कोर्स कर सकते हैं। इन कोर्सेज की अवधि 1-2 वर्ष की होती है।

BHMS कोर्स सिलेबस

BHMS यानी की बैचलर ऑफ होम्योपैथिक मेडिसिन एंड सर्जरी कोर्स में बायोलॉजी, शरीर विज्ञान और चिकित्सा की तमाम शाखाओम पर बुनियादी और उन्नत ज्ञान और व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करने वाले कई विषय पढ़ाए जाते हैं। वहीं डिग्री प्राप्त करने से पहले छात्र को 1 साल की इंटर्नशिप पूरी करनी होती है।

बारिश के मौसम में चेहरे पर निकल आते हैं मुंहासे, इस तरह पाएं इनसे निजात

बारिश के मौसम में त्वचा की अधिक देखभाल करनी पड़ती है। इस मौसम में वातावरण में नमी और बैक्टीरिया ज्यादा होते हैं, जिसके कारण त्वचा संबंधी समस्याएं ज़्यादा होने लगती हैं। मानसून में त्वचा ऑयली और चिपचिपी हो जाती है जिससे चेहरे पर मुँहासे, ब्लैकहेड्स और व्हाइटहेड्स जैसी समस्याएँ होने लगती हैं। अगर आप भी मानसून में मुँहासों की समस्या से परेशान हैं तो आज का यह लेख जरूर पढ़ें। आज हम आपको बारिश के मौसम में मुहाँसों से छुटकारा पाने के कुछ आसान टिप्स देने जा रहे हैं-

टोनिंग करना ना भूलें

हम अक्सर अपने स्किन केयर रूटीन में टोनिंग को स्किप कर देते हैं। लेकिन स्वस्थ त्वचा के लिए टोनिंग बहुत जरूरी है। मानसून में चेहरा साफ करने के बाद टोनर का इस्तेमाल जरूर करें। इससे त्वचा पर जमा गंदगी और मेकअप हटाने में मदद मिलती है। अगर आप बाजार से टोनर नहीं खरीदना चाहते हैं तो घर पर ही गुलाब जल या खीरे का इस्तेमाल डोनर के रूप में कर सकते हैं।

माइल्ड फेस वॉश का इस्तेमाल

बारिश के मौसम में अपनी त्वचा की साफ-सफाई पर अधिक ध्यान दें। दरअसल, इस मौसम में हवा में नमी और बैक्टीरिया ज्यादा होते हैं जिससे स्किन पोर्स में गंदगी जमा हो सकती है। बारिश के मौसम में मुंहासों की समस्या से बचने के लिए किसी अच्छे माइल्ड फेस वॉश से अपने

चेहरा धोएं।

मॉइस्चराइज़ करना ना भूलें

कुछ लोगों को लगता है कि बारिश के मौसम में उनकी त्वचा ऑयली हो जाती है इसलिए उन्हें मॉइश्चराइजर की जरूरत नहीं है। लेकन ऐसा सोचना गलत है। चाहे कोई भी मौसम हो, आपकी त्वचा को मॉइश्चराइजर की जरूरत होती है। इससे आपकी त्वचा की नमी बरकार रहती है। बारिश के मौसम में जेल बेस्ड मॉइश्चराइजर इस्तेमाल करें।

नीम का इस्तेमाल

मुंहासों की समस्या को दूर करने के लिए नीम भी बहुत फायदेमंद मानी जाती है। नीम में एंटी बैक्टीरियल गुण मौजूद होते हैं जो मुंहासों को कम करने में मदद करते हैं। आप चाहे तो नीम की पत्तियों को पीसकर इसका पेस्ट फेस पर लगा सकते हैं या नीम की पत्तियों को पानी में उबाल कर इससे अपना चेहरा साफ कर सकते हैं।

खूब पानी पिएँ

पानी पीना हमारे स्वास्थ्य और त्वचा के लिए कितना फायदेमंद है यह तो आप जानते ही होंगे। पानी पीने से शरीर में जगह टॉक्सिंस को बाहर निकालने में मदद मिलती है। इस चेहरे पर मुंहासे और ब्लैक हेड्स की समस्या भी दूर होती है। दिन में कम से कम 7-8 गिलास पानी पिएँ। इसके अलावा आप नारियल पानी, जूस आदि का सेवन कर सकते हैं।

मानसून में भी खिला-खिला रहेगा आपका चेहरा

स्किन की देखभाल करने के लिए हम सभी न जाने कितनी चीजों का उपयोग करते हैं। मानसून का सीजन शुरू होने के साथ ही हमारी त्वचा में कई तरह के बदलाव देखने को मिलते हैं। ऐसे में कम कंफ्यूज हो जाते हैं और स्किन केयर रूटीन में बदलाव कर देते हैं। लेकिन मौसम चाहे जैसा भी हो स्किन केयर रूटीन को स्किप करने की भूल नहीं करनी चाहिए। स्किन केयर रुटीन को स्किप करने से भले ही उस समय त्वचा में कोई बदलाव न नजर आए। लेकिन कुछ समय बाद से ही आपको इसके परिणाम देखने को मिल सकते हैं।

आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कुछ ऐसी गलतियां बताने वाले हैं, जो स्किन केयर करते समय करते हैं। बाद में पछताने के अलावा और कोई रास्ता नहीं बचता है। इस आर्टिकल में हम आपको मानसून में भी अपनी स्किन को हेल्दी और नैचुरली ग्लोइंग बनाने के कुछ टिप्स के बारे में बताने जा रहे हैं।

मॉइस्चराइजर

रोजाना सी.टी.एम रूटीन करना जरूरी होता है। वहीं मानसून में स्किन की नमी बढ़ जाती है। इससे स्किन तो हाइड्रेट नजर आती है, लेकिन मौसम में बदलाव होने की वजह से ऐसा लगता है। इसलिए मौसम चाहे जो हो, आपको स्किन केयर रूटीन में कभी भी मॉइश्चराइजर को स्किप करने की गलती नहीं करनी चाहिए।

सनस्क्रीन

बदलते मौसम में और मानसून में कभी ज्यादा धूप होती है तो कभी कम। ऐसे में कई बार हम सनस्क्रीन को अप्लाई करना स्किप कर देते हैं। आप घर में रहें या बाहर, लेकिन रोजाना चेहरे पर सनस्क्रीन जरूर अप्लाई करना चाहिए। इससे आपकी स्किन पर एक प्रोटेक्शन शील्ड बन जाती है। जो बाहरी प्रभाव से आपकी त्वचा को डैमेज होने से बचाती है।

लिप केयर

बदलते मौसम में होंठ जरूरत से ज्यादा फटने लगते हैं। या फिर कुछ ज्यादा ही हाइड्रेट हो जाते हैं। ऐसा इसलिए भी होता है कि डेली लिप केयर रूटीन पर ध्यान नहीं दिया जाता है। ऐसे में किसी भी मौसम में लिप केयर रूटीन को स्किप नहीं करना चाहिए। इसलिए सप्ताह में कम से कम 2-3 बार लिप स्क्रब का इस्तेमाल करने के साथ ही रोजाना लिप बाम लगाना चाहिए।

शीट मास्क और सीरम

स्किन में नमी बनाए रखने के लिए मौसम बदलने का इंतजार नहीं करना चाहिए। वहीं शीट मास्क और सीरम का इस्तेमाल आपके फेस को लंबे समय तदक एजिंग साइंस की समस्या से बचाता है। इसलिए आपको इन दोनों चीजों का इस्तेमाल करते रहना चाहिए। आप सप्ताह में 3 बार शीट मास्क लगा सकती हैं। तो वहीं रोजाना सीरम का इस्तेमाल फेस पर कर सकती हैं।

लगातार मल्टीस्टारर फिल्मों के ऑफर आ रहेः नोरा

एक्टर और डांसर नोरा फतेही ने हाल ही में खुद के टाइपकास्ट होने पर बात की। बिना किसी का नाम लिए नोरा ने फिल्म मेकर्स पर आरोप लगाया कि उन्हें फिल्मों में लीड रोल नहीं दिए जाते हैं। नोरा ने कहा कि मेकर्स उन्हें बार-बार चार लड़कियों के लीड रोल वाली फिल्में ऑफर कर रहे हैं। एक्ट्रेस ने कहा कि उन्हें नहीं लगता है कि डासं नंबर्स करने की वजह से फिल्ममेकर्स उन्हें लीड रोल में नहीं लाना चाहते हैं। क्योंकि इंडस्ट्री की कई एक्ट्रेसेस ऐसी हैं, जो अच्छा डांस भी करती हैं। न्यूज18 को दिए इंटरव्यू में नोरा ने फिल्म मेकर्स पर उन्हें टाइपकास्ट करने का आरोप लगाया। नोरा ने 2020 में स्ट्रीट डांसर 3डी से अपने एक्टिंग करियर की शुरुआत की थी, इसके बावजूद उनकी पहचान बतौर एक्ट्रेस न होकर एक फेमस डांसर के तौर पर है। किसी का नाम लिए बिना नोरा ने कहा कि वो लीड रोल पाने में सक्षम नहीं हैं क्योंकि फिल्म मेकर्स उन्हें ऐसे किरदारों में कास्ट नहीं करना चाहते हैं। वो बारी-बारी से मल्टीस्टारर फिल्मों में ही काम कर रही हैं। उन्हें लगातार ऐसी ही फिल्मों के ऑफर आ रहे हैं। नोरा ने कहा- मुझे नहीं लगता कि मेकर्स मुझे इसलिए नहीं कास्ट नहीं करना चाहते, क्योंकि मैं डांस करती हूं। बॉलीवुड में ऐसी कई खूबसूरत लीडिंग एक्ट्रेस रही हैं, जो अच्छी डांसर भी हैं।'नोरा ने आगे कहा कि उन्हें लगता है कि वो डांस नंबर में परफेक्ट हैं, लेकिन हमेशा से ही वह एक एक्ट्रेस भी बनना चाहती थीं। नोरा बोलीं- मुझे लगता है कि यह हमेशा से ही था। मुझे नहीं पता, अब देखना होगा कि मुझे लेकर रिस्क कौन लेता है? मुझे लगता है कि ऐसा करने लिए सबसे पहले किसी को मुझे मौका देने का रिस्क लेना होगा। मुझे लगता है कि हर कोई ऐसे एक मौके का इंतजार करता है।

लेडी डॉन बनेंगी कियारा ?

जब से फरहान अख्तर ने रणवीर सिंह के साथ डॉन 3 का एलान किया है, तभी से इस फिल्म में लेडी लीड को लेकर तरह-तरह के कयास लगाए जा रहे हैं। गपशप गलियों में चर्चा है कि फिल्म में कियारा आडवाणी नजर आ सकती हैं, मेकर्स ने उनसे बात की है। इस बारे में खुद कियारा ने अभी तक चुप्पी साध रखी है। हालांकि, शुक्रवार को उनकी आउटिंग ने इस मामले को फिर से हवा दे दी है कि वह डॉन 3 में नजर आने वाली है। आइए जानते हैं क्योंशुक्रवार की कियारा की आउटिंग ने डॉन 3 में उनकी उपस्थिति की लगभग पुष्टि कर दी है। हाल ही में कियारा डॉन के प्रोड्यसूर्स रितेश सिधवानी और फरहान अख्तर के मुंबई ऑफिस के बाहर नजर आईं। इस दौरान कियारा ने पैपराजी से खूब अच्छे से बात की और पोज भी दिए। एक्सेल कार्यालय में उनकी उपस्थिति ने डॉन 3 में उनकी कास्टिंग को लेकर और हवा दे दी है। रणवीर सिंह के साथ डॉन 3 का एलान करते हुए फरहान अख्तर ने दर्शकों से फ्रेंचाइजी में नए युग को स्वीकार करने का आग्रह किया था। उन्होंने कहा था कि 1978 में सलीम-जावेद ने किरदार को गढ़ा था और अमिताभ बच्चन ने इसे शानदार बना दिया। 2006 में शाहरुख खान ने यह किरदार अदा किया और उन्होंने भी इसे जीवंत बना दिया। शाहरुख खान के साथ दोनों फिल्मों का अनुभव मेरे दिल के बेहद करीब रहा है।

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया परिवार शाखा उटीला की तरफ से समस्त क्षेत्र वासियों को स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन की बहुत बहुत बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ

प्रशांत श्रीवास्तव

शाखा प्रबंधक

रक्षाबंधन

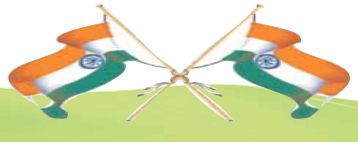

सभी क्षेत्रवासियों को स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन की

हार्दिक शुभकामनाएं

अंकेश सिंह परिहार

प्रदेश उपाध्यक्ष

एमकेएस सेना खनियाधाना शिवपुरी

सभी क्षेत्रवासियों को स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन की

हार्दिक शुभकामनाएं

अशोक कुमार राजपूत

तहसीलदार रन्नौद

विक्की भैया

बाबू तहसील रन्नौद

सभी क्षेत्रवासियों को स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन की

हार्दिक शुभकामनाएं

आशीष परिहार

PHE विभाग पिछोर

HAPPY RAKSHA BANDHAN

सभी क्षेत्रवासियों को स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन की

हार्दिक शुभकामनाएं

15 AUGUST

Happy Raksha Bandhan

संदीप मानिक

कलेक्टर दतिया

सभी क्षेत्रवासियों को स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन की

हार्दिक शुभकामनाएं

अमित चतुर्वेदी

थाना प्रभारी रन्नौद

सभी क्षेत्रवासियों को स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन की

हार्दिक शुभकामनाएं

सरपंच एवं सचिव

पहाड़ा खुर्द

सभी क्षेत्रवासियों को स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन की

हार्दिक शुभकामनाएं

अंकेश सिंह परिहार

प्रदेश उपाध्यक्ष

एमकेएस सेना खनियाधाना शिवपुरी

हर घर तिरंगा
आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाएं
हर घर तिरंगा लहराएं
77 वें
स्वतंत्रता दिवस पर
प्रदेशवासियों को
हार्दिक शुभकामनाएं
नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
तिरंगा हमारे देश के इतिहास, संस्कृति और मूल्यों का प्रतीक होने के साथ उन वीर शहीदों की देशभक्ति और देशप्रेम का प्रतीक है, जिनके बलिदान की बदौलत हमने आज़ाद भारत की विरासत पाई है। आइये, उनके सम्मान में देशभक्ति की भावना से प्रेरित होकर प्रदेश के हर घर में तिरंगा लहराएं।
शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री
तिरंगे के साथ अपनी सेल्फी Harghartiranga.com पर अवश्य अपलोड करें
या इस website पर वर्चुअल फ्लैग पिन करें।